हिन्दी - संकेत - लिपि

ऋषि-प्रणाली

(हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग; डी० पी० आई०, यू० पी० तथा सी० पी० व बरार हाई स्कूल, इन्टरमीडियट बोर्ड द्वारा स्वीकृत)

(संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण)

आविष्कर्ता—

ऋषिलाल अग्रवाल

भूतपूर्व - प्रिंसिपल शीघ्र - लिपि - वर्ग,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग ।

प्रकाशक—

श्री विष्णु-आर्ट-प्रेस, प्रयाग ।

विजया-दशमी

निवेदन

इस संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण को निकालने में कुछ रद्दोबदल करने की आवश्यकता पड़ी है जैसे क्रिया का पाठ पूरा का पूरा बदल दिया गया है। अब संशोधित नियमों से क्रियायें बड़ी सरलता से लिखी और पढ़ी जा सकती हैं। संधि का एक नया पाठ भी पढ़ाना पड़ा है।

यद्यपि मैंने इसको सर्वाङ्ग पूर्ण बनाने में कोई बात उठा नहीं रखी फिर भी पुस्तक के शीघ्रता से छपने के कारण संभवतः बहुत सी गलतियाँ रह गई होंगी। इसके लिये पाठकों से क्षमा-प्रार्थी हूँ। उनसे यह भी नम्र निवेदन है कि यदि उन्हें इस पुस्तक के किसी भी अंक में कोई त्रुटि जँचे तो वे अपनी आलोचना लिखकर मेरे पास अवश्य भेजने का कष्ट करें। मैं उनका बड़ा अनुग्रहीत होऊँगा और अगले संस्करण को निकालते समय उसका पूरा विचार रक्खूँगा। शेष कृपा।

ऋषि कुटी
विजया दशमी १९४७

—प्रकाशक

प्रस्तावना

यदि कोई संभव को असम्भव और असम्भव को संभव कर सकता है तो वह परमात्मा ही है। बगैर उनकी अनुग्रह या कृपा के किसी कार्य का सुचारु-रूप से पूरा होना तो दूर रहा उसका आरंभ भी नहीं हो सकता। इसलिए कोटानिकोट धन्यवाद है उस परमपिता परमात्मा को जिसकी ही असीम कृपा से आज मुझे इस "प्रस्तावना" को लिखने का अवसर मिला है।

एक अच्छी हिन्दी-शार्ट-हैंड प्रणाली का आविष्कार कर प्रचलित करने का विचार मेरे हृदय में पहले-पहल सन् १९२२ ई० में उठा था जब कि मैं "लीगल-रीमेम्ब्ररेंसर" के दफ्तर में हेड-क्लर्क के पद पर काम कर रहा था। उस समय अंग्रेजी शार्ट-हैंड में मेरी अच्छी गति थी और निजी तौर पर कौंसिल में बैठकर कौंसिल के सदस्यों की स्पीचें भी लिखता था। मैं यह अक्सर सोचता था कि आखिर जब विदेशी भाषा में दी हुई वक्तृता कुछ नियमों के आधार पर सरलतापूर्वक लिखी जा सकती है तो कोई वजह नहीं कि भरपूर-प्रयत्न किये जाने पर हिन्दी तथा हिंदुस्तानी भाषा में भी कोई ऐसी प्रणाली का आविष्कार न हो सके जिसके द्वारा हिन्दुस्तान को मुख्य २ भाषाओं में दी गई वक्तृताओं को लिखा अथवा पढ़ा जा सके। पर उस समय इस विचार को इस वजह से कार्य-रूप में परिणित न कर सका था कि पहले तो मुझे समय कम था और दूसरे इसकी माँग भी न थी।

उस समय मैं सरकारी नौकरी में था और यद्यपि उससे मुझे आमदनी भी अच्छी थी परन्तु फिर भी व्यापार की तरफ अधिक झुकाव होने के कारण मैं अक्सर यही सोचता था कि ऐसा कौन सा काम किया जाय जिससे नौकरी से पीछा छूटे। इसी समय हमारा दफ्तर इलाहाबाद से उठकर लखनऊ चला गया। लखनऊ मेरी वृद्धा माता जी को जरा भी पसंद न आया। उन्हें पुण्य सलिला गंगा का तट छोड़कर लखनऊ मे रहना बहुत ही कष्टकर प्रतीत हुआ। वह अक्सर कहती थीं कि भगवान ने अन्त में कहाँ से कहाँ लाकर पटका। इन सब बातों ने हमारे विचार को और भी बदल दिया और हम ८ महीने की छुट्टी लेकर इलाहाबाद लौट आये। यह सन् १६२४ की बात है।

अब हम सोचने लगे कि क्या करना चाहिए जिससे लखनऊ न लौटना पड़े। आखिर मुख्तारशिप और रेविन्यू-एजेन्टी की परीक्षा देने का निश्चय किया और ईश्वर की कृपा से उसमें सफलता भी मिली परन्तु उस समय असहयोग आन्दोलन जोरों पर था और लोग अदालत का बहिष्कार कर रहे थे, इसलिए उधर भी जाना उचित न समझा।

व्यवसाय की तरफ लड़कपन से ही झुकाव था, उसने फिर जोर मारा और इसी समय एक घनिष्ट सम्बन्धी के कहने-सुनने से मैंने एक प्रेस की स्थापना की और ईश्वर की कृपा से कुछ ही दिनों में यह प्रेस प्रान्त के अच्छे प्रेसों में गिना जाने लगा परन्तु अभाग्य या भाग्यवश वहाँ से भी हटना पड़ा।

इसी समय हिंदी-शीघ्र-लिपि की पुकार सुनाई पड़ी, फिर क्या था, एक सरल-सुबोध तथा सर्वाङ्ग पूर्ण प्रणाली के आविष्कार में लग गया और उसके फल स्वरूप यह पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत है।

काम प्रारंभ करने के पूर्व कुछ समय इस बात के विचार करने में व्यतीत हुआ कि पुस्तक किस ढंग से लिखी जाय। एक बिलकुल नई प्रणाली चालू की जाय या जो अँग्रेजी की चालू प्रणालियाँ हैं उनमें से किसी एक को आधार मान कर आगे बढ़ा जाय। अन्त में यही निश्चय किया कि जो १०० वर्ष का समय अंग्रेजी-शार्ट-हैंड की प्रणाली को एक निश्चित स्थान पर लाने में लगा है उसे व्यर्थ फेंकना कोई बुद्धिमानी न होगी और इसलिए अंग्रेजी की किसी प्रणाली को ही आधार मान कर काम किया जाय।

इस समय अँग्रेजी में प्रस्तुत चार प्रणालियाँ अधिक चल रही हैं—१. पिटमैनस् २. स्लोन डुप्लायन ३. ग्रेग और ४. डटन। इनमें पिटमैनस् की ही ऐसी प्रणाली है जिसके जाननेवाले अधिकाधिक संख्या में मिलेंगे और मेरे विचार से यह प्रणाली भी अधिक सरल तथा सम्पूर्ण है। इसके वर्णाक्षर भी हिन्दी के वर्णाक्षरों से अधिक मिलते-जुलते हैं। अतः मैंने यही निश्चय किया कि पिटमैनस् प्रणाली के ही आधार पर पुस्तक तैयार की जाय परन्तु स्लोन-डुप्लायन की मात्रा-प्रणाली कुछ सुगम मालूम पड़ी, इसलिए वर्णों के साथ ही साथ मात्रा लगाने की प्रणाली को भी अपने नियमों में सुविधानुसार समावेश करते गये। इस तरह पिटमैनस् और स्लोन डुप्लायन की सभी अच्छी बातों को ध्यान में रखते हुए बिलकुल ही एक नई प्रणाली का आविष्कार करने में सफल हुआ हूँ जिसके द्वारा हिन्दी-भाषा तथा उसकी व्याकरण के सभी आवश्यक अंगों की पूर्ति की गई है।

जो कुछ भी सहायता हमने अँग्रेजी प्रणालियों से ली है उसके लिये हमे स्वर्गीय सर आइजक पिटमैन और स्लोन-डुप्लायन साहब के हृदय से कृतज्ञ हैं।

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हमारी प्रणाली से हिन्दी शार्ट हैंड सीखने वाला उर्दू, हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषा में बोली हुई वक्तृताओं को तो अच्छे तौर पर लिख ही लेगा पर यदि वह अंग्रेजी शार्ट-हैंड को सीखना चाहे तो उसे पिटमैनस् या स्लोन-डुप्लायन की पुस्तकों में दिये हुए केवल शब्द-चिन्ह, वाक्यांश, संक्षिप्त तथा विशेष चिन्ह को सीखना पड़ेगा। इनके सीखने से वह हिन्दी, उर्दू तथा हिन्दुस्तानी के अलावा अंग्रेजी का भी एक कुशल शीघ्र-लिपि-लेखक हो सकता है। उसे अंग्रेजी के शार्ट-हैंड सीखने-समझने या याद रखने में कोई भी असुविधा या उलझन न होगी।

इसी तरह अंग्रेज़ी-शार्ट-हैंड जानने वाले छात्र हमारी प्रणाली से हिन्दी, हिन्दुस्तानी या उर्दू शार्ट-हैंड को बहुत ही शीघ्र सीखकर एक कुशल शीघ्र-लिपि-लेखक हो सकता है। हमारा अनुभव है कि इसके लिये अधिक से अधिक चार-पाँच महीने का समय पर्याप्त होगा।

हमारा उद्देश्य यह रहा कि हमारी प्रणाली से सीखने वाला छात्र हिन्दी, उर्दू तथा हिन्दुस्तानी के अलावा अंग्रेजी भी कम-से-कम १५० शब्द प्रति मिनट की गति से लिख सके।

इस प्रणाली का आविष्कार करते समय इस बात का भी पूरा ध्यान रक्खा गया है कि इन्हीं वर्णाक्षरों में थोड़ा-बहुत परिवर्त्तन करने से भारत की अधिक से अधिक भाषाओं के लिए भी पुस्तकें तैयार हो सकें। उर्दू, मराठी और गुजराती भाषा में तो इसका संस्करण बहुत ही शीघ्र प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रणाली सर्वाङ्ग-पूर्ण है और संकेत-लिपि का कोई भी अंग छोड़ा नहीं गया। शब्द-चिन्ह (Logograms), वाक्यांश (Phraseography), संक्षिप्त-संकेत (Contractions) हर एक विभाग में अधिकतर काम आने वाले शब्दों के विशेष संकेत, (Departmentel Special out.lines), एक ही वर्णाक्षरों से उच्चारण किए जानेवाले शब्दों के लिए विभिन्न संकेत (Distinguishing out-lines) आदि यथा-स्थान दिये गये हैं।

अभ्यास भी विभिन्न विषयों पर इतने अधिक दिये गये हैं कि कोई भी छात्र इन दिये हुए अभ्यासों को ही पूर्ण-रूप से मनन तथा अभ्यास करने पर एक सिद्धस्थ-शीघ्र-लिपि-लेखक हो सकता है।

यदि जनता ने इस प्रणाली को अपनाया तो मैंने यह दृढ़-निश्चय कर लिया है कि अब जीवन का शेष समय इस अंग को पूरा करने में बिताऊँगा और इसी निश्चय के अनुसार उर्दू-मराठी-गुजराती आदि संस्करण के अलावा हिन्दी में संकेत-लिपि का एक बृहत् कोष भी तैयार कर रहा हूँ। यही नहीं अपना विचार तो इस विषय पर एक मासिक-पत्र भी निकालने का है पर यह सब उसी समय हो सकेगा जब कि जनता और उन महानुभावों का सहयोग प्राप्त होगा जो कि इस विषय को सर्वाङ्ग-पूर्ण देखना चाहते हैं।

कृतज्ञता-प्रकाशन

इस वक्तव्य को समाप्त करने के पहिले हम उन श्रीमानों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट किए बिना नहीं रह सकते जिनकी सहायता तथा सहानुभूति के कारण ही मैं सफल हुआ हूँ। इनमें सर्व प्रथम हैं हमारे देश के पूज्य नेता स्वनाम-धन्य

श्रीमान् बाबू पुरुषोत्तम दास जी टंडन। जिस समय मैंने अपने इस आविष्कार के बारे में आपसे चरचा की तो आपने बड़े ही उत्साह-वर्द्धक शब्दों में इससे सहानुभूति प्रगट की और यह कहा कि यदि यह प्रणाली अच्छी जँची तो मैं इसे "सम्मेलन" में भी स्थान दूँगा। इसलिए मुझे आज्ञा मिली कि मैं अपनी यह प्रणाली उनके नियत किये हुए विशेषज्ञों को दिखाऊँ। उन विशेषज्ञों में से एक थे श्रीमान् प्रोफेसर ब्रजराज जी, एम० ए०। यह स्वयं भी शार्ट-हैंड की एक पुस्तक लिख रहे थे परन्तु फिर भी मेरी प्रणाली को जाँचने और समझने पर इन्होंने बड़ी दृढ़ता से अपनी राय दी कि यह प्रणाली हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ऐसी भारत में प्रतिष्ठित संस्था के लिए सर्वथा योग्य ही है और फिर इसी निर्णय के अनुसार श्रीमान् टंडन जी ने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में एक शीघ्र-लिपि-वर्ग खोलकर मुझे पढ़ाने की आज्ञा दी। इसके लिए मैं इन दोनों महानुभावों का हृदय से कृतज्ञ हूँ।

इसके पश्चात् ही जब मैं श्रीमान् डाक्टर बाबूराम जी सक्सेना से मिला तो उन्होंने भी इस प्रणाली के बारे में मेरे वक्तव्य को बड़े ध्यान से सुना और कुछ पुस्तकें दीं जिससे मुझे आगे अपने कार्य्य बड़ी ही सहायता मिली। इसके लिए मैं आपका बड़ा ही कृतज्ञ हूँ।

अब रही हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के हमारे परीक्षा-मंत्री श्रीमान् दयाशंकर जी दूबे, एम० ए०, एल० एल० बी० की बात। इन्हीं की देख-रेख में इस कालेज का कार्य्य चल रहा है। ये समय २ पर जिन मृदु तथा सहानुभूति-पूर्ण शब्दों द्वारा मुझे उत्साहित करते रहे हैं और जिस तत्परता के साथ मेरी कठिनाइयों को दूर करते रहे हैं उससे तो मुझे यही

मालूम हुआ है कि किसी से कार्य्य लेने, किसी संस्था को सुचारु तथा सुव्यवस्थित रूप से चलाने तथा संगठित करने की आप में अद्वितीय प्रतिभा है। आपने मेरे कार्य्य में बड़ी ही रुचि दिखाई है और इसके लिए मैं आपका हृदय से आभारी हूँ।

यहाँ पर मैं श्रीमान् पं० लक्ष्मीनारायण जी नागर, बी० ए०, एल-एल० बी० का नाम लिये बिना नहीं रह सकता। आप समय-समय पर—यहाँ तक कि मेरे घर पर आ-आकर भी—मुझे अपने मीठे तथा सहानुभूति पूर्ण शब्दों से इस काम में दृढ़तापूर्वक लगे रहने के लिये उत्साहित करते रहे और हर एक प्रकार की सहायता देने या दिलाने का आश्वासन देते रहे। इसके लिए मैं आपका हृदय से कृतज्ञ हूँ।

अब रही डिजाइनिङ्ग और छपाई आदि की बात। पुस्तक के लिखे जाने के बाद यह हमारे लिए एक समस्या सी हो गई थी कि आखिर इसकी छपाई किस तरह से की जाय पर इस समस्या को हमारे सुहृद श्री रामकृष्ण जी जौहरी, मैनेजिंग डाइरेक्टर, दी इलाहाबाद ब्लाक-वर्क्स लिमिटेड और मित्र मि० मोहम्मद इस्माइल ने बड़ी ही कुशलता के साथ हल किया।

डिजाइनिङ्ग का खास श्रेय तो इस्माइल साहब को है। आप एक बड़े ही कुशल चित्रकार और डिजाइनर हैं और आपने जिस धैर्य्य तथा सब्र के साथ इस काम को पूरा किया है उसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय कम होगी। कभी २ मैं जब ऊब कर किसी संकेत को पूर्ण-रूप से ठीक न बनने पर चालू करने को कहता था तो आप उसका तीव्र प्रतिवाद कर ऐसा न करने की सलाह देते थे।

इस पुस्तक की सारी छपाई ब्लाकों द्वारा की गई है। इन ब्लाकों का बनाने और पुस्तक के छापने का सारा श्रेय पूर्वकथित हमारे सुहृद जौहरी जी ही का है। मुझे यह आशा न थी कि यह ब्लाक कलकत्ते के एकाध कारखाने को छोड़कर कहीं और बन सकेंगे परन्तु जिस तत्परता, सुचारुता तथा शीघ्रता के साथ आपने इस काम को किया है उसे देखकर तो मुझे कभी कभी आश्चर्य होता था। इससे मालूम हुआ कि आपका इस विषय में बहुत ही अच्छा ज्ञान है और प्रबन्ध भी सर्वोत्तम है।

अंत में मैं अपने मित्र पं० जयनारायण तथा शिष्य श्री हुकुमचंद जी जैन को भी बगैर धन्यवाद दिये नहीं रह सकता क्योंकि आप लोगों ने भी मेरी पुस्तकों, लेखों तथा अभ्यासों के गढ़ने आदि में बड़ी सहायता दी है। इति—

ऋषि-कुटी
२५१-चक, प्रयाग,
५ फरवरी, १९३८

—ऋषिलाल अग्रवाल

आविष्कर्ता

विषय-सूची

तीसरा भाग

विद्यार्थियों से निवेदन

आवश्यक सामान—

लिखने के लिए एक बही-नुमा लंबी नोट-बुक होना चाहिए। जिसकी लाइनें कम-से-कम ⅜ इंच की दूरी पर हों। इसका काग़ज़ न ज्यादा चिकना और न खुरदुरा ही होना चाहिये। लिखने के लिये एक अच्छा लचीले निब वाला फाउन्टेन पेन होना चाहिये अन्यथा किसी अच्छी पेंसिल से भी लिखा जा सकता है। पेंसिल न कड़ी और न अधिक नरम ही होना चाहिये।

दूसरी बात है इन चीजों को विशेष-विधि से काम में लाने की। लेखक को नोट-बुक को सामने लम्बाकार रखकर बैठना चाहिये जिससे शरीर का बोझ दोनों हाथों पर न पड़े। दाहिने हाथ से पेंसिल या कलम को पकड़ कर इस तरीके से कापी पर रखना चाहिये जिससे कि केवल नीचे की दो अंगुलियाँ मात्र कापी से छूती रहें और कलाई या हाथ कापी से बराबर ऊपर रहे जिससे लिखने में सरलता हो और थकावट न मालूम हो। बाएँ हाथ के अंगूठे और पहिली अंगुलियों से पृष्ठ का निचला-बाँया हिस्सा पकड़े रहें जिससे लिखते-लिखते ज्योंही समय मिले और पेज का अन्त सा हो चले त्योंही पन्ने को उलटने में सुविधा हो। इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि पेन्सिल या कलम को जोर से दबाकर न पकड़ा जाय क्योंकि ऐसा करने से हाथ जल्दी-जल्दी नहीं चलता और लिखने में थकावट सी मालूम होती है।

अभ्यास—२

अच्छे सामान शीघ्र-लिपि-लेखक को केवल सहायता मात्र दे सकते हैं पर उनके अभ्यास की कमी को पूरा नहीं कर सकते। संकेत लिपि के वर्णाक्षर ही ऐसे सरल ढंग पर निर-धारित किये गये हैं कि जितने समय में आप नागरी लिपि के 'क' अक्षर को लिखेंगे उतने ही समय में संकेत-लिपि के 'क' अक्षर को कम से कम चार बार लिख सकते हैं। आवश्यकता केवल अभ्यास की है। अभ्यास इतना पक्का होना चाहिए कि वक्ता के मुँह से शब्द के निकलते ही आप उसको लिख लें, ज़रा भी सोचना न पड़े। इसके लिए पहले-पहल आपको केवल वर्णाक्षरों का अच्छा अभ्यास करना चाहिये, उलट-पलट कर, चाहे जिस तरह बोला जाय आप उसे आसानी से लिख सकें। इसके पश्चात् आप पाठ के अंत में दिये हुए अभ्यासों को लिखें, पहले अलग-अलग कठिन शब्दों को और फिर मिलाकर इतनी बार लिखें कि बोले जाने पर सरलता से लिख लें। दो-तीन बार तो धीरे-धीरे बोले जाने पर लिखें फिर चौथे या पाँचवें बार इस तरह बोले जाने पर लिखें कि वक्ता से आप तीन चार शब्द बराबर पीछे रहें जिससे आपको हाथ बढ़ाकर लिखने और वक्ता को पकड़ने का अभ्यास हो। अन्त में बोलने वाले की गति आपके लिखने की गति से आठ-दस शब्द प्रति मिनट अधिक होनी चाहिए जिससे आपको और भी तेज़ हाथ बढ़ाने का अभ्यास हो। यदि ऐसा करने में कुछ शब्द छूट जायँ तो कुछ हर्ज नहीं, आप लिखते जायँ और वक्ता को पकड़ने का प्रयत्न करते जायँ। नया पाठ लिखने पर जो नये शब्द या वाक्यांश आदि आवें उन्हें कई बार लिखकर ऐसा अभ्यास कर लें कि वह

लिखते समय आप ही आप हाथ से निकलने लगे, सोचना न पड़े।

दूसरी बात यह है कि आप कुछ न कुछ अभ्यास प्रतिदिन जहाँ तक हो सके एक निश्चित समय पर करें। ऐसा अभ्यास, उस अभ्यास से अधिक लाभप्रद होता है जो बीच-बीच में अन्तर देकर किया जाता है चाहे वह अभ्यास अधिक ही समय तक क्यों न किया जाय।

इस संकेत लिपि के लिए यह परमावश्यक है कि अभ्यास एकाध बार तो स्वयं लिखकर किया जाय पर अधिकतर किसी अच्छे जानकार के बोले जाने पर ही नोट लिखा जाय, साथ ही साथ सभाओं, परिषदों और मीटिंगों में जा-जा कर बैठा जाय और वक्ताओं की वक्तृताएँ सुनी तथा समझी जाएँ क्योंकि लिखने के साथ ही साथ कानों का साधना भी बहुत ही आवश्यक है जिससे सुनी हुई बात फौरन ही समझ में आ सके।

इसके पश्चात् ही सभाओं में बैठकर निधड़क लिखने की योग्यता आ सकती है। घबड़ाना ज़रा भी न चाहिये क्योंकि घबड़ाने से सब काम बिगड़ जाता है और आप में लिखने की शक्ति रहते हुए भी आप कुछ न लिख सकेंगे।

व्यंजन

इस संक्षिप्त लिपि में व्यंजनों की रचना अधिकतर ज्योमिति की सरल रेखाओं को लेकर ही की गई है पर जब सरल रेखा से काम नहीं चला तब वक्र रेखाओं का सहारा लिया गया है।
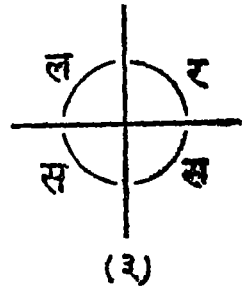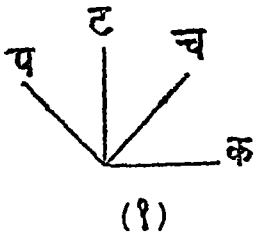
याद करने के लिए नीचे से चलना चाहिए। प्रथम चित्र में पहली रेखा से कवर्ग, दूसरी रेखा से चवर्ग, तीसरी रेखा से टवर्ग और चौथी रेखा से पवर्ग सूचित किया गया है। तवर्ग सरल रेखा से न बनाकर वक्र रेखा से बनाया गया है। इसका कारण यह है कि हम अँगरेजी शार्ट-हैंड (पिट्स प्रणाली) के ध्वनि संकेतों को भी जहाँ तक हो सका है साथ साथ लेकर चले हैं जिससे कि अँग्रेजी के पिट्समैन प्रणाली का जानने वाला यदि हिन्दी-शार्ट-हैंड सीखना चाहे तो उसे उलझन न पड़े। अँगरेजी में P को 'प' की रेखा से सूचित किया है, इसलिए हमने इस 'प' को ट, च, त, या म, न मानना उचित नहीं समझा यद्यपि ऐसा करना बहुत ही सरल था।

तवर्ग और स के लिए दाएँ और बाएँ दोनों तरफ से एक ही प्रकार की वक्र रेखा ली गई है जैसे—चित्र १ और २ में दिए गये हैं।

( ) / \

(१) (२)

श और स में इसलिए भेद नहीं किया गया कि मुहावरे से पता लग जाता है कि कहाँ पर स की आवश्यकता है और कहाँ पर श की। पर यदि कहीं पर विशेष भेद करना हो तो स के चिन्ह को काटने से श पढ़ा जायगा।

आज की हिन्दुस्तानी भाषा में उर्दू की बहुलता अर्थात् उर्दू और फारसी शब्दों के प्रयोगाधिक्य के कारण ज़ का उपयोग भी अधिक होता है जैसा सज़ा, मर्ज़ी आदि शब्दों में वहाँ पर इसी बायें और दायें 'स' के संकेत को सुविधानुसार मोटा कर लेना चाहिए।

'ष' का उच्चारण या तो 'ख' होता है या 'श' और इन दोनों अक्षरों के लिए संकेत निर्धारित किये जा चुके हैं इसलिए 'ष' के लिए स्वतंत्र रूप से कोई दूसरा संकेत निर्धारित नहीं किया गया।

'ण' का काम भी 'न' से लिया गया है। शब्द को उच्चारण करते ही यह पता लग जाता है कि शब्द को 'ण' से लिखना चाहिए कि 'न' से। इसलिए 'ण' के लिए भी कोई दूसरा संकेत निर्धारित नहीं किया गया है।

शेष फुटकर वर्णाक्षर अलग अलग रेखाओं से निरधारित किए गये हैं। पाठकों को इनका पहले भली-भाँति अभ्यास कर लेना चाहिए।

बाएँ और दाहिने संकेत सुचारुता के विचार से किये गये हैं। कहाँ किसको लिखना चाहिए यह आगे समझाया जायगा।

रेखाओं के बारीक और मोटे होने पर, उनके ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर लिखे जाने पर या उनके सरल और कटे होने पर खूब ध्यान रखना चाहिए और इनका इतना अच्छा अभ्यास करना चाहिए जिससे लिखते समय ध्वनि संकेत सुचारु रूप से आप ही आप लिखे जा सकें।

तीर का निशान लगाकर यह पहले ही बताया जा चुका है कि कौन रेखा कहाँ से आरंभ होती है और किस ओर जाती है। लिखते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि जो रेखा जहाँ से आरंभ होती है वहीं से आरंभ की जाय और फिर ऊपर, नीचे या आड़ी जिस तरफ लिखी है उसी तरफ लिखी जाय।

इस लिपि को बड़ी सावधानी से खूब बनाकर लिखना चाहिए, यहाँ तक कि एक एक वर्ण इतना लिखा जाय कि वह पुस्तक में दिये हुये वर्णों से मिलते जुलते मालूम हों। इसमें जल्दी करने से लिपि कभी भी आगे चलकर फिर न सुधरेगी और परिणाम यह होगा कि इस तरह जल्दी २ लिखने वाले लेखक महाशय कभी भी कुशल हिन्दी-संकेत-लिपि के ज्ञाता न हो सकेंगे।

विचार से देखिये तो वर्णमाला के पंचवर्गों के जितने अक्षर हैं, उनका प्रथम अक्षर तो मूल-अक्षर है पर उसके बाद का दूसरा अक्षर उसी मूल अक्षर में 'ह' लगा देने से बना है। इसी तरह तीसरा अक्षर मूल अक्षर है और चौथा अक्षर उसी में 'ह' लगा देने से बना है। जैसे कवर्ग का 'क' प्रथम अक्षर है और इसके बाद का अक्षर 'ख' क में ह लगाकर बना है। च के बाद छ=च+ह; ज के बाद झ=ज+ह। इसलिये इनके लिए एक

ही संकेत रखे गये हैं लेकिन भिन्नता प्रगट करने के लिये मूल अक्षर काट दिए गये हैं जैसे—क के संकेत को काट कर ख और प के संकेत को काट कर फ आदि बनाया गया है।

तवर्ग और स, दाऍं-बाऍं और कुछ ध्वनि संकेत ऊपर नीचे दोनों तरफ से लिखे गए हैं। उनको दोनों तरफ से लिखने का अभ्यास करना चाहिये। यह इसलिये किया गया है कि वर्णों के मिलाने में असुविधा न हो और लिपि के प्रवाह में अड़चन न पड़े जैसे (चित्र नीचे)—न+ल पहले तरीके से लिखना सुविधा-

जनक है, दूसरी तरह से लिखने में प्रवाह में रुकावट पड़ती है और संकेत भी शुद्ध और साफ नहीं बनते।
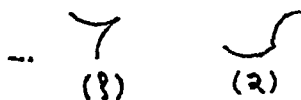
अभ्यास करते समय संकेतों की लंबाई और मुटाई पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। पाठकों को संकेतों की एक नियमित लंबाई मान ही कर लिखना चाहिये क्योंकि वह आगे चलकर देखेंगे कि किसी संकेत के नियमित रूप से छोटे या बड़े होने पर भी दूसरा अर्थ हो जायगा। संकेतों की नियमित लंबाई करीब ३/१० इंच की होनी चाहिये पर पाठकगण इसे अपनी सुविधानुसार कुछ छोटी बड़ी कर सकते हैं लेकिन संकेतों के रूप और बनावट में समानता होनी आवश्यक है।

च और र के संकेतों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। च ऊपर से नीचे और र नीचे से ऊपर को लिखा जाता है। झुकाव के विचार से च लंब से ३५ अंश की दूरी पर नीचे की

४. य र म ल स त व ध
५. ग ड़ च घ ज फ़ ठ छ
म न य र (नी)
६. ट थ घ फ़ भ व श ड़

अभ्यास—३

[नोट—जो अक्षर दाएँ या बाएँ से लिखे जाते हैं उनको दोनों तरफ़ से लिखो]

केवल पहला अक्षर लिखो—

१. कल, खल, घर, गरम, शरम, पर, तर
२. खटक, मटक, चटक, टपक, तड़क, भड़क, लपक, ठ
३. ठठक, छत, जमघट, फ़टपट, लट, थरथर, नमक, करन
४. दमक, धमक, नमक, पकड़, फ़रस, वट, मन
५. बरतन, भरम, मन, रट, लप्प, शरम बरस
६. सरपट, हम, वह, ड, ढ़, ठ

अभ्यास—४

केवल अंत के अक्षर लिखो—

१. कलक, मख, पग, जङ्ग, करघ, रह
२. पड़, मच्छर, गाय, रट, उलम्फ, जप, पव
३. नभ, मचमच, जगत, नम, रटन, लव, जतन
४. कुश, सहल, कल, कलस कब, कुछ, अड्ड
५. नथ, काठ, पद, बाँम्फ, कलम, नम, भव
६. लाभ, परख, तरह, रहम, यव, पट, पठ

व्यंजनों को मिलाना

१. व्यंजनों को मिलाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कलम कागज़ से न उठे और जहाँ पर पहले व्यंजन का अंत हो वहीं से दूसरा व्यंजन आरंभ हो। जैसे—चित्र नीचे
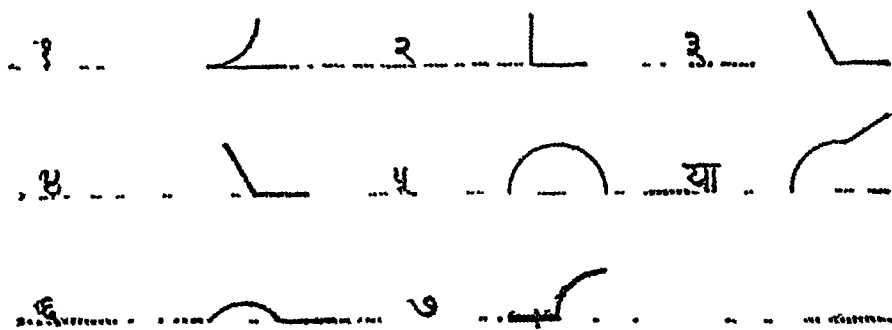
१— सक २— टक ३— पक

४— बग ५— खर या लर

६— मक ७— घत

२. जब दो व्यंजन मिलते हैं तो इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि नीचे आने वाला या ऊपर जाने वाला पहला अक्षर कापी की रेखा पर हो। दूसरे अक्षर लाइन से कहीं

भी आ सकते है। जैसे—चित्र नीचे

१ २ ३

४ ५ ६

७ ८
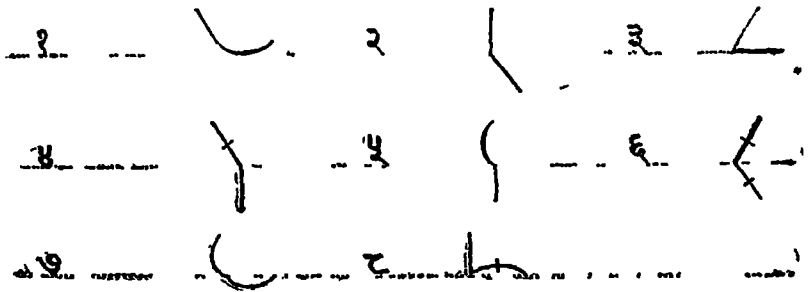
१— पङ्क	२— टप	३— चग
४— फट	५— दट	६— झफ
७— तन	८— टन	

३. कवर्ग के अक्षर, म, न और ङ नीचे या ऊपर आनेवाले अक्षर नहीं हैं, बल्कि आड़े अक्षर हैं। इसलिए यदि ये अक्षर पहले आते हैं और इनके बाद नीचे आनेवाले अक्षर आते हैं तो ये रेखा के ऊपर लिखे जाते हैं। जैसे—चित्र नीचे

१ २ ३

४ ५ ६
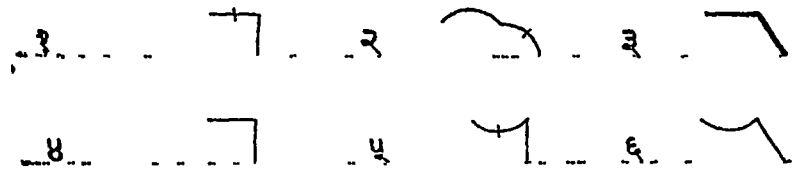
१— खट	२— मढ़	३— गब
४— कट	५— मट	६— नप

४. कवर्ग के अक्षर, म, न और ङ के बाद ऊपर जानेवाले अक्षर आवें तो ये अक्षर कापी की रेखा पर से आरंभ

वर्णाक्षरों की पहिचान

नोट:—तीर का निशान लगाकर यह बताया गया है कि कौन रेखा कहाँ से आरंभ होती है और किस ओर जाती है।

जो रेखाएँ नीचे और ऊपर दोनों तरफ आती जाती हैं, उनमें जो ऊपर से नीचे आती हैं उनके नीचे (नी) और जो नीचे से ऊपर जाती हैं उनके नीचे (ऊ) लिख दिया गया है।

१. चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, र (नी), ल (नी), स (नी) ह (नी), ड़ (नी) और ढ़ (नी)—ये नीचे आनेवाली रेखाएँ हैं।
२. य, र (ऊ), व, ह (ऊ), ड़ (ऊ) और ढ़ (ऊ)—ये ऊपर जानेवाली रेखाएँ हैं।
३. कवर्ग, म, न और ङ—ये आड़ी रेखाएँ हैं।
४. ल नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे दोनों तरफ एक ही प्रकार से लिखा जाता है।
५. कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग और पवर्ग के अक्षर, य, र (ऊ), व, ह, ड़ (ऊ) और ढ़—ये सरल रेखाएँ हैं।
६. तवर्ग, र (नी), ल, स, म, न, ड़ (नी) और ङ—ये वक्र रेखाएँ हैं।
७. कवर्ग के अक्षर—ये सरल और आड़ी रेखाएँ हैं।
८. म, न और ङ—ये वक्र और आड़ी रेखाएँ हैं।
९. बाएँ तरफ से लिखे जाने वाला तवर्ग और स, तवर्ग और स का बायाँ समूह कहा जाता है।
१०. दाएँ तरफ से लिखे जाने वाला तवर्ग और स, तवर्ग और स का दायाँ समूह कहा जाता है।

वर्णमाला के चित्र में तवर्ग और स के संकेतों को देखो।

(अ) तवर्ग समूह में पहला संकेत 'त' बाएँ समूह का है और दूसरा संकेत दाएँ समूह का है। इसी तरह थ, द, और ध भी हैं।

(ब) 'स' का पहला अक्षर दाएँ समूह का है और दूसरा अक्षर बाएँ समूह का है।

संकेत लिपि

जिन ध्वनि संकेतों द्वारा हम अपने विचार प्रगट करते हैं उसे भाषा कहते हैं। इनको सुनने के पश्चात् जिन संकेतों द्वारा हम इनको लिखते हैं उसे लिपि कहते हैं। सुनकर समझने और उसे लिखने में बड़ा अंतर होता है। जितनी जल्दी हम सुन सकते हैं उतनी जल्दी उन्हें हम अपने वर्तमान लिपि में लिख नहीं सकते। इसीलिए यह आवश्यकता प्रतीत हुई कि कोई ऐसा उपाय ढूँढ़ना चाहिए जिससे जितनी जल्दी हम सुनते हैं उतनी ही जल्दी हम लिख भी सकें। इस नई लिपि को "हिन्दी की संकेत लिपि" कहते हैं।

वर्णमाला

भाषा वाक्य और शब्दों के समूह से बनी हैं जो अपना विशेष अर्थ रखती है। शब्द सुविधानुसार स्वर और व्यंजनों में विभक्त किए गए हैं। हिन्दी की इस संकेत लिपि की रचना भी इन्हीं स्वर और व्यंजनों की ध्वनि के सहारे की गई है और विशेष चिन्हों से सूचित की गई है। पर जो सज्जन हिन्दी भाषा और उसकी व्याकरण के अच्छे ज्ञाता नहीं हैं, उनके लिए इस लिपि का सीखना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

होते हैं। जैसे—चित्र नीचे
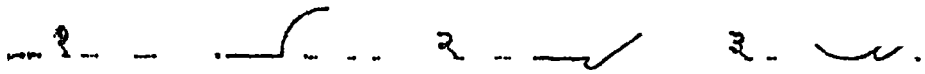
१— कल　　　　२— कव　　　　३— नव

५. अगर इन अक्षरों के बाद नीचे आने वाले अक्षर या ऊपर जानेवाले अक्षर नहीं आते बल्कि दूसरे आड़े अक्षर आते हैं तो भी ये अक्षर रेखा ही पर से आरंभ होते हैं। जैसे—चित्र नीचे
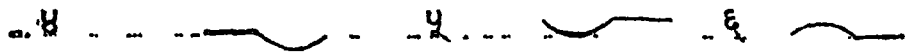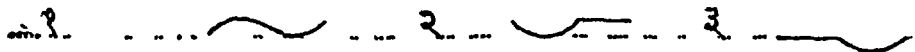
१— मन　　　　२— नक　　　　३— कन

४— गन　　　　५— ङक　　　　६— मक

६. परन्तु जब दो या दो से अधिक आड़ी रेखाएँ एक साथ आवें और उनके पश्चात् नीचे आनेवाली रेखा आवें तो आड़ी रेखाएँ कापी की रेखा के ऊपर लिखी जाती हैं। जैसे—चित्र नीचे

१— म न प　　　　२— क न प

७. पहले अक्षर का स्थान निर्धारित होने के पश्चात्, दूसरे अक्षर उससे मिलाकर लिखे जाते हैं। उनके स्थान का विचार नहीं किया जाता है जैसे—चित्र पृष्ठ ३०
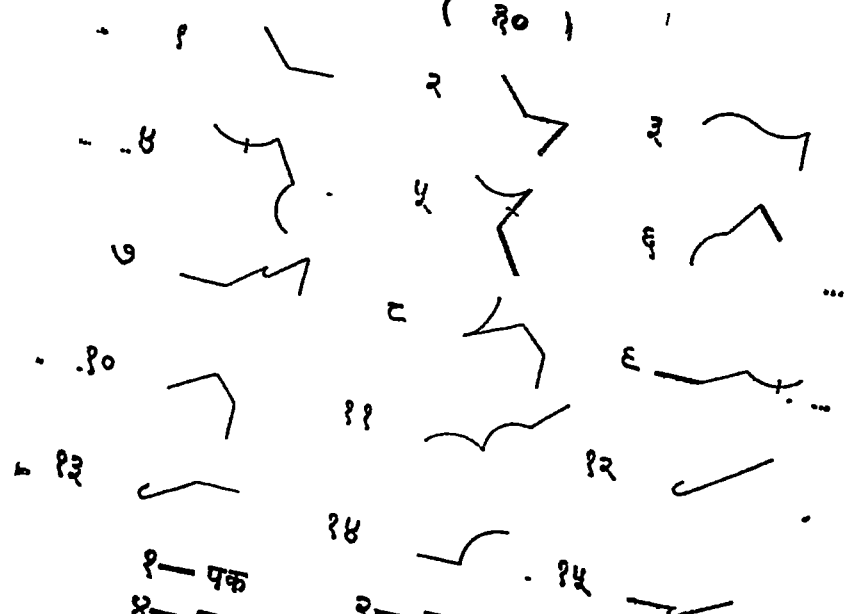
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

१— पक
२— पकव
३— मनट
४— मपत
५— नमव
६— लरव
७— करवट
८— सरपट
९— गरम
१०— रपट
११— मलर
१२— वर
१३— वक
१४— कल
१५— कव

८. वक्र अक्षर इस तरह मिलाकर दोहराए जाते हैं। जैसे—
चित्र नीचे
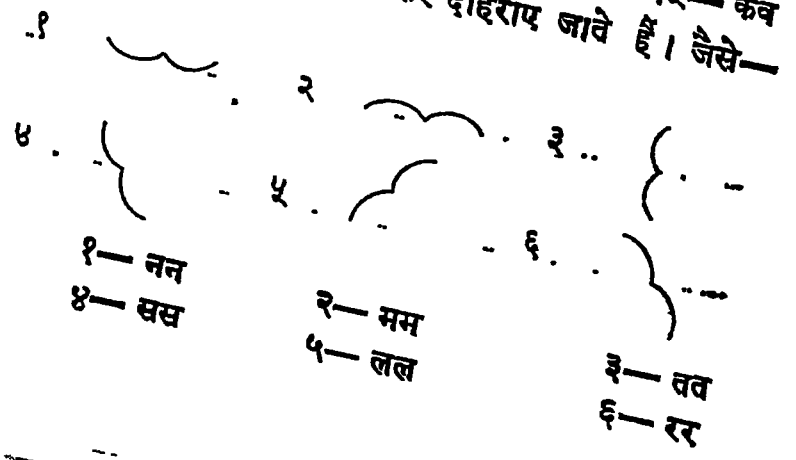
१ २ ३ ४ ५ ६

१— नन
२— मम
३— वव
४— सस
५— लल
६— रर

हिन्दी संकेत लिपि

वर्णमाला

९. सरल अक्षर इस तरह दोहराए जाते हैं। जैसे—चित्र नीचे
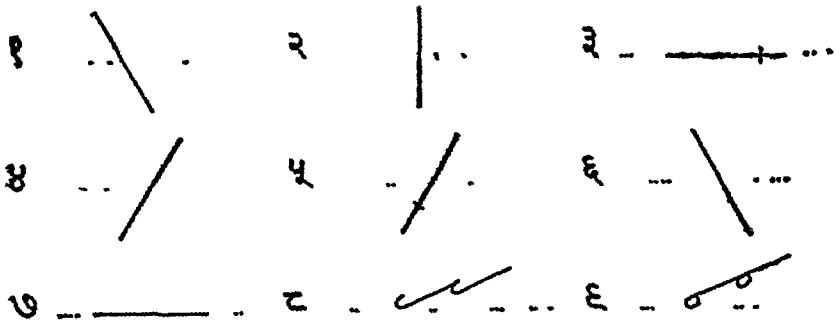
१— पप	२— टड	३— गघ
४— जज	५— जझ	६— पब
७— कक	८— वव	९— हह

१०. चवर्ग के अक्षर और र (ऋ), ड़ (ऋ) जब दूसरे अक्षर से मिलते हैं तो ऊपर और नीचे की लिखावट से पहचाने जाते हैं। च और र के कोण का विचार नहीं रह जाता। चवर्ग के अक्षर नीचे को और र (ऋ) और ड़ (ऋ) ऊपर को लिखे जाते हैं जैसे—चित्र नीचे
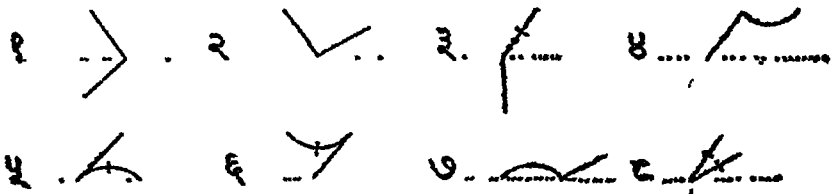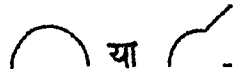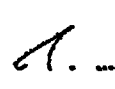
१— पच	२— पर	३— छट	४— रन
५— चन	६— मच	७— मर	८— छड़

११. स दायाँ-बायाँ और ल-र नीचे ऊपर नियमानुसार लिखे जाते हैं। नियम आगे मिलेगा।

१. या . २ या .

३. . या ... ४ या . ...

५ ६ . या . .

१. लल या लम
२. लर या लर
३. लङ्ग या लङ्ग
४. यल या यल
५. नल
६. सप या सप

अभ्यास—५

[नोट—नीचे लिखे जानेवाले र, ह, ल और दाएँ तरफ लिखे जानेवाले तवर्ग और स और कटे हुए म, न बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं]

१. मग, गम, जग, गज, छक, चट

२. टक, कट, डट, झट, डग, ठग, नट

३. थन, घन, नग, तन, छन, फन

४. जप, तब, कब, कम, मन, बुन

५. धर, चल, हल, रल, जल, यह

६. मटर, शहर, टहल, जलन, भजन, पटक

७. रपट, झपट, रटन, पहन, महक

८. कटहल, मलमल, हलचल, खटमल,

९. बरतन, टमटम, पनघट, रहपट,

१०. घर पर चल । बक बक मत कर । जल भर ।

च और र का विचार कर अक्षरों को मिलाओ—

११. रच, मर, पर, चरन, मरन, परच

१२. जहर, मगर, हर हर कर, चरन पर सर धर ।

स्वर

स्वर-ध्वनि का उच्चारण बिना किसी दूसरे ध्वनि के सहायता के आप ही आप हो सकता है। यहाँ स्वर दो प्रकार से लिखे गये हैं। एक मोटी बिन्दु और मोटे डैश से और दूसरा हल्की बिन्दु और हल्के-डैश।

मोटी बिन्दु और मोटे डैश से लिखे जानेवाले स्वर

अ	.	.	आ	–	–	(१)
ए	.	.	ओ	–	–	(२)
ई	.	.	ऊ	–	–	(३)

उपरोक्त स्वरों को याद करने के लिए निम्न वाक्य याद कर लें। इससे सहायता मिलेगी।

अ	रे	री	मा	चोर	कूद	(गया)
अ	ए	ई	आ	ओ	ऊ	×
१	२	३	१	२	३	

उपरोक्त चिन्हों को ध्यान से देखने पर प्रतीत होगा कि एक ही एक चिन्ह से तीन २ स्वर या मात्राएँ नियत की गई हैं परन्तु इस विचार से फिर भी वे अलग अलग स्वरों का बोध करें उनके लिए अलग अलग स्थान नियत किए गए हैं। एक ही चिन्ह एक स्थान पर एक स्वर को, दूसरे स्थान पर दूसरे को और तीसरे स्थान पर तीसरे स्वर को सूचित करता है। इन्हें स्वर के स्थान कहते हैं। यह प्रथम, द्वितीय और तृतीय तीन स्थान होते हैं। किसी रेखा के प्रारंभिक स्थान को प्रथम, बीच के स्थान को द्वितीय और अंत के स्थान को तृतीय स्थान कहते हैं। यह स्थान जिस जगह से अक्षर लिखे जाते हैं प्रारंभ होते हैं। इसलिये ऊपर से नीचे लिखे जानेवाले अक्षरों में ऊपर से आरंभ होते हैं। जैसे—(१) चित्र नीचे
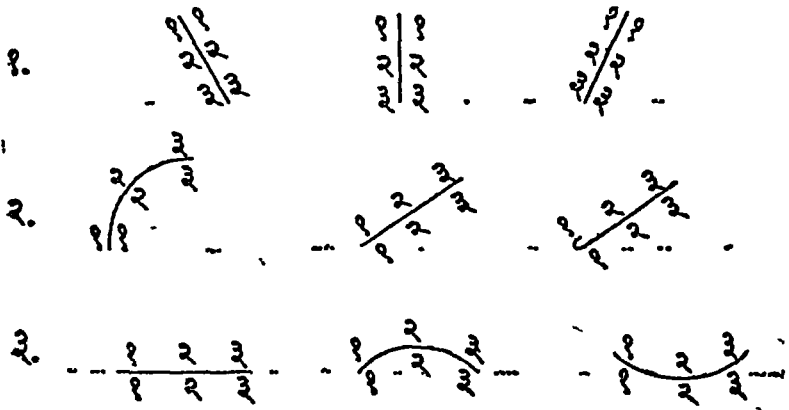
नीचे से ऊपर लिखे जानेवाले अक्षरों में नीचे से आरंभ होते हैं। जैसे—(२) चित्र ऊपर

आड़े अक्षरों में बाएँ से दाएँ तरफ पढ़े जाते हैं। जैसे—(३) चित्र ऊपर

इन स्वरों को व्यंजनाक्षर के पास लिखना चाहिए लेकिन इतना पास न लिखें कि अक्षरों से मिल जायँ।

ऊपर के छः स्वर मोटी बिन्दु और मोटे डैश से सूचित किए गये हैं। डैश व्यंजन के पास किसी भी कोण में रखा जा सकता है पर लम्बाकार अधिक सुविधाजनक और भला मालूम होता है। जैसे—चित्र नीचे

१ या २ या

३ या ४ या

जब स्वर ऊपर या नीचे आनेवाले व्यंजन के पहले रखा जाता है तो पहले पढ़ा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

१ २ ३ ४

५ ६ ७ ८

१ — आज २ — आठ ३ — आप ४ — ईट
५ — आश ६ — अथ ७ — आर ८ — ला

जब स्वर ऊपर जानेवाले या नीचे आनेवाले व्यंजन के बाद रखा जाता है तो व्यंजन के पश्चात् पढ़ा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

१ २ ३ ४

५ ६ ७ ८

१ — तो २ — रो ३ — वे ४ — सो
५ — पे ६ — ते ७ — बे ८ — दू

जब स्वर व्यंजन की आड़ी रेखा के ऊपर रखा जाता है तो पहले और नीचे रखा जाता है तो बाद में पढ़ा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

१ — एक	आम	ईख	ऊख
२ — मे	खो	ने	कू

मोटी बिन्दु प्रथम स्थान में अ, द्वितीय स्थान में ए और तृतीय स्थान में ई की ध्वनि देता है। जैसे—चित्र नीचे

१ — अट	एट	ईट
२ — अप	एप	ईप
३ — म	मे	मी
४ — स	से	सी

[नोट—अ की मोटी बिन्दु व्यंजन के बाद प्रथम स्थान में नहीं रखी जाती क्योंकि 'अ' की मात्रा व्यंजन में मिली रहती है।]

इसी तरह मोटा डैश प्रथम स्थान में आ, द्वितीय स्थान में ओ और तृतीय स्थान में ऊ की ध्वनि देता है। जैसे—
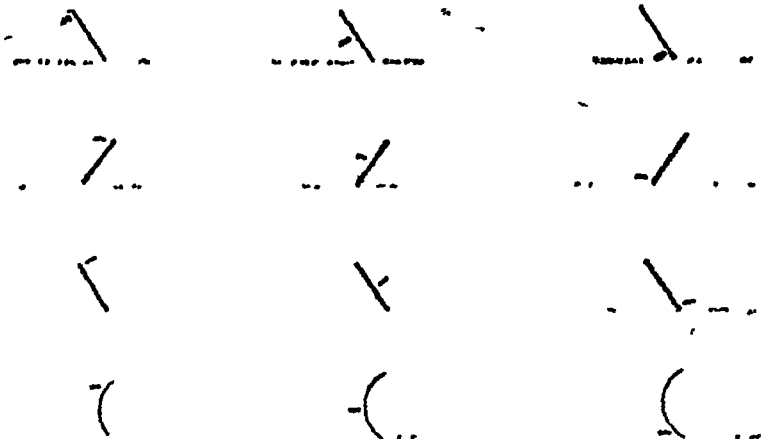
आप	ओप	ऊप
आज	ओज	ऊज
बा	बो	बू
आत	ओत	ऊत

हल्की बिन्दु और हल्के डैश से लिखे जाने वाले स्वर

तुम छः स्वर ऊपर पढ़ चुके हो। अब यहाँ छः स्वर और दिए जाते हैं। पहले के स्वर मोटी बिन्दु और मोटे डैश से बने थे। यह छः स्वर हल्की बिन्दु और हल्के डैश से बने है।

ऐ	. ⋮ .	आइ या आई	- ⋮ - (१)
औ	. ⋮ .	अं	- ⋮ - (२)
इ	. ⋮ .	उ	- ⋮ - (३)

ऐ	और्त	इस	साहस	अचल	उलट
ऐ	औ	इ	आइ	अं	उ
१	२	३	१	२	३

इन स्वरों का प्रयोग पहले छ: स्वरों के अनुसार ही होता है और इनके स्थान भी उन्हीं के अनुसार नियत किये गये हैं।

ऊपर के स्वरों को देखने से प्रतीत होगा कि ऋ, अः और लृ को कोई स्थान नहीं दिया गया। इनकी कोई आवश्यकता न पड़ेगी। बीच में अः की मात्रा को जहाँ विद्यार्थीगण आवश्यक समझें अपने मन से लगा लें। जैसे दुख। यह 'दुख' लिखा है। यदि विद्यार्थीगण चाहें तो इसे 'दु:ख' पढ़ें या लिखें। यदि विसर्ग अंत में आवे तो शब्द-संकेत के अंत में एक हल्का डैश लगाने से विसर्ग पढा जायगा। ऋ का काम र से और लृ का काम 'ल' में 'र' लगाने से निकल जाता है।

अनुस्वार 'अं' यदि व्यंजन के पहले या बाद में अकेला आवे तो यथा-विधि अपने द्वितीय स्थान पर रखा जावेगा।
जैसे—चित्र नीचे

१ ... २. ... ३. ...

४. ... ५. ...

१— अंडा २— अंत ३— अंधेरा
४— कंप ५— पम्प

[चन्द्र विन्दु और अनुस्वार विद्यार्थीगण अपनी समझ से लगा लें।]

यदि अनुस्वार व्यंजन के पहले या बाद किसी स्वरके पश्चात् आवे तो उसी स्वर के स्थान पर एक हल्का शून्य रख देना चाहिए। जैसे—चित्र नीचे

१ ../. २. (.... ३. ...|.....

१— आँच २— आँत ३— ओंठ

इससे यह मालूम होगा कि जहाँ पर यह शून्य रखा गया है उस स्थान का स्वर सानुनासिक है। स्थान के विचार से स्वर को मालूम कर लेना चाहिये। जैसे—आँत (ऊपर के चित्र में नं० २ से सूचित शब्द) में चूँकि शून्य प्रथम स्थान में रखा है, इसलिये इससे पता चलता है कि यहाँ कोई प्रथम स्थान का स्वर है। प्रथम स्थान के स्वर अ, आ ऐ, और आइ होते है। सब स्वरों में अनुस्वार मिलाकर पढ़ो, किससे ठीक शब्द बनता है। अँत, ऐंत, आइत ठीक शब्द नहीं बनते। आँत ठोक शब्द बना इसलिए आँत शब्द ठीक है।

पर यदि आरंभ में और स्पष्टता चाहो तो शून्य के नीचे उस स्थान की मात्रा भी लगा दो। जैसे नं० १, २, ३, और ४ चित्र नीचे

१. २. ३. ४.

१— साँप २— चोंच ३—सींच ४—पूँछ

सींच और पूँछ अगले नियम 'दो व्यञ्जन के बीच स्वर के स्थान' के अनुसार दिया गया है।

अभ्यास—६

अभ्यास—७

१. पा, फी, ला, लो, ने, से, का, को, ली
२. आम, ओम, आज, ईश, ओस, ईख, ऊख, खा
३. राम, शाम, रोम, काम, बाप साख, रात
४. रमेश, साध, कामा, लेता, लोटा, मोटा, आराम
५. बटेर, पालतू, मेला, देखा, आग पानी, रानी
६. छोटा, गरमी, रोशनी, अनाज, आदमी
७. गाय, घास, बोली, आराम, आजादी, रेल

दो व्यंजनों के बीच स्वर का स्थान

स्वर जब दो व्यंजनों के बीच में आता है तो प्रथम और द्वितीय स्थान पर तो यथानियम पहले व्यंजन के पश्चात् रखा जाता है पर जब तीसरे स्थान पर आता है तो पहले व्यञ्जन के तीसरे स्थान पर न रखकर आगे वाले व्यंजन के तृतीय स्थान के पहले रखा जाता है, क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। ऐसा करने से पहले व्यञ्जन के बाद तृतीय स्थान और उसके आगेवाले व्यञ्जन के पहले के प्रथम स्थान में उलझन न पड़ेगी।

कभी २ ऐसा भी होता है कि दो व्यंजनों के मिलने के कारण तीसरे स्थान की जगह नहीं बचती। इन्हीं बातों को दूर करने के लिए उपरोक्त नियम रखा गया है।

हिन्दी में एक अक्षर के बाद एक ही मात्रा लगती है। इसलिये अगले व्यंजन के पहले किसी मात्रा के आने का डर नहीं रहता। छोटी 'इ' की मात्रा नागरी लिपि में यद्यपि अक्षरों के पहले लगती है पर उसका उच्चारण अक्षरों के बाद ही होता है, इसलिये संकेत लिपि में वह मात्रा भी व्यंजन के बाद ही रक्खी जाती है। ऐसे शब्दों में जहाँ मात्रा के बाद कोई दूसरा स्वर आता है। जैसे—'खाइये' 'पिलाइये' आदि। [यहाँ ख और ल में आ की मात्रा के पश्चात् दूसरा स्वर 'इ' है] ऐसे स्थान में किस तरह लिखना चाहिये इसका नियम आगे चल कर मिलेगा।

इसलिये तृतीय स्थान की मात्रा नं० १ की तरह लगानी चाहिये—नं० २ की तरह नहीं। चित्र नीचे
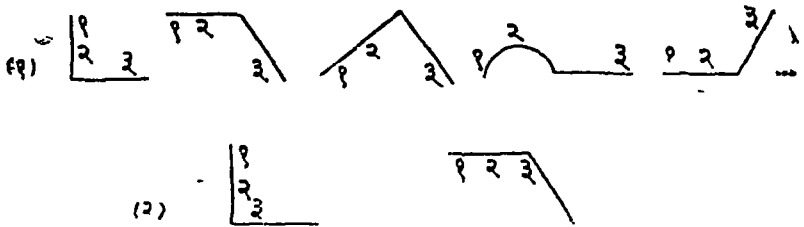
ऊपर के चित्र नं० २ के पहले संकेत में यह नहीं मालूम होता कि तृतीय स्थान 'ट' के बाद है या 'क' के पहले तथा दूसरे में 'क' के बाद है या पहले 'प' के पहले। इसलिए इस प्रकार मात्रा लगाने से पढ़ने में बड़ी उलझन होती है।

इसलिये तृतीय स्थान की मात्रा नं० १ की तरह ही लगाना ठीक है।

———

अभ्यास—८
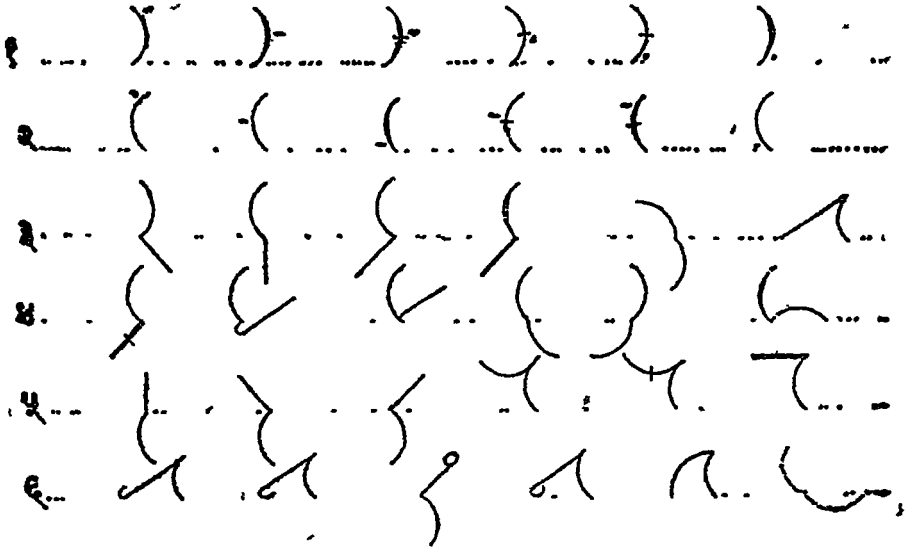
१

२

३

४

५

६

अभ्यास—९

१. कत, छत, दो, तो, तू, था, थी, थे
२. ईद, ऊद, थोदा, दी, देना, लेना, दाम
३. पथ, पद, दर, मद, दम, दाम लाता
४. थापी, थकना, थोक, उठ, ताप, माप
५. तवा, तहा, दद, दाम, आदमी
६. थन, थान, धमकी, तनकी, देवता
७. पोस्ता, .रास्ता, दासता, पातक, नाती

तवर्ग के दाएँ बाएँ अक्षरों का प्रयोग

तवर्ग के अक्षर दाएँ-बाएँ दोनों तरफ से लिखेजाते हैं। जैसे—चित्र नीचे

त थ द ध

तवर्ग के दाहिने व्यंजन के बाद पवर्ग, कवर्ग, र (नी० ऊ०) स (दा) और ल (ऊ) आता है। जैसे—चित्र नीचे

१— तप २— दक ३—धर (नी)
४— तर (ऊ) ५— तस (द) ६— तल (ऊ)

तवर्ग के बाएँ व्यंजन के बाद चवर्ग र (नी), स (बा), ह (ऊ० नी०), न, व, य, और ल (ऊ० नी०) आता है। जैसे—चित्र नीचे

१ २ ३ ४
५ ६ ७ ८

आ

१— तच २— तर (नी) ३— तस (बा) ४— तह (ऊ)
५— तह (नी) ६— तन ७— तब ८— तय
९— तल (ऊ) या तल (नी)

टवर्ग, तवर्ग और म के पहले तवर्ग दाहिने और बाएँ दोनों तरफ लिखा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

तट तत दम या दम

इसी तरह चवर्ग, स (दा), ह (नी) और म के बाद दाहिनी तरफ से लिखा जाने वाला तवर्ग आता है। जैसे—चित्र नीचे

चत स (दा) द ह (नी) त मत

कवर्ग, पवर्ग, य र (ऊ), न, ल (ऊ), ब, स (बा) और ह (ऊ) के बाद बाईं तरफ लिखा जानेवाला तवर्ग आता है। जैसे—चित्र नीचे

१— कत पत यत र (ऊ) त नत
२— लत वत स (बा) त ह (ऊ) त

टवर्ग तवर्ग और म के बाद तवर्ग दोनों तरफ लिखा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

३— टत. तत

जब कभी तवर्ग किसी शब्द में अकेला व्यंजन हो और मात्रा उसके पहले आवें—चाहे उस व्यंजन के बाद भी मात्रा हो—तो बायाँ और यदि मात्रा व्यंजन के बाद आवें—पहले नहीं—तो दाहिना संकेत लिखा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

आध	ऊद	दे	दो	आधा	थे
था	थी	ईदू	ओदा	ओथ	थू

इस दाएँ बाएँ को लिखावट को समझने के लिए यह अत्यावश्यक है कि आप इस सांकेतिक लिपि के मूल तत्वों को ठीक तौर पर समझ लें। पहली बात धारा प्रवाह की है। संकेतों को आगे की तरफ बिना किसी रुकावट के लिखा जाना चाहिए। इसमें तनिक भी रुकावट हुई या आगे से पीछे लौटना पड़ा कि वक्ता बहुत दूर आगे निकल जायगा और फिर उसको पकड़ना बहुत कठिन हो जायगा।

दूसरी बात संकेतों के सुचारुता की है। यह लिपि बहुत तेजी के साथ लिखी जाती है। इसलिये यह आवश्यक होता है कि तेजी से लिखे जाने पर भी संकेतों की सुचारुता न जाय।

दाएँ-बाएँ व्यंजन इन्हीं असुविधाओं को हटाने के लिये लिखे गए हैं जिससे प्रवाह से पीछे न लौटना पड़े और व्यंजनों के बीच ऐसे स्पष्ट-कोण—जहाँ तक हो सके—बनते रहें कि शीघ्राति-शीघ्र लिखे जाने पर भी साफ पढ़े जायँ। जैसे—चित्र नीचे

१ ... ... या ...   २ ... या ... ...

१. ऊपर नं० १ में 'सत दाएँ-बाएँ दोनों तरफ से लिखा गया है। सत (दा) में रुकावट पड़ती है और संकेत भी अच्छा नहीं बनता। इसलिये सत (बा) लिखा जाना चाहिये।
२. इसी तरह नं० २ में 'तच' दायाँ-बायाँ दोनों तरफ से लिखा गया है। 'तच' दाहिने में कोई कोण नहीं है और यदि जरा भी छोटा रह गया तो पढ़ा भी न जा सकेगा और केवल त (दा) रह जायगा। इसलिये त (बा) लिखा जाना चाहिये।

अभ्यास—१०

अभ्यास—११

१. टीम अफीम बूट मूल मेल सीर
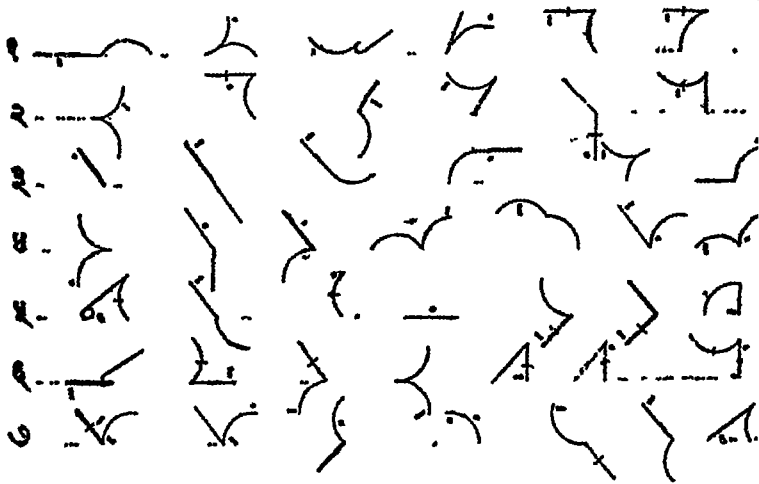
२. झूठ मूसा बूर सूत नीला हीरा

३. मीन सेठ सीरा चीनी टीन रीम

४. खूब टीका खीरा काली धीमा पीर

५. की पेटी मूली मोटी पीठ दान काम

६. मेरी टीम जीत गई।

७. पेड़ के मल में पानी दे।

८. मूसा भाग गया।

९. वह अफीम खाकर मर गया।

१०. सेठ जी ने मीठे २ आम खाये।

स और म—न का प्रयोग

(१) स

तवर्ग के समान "स" भी दाएँ-बाएँ और म, न ऊपर नीचे लिखा जाता है। इसके नियम ये हैं।

१.

२.

३.
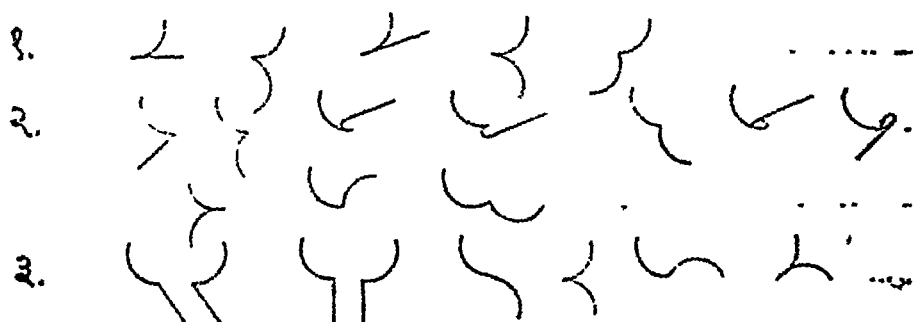
दाहिने स के बाद कवर्ग, तवर्ग (दा), र (ऊ-नी) और स (दा), आता है। जैसे—नं० १ चित्र ऊपर

स क स त (दा) स र (ऊ) स र (नी) स स (दा)

बाएँ स के बाद चवर्ग, तवर्ग (बा), य, व, स (बा) ह (नी - ऊ), ल (नी - ऊ) और न—ये सब आते हैं। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

स च स त (बा) स य स व स स (बा) स ह (ऊ)

स ह (नी) स ल (नी) स ल (ऊ) स न

पवर्ग, टवर्ग, र (नी) और म के पहले दायाँ-बायाँ दोनों स आता है। जैसे—नं० ३ चित्र ऊपर

सप सट सर सम
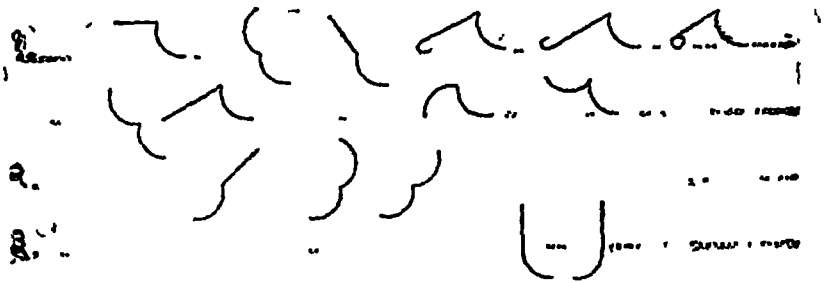
इसी तरह कवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, य, व, ह (ऊ), स (बा), र (ऊ), ल (ऊ) और म, न के बाद बायाँ 'स' आता है। जैसे—नं० १ चित्र ऊपर

क स   त (बा) स   प स   य स   व स   ह (ऊ) स

स (बा) स   र (ऊ) स   ल (ऊ) स   न स

चवर्ग, तवर्ग (दा), स (दा) के बाद दायाँ स लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

च स   त (दा) स   स (दा) स

टवर्ग के बाद 'स' दोनों तरफ लिखा जाता है। जैसे—नं० ३ चित्र ऊपर

ट स

जब कभी यह 'स' किसी शब्द में अकेला रहता है और मात्रा पहले आती है—चाहे उस व्यंजन के बाद भी मात्रा हो—तो बायाँ और यदि मात्रा बाद में आती है—पहले नहीं—तो दायाँ 'स' लिखा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

आशा (बा), आस (बा), उषा (बा), शो (दा), आदि

(२) म, न

१.

२.

३.

१. म या म (कटा) अर्थात् न के बाद तवर्ग, र (नी-ऊ) ल (ऊ), ह (नी), स (बा) य और व आता है। जैसे—नं० १ चित्र ऊपर

मत (दा), मर (नी), मर (ऊ), मल (ऊ), मह (नी), मस (बा)

मय मव

२. न या न (कटा) अर्थात् म के बाद चवर्ग, टवर्ग, पवर्ग तवर्ग (बा), य, व, ह (ऊ-नी) और ल (नी) आता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

नच, नट, नप, नत (ब), नय, नव, नह (ऊ),

नह (नी) नल (नी)

३. कवर्ग, म, न और ङ—न और म के पहले और बाद दोनों तरफ आते हैं। जैसे—नं० ३ चित्र ऊपर

मक कम नक कन मस

नम मन

१.

२.

३.

४.

५.
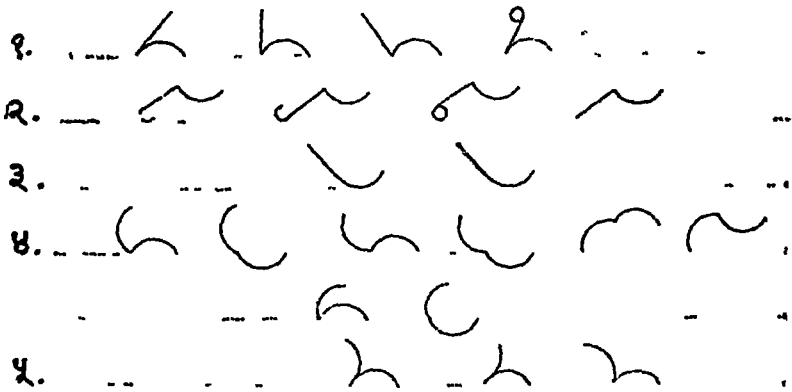
१-२ नीचे आनेवाली सरल रेखाओं के बाद म या म (कटा) अर्थात् न आता है और ऊपर जानेवाली सरल रेखाओं के बाद न या न (कटा) अर्थात् म आता है। जैसे—नं० १-२ चित्र ऊपर

(१) चम टम पम ह (नी) म

(२) यन वन ह (ऊ) न र (ऊ) न

३. पवर्ग के बाद न भी आता है। जैसे—नं० ३ चित्र ऊपर

पन बन

४. तवर्ग (वा), स (वा), ल (ऊ-नी) के बाद म और न दोनों आते हैं। जैसे—नं० ४ चित्र ऊपर

त (वा) म-त (वा) न, स (वा) म-स (वा) न, ल (ऊ) म-ल (ऊ) न

ल (नी) म ल (नी) न

५. तवर्ग (दा), स (वा) और र (नी) के बाद म या म (कटा) अर्थात् न आता है। जैसे—नं० ५ चित्र ऊपर

त (दा) म, स (दा) म, र (नी) म

—

अभ्यास—१२

१.	सा	सी	ओस	ईश	आश	शो
२.	अस	सू	शू	आशा	से	सी
३.	पस	घस	दस	धस		रस
४.	मस	नस	सप	सद		सन
५.	पेशा	सानो		सोना		रोश
६.	रोना	खोना		काना		नाना
७.	नाम	मान		हम		नप

अभ्यास—१३

१

२

३

४

५

६
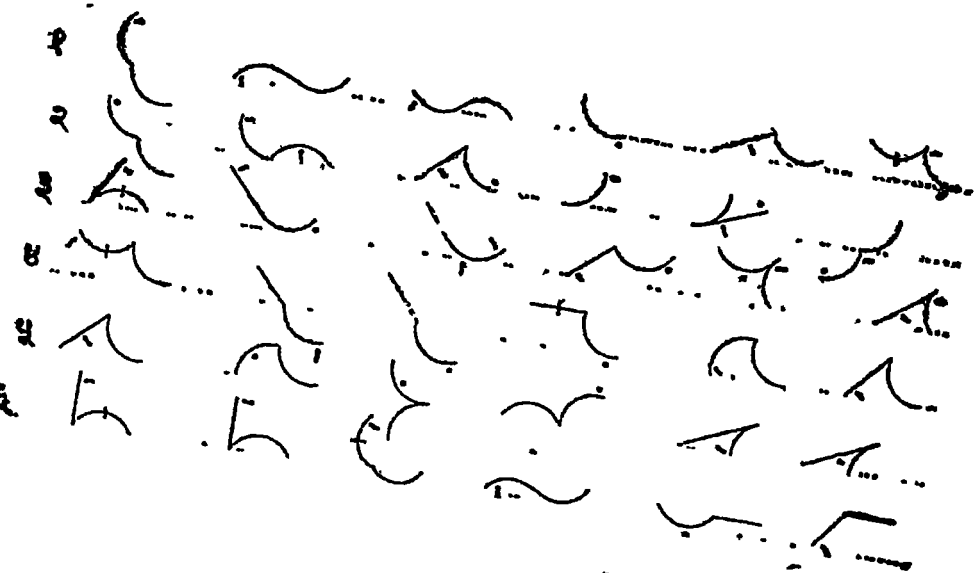
शब्द-चिन्ह

हर एक भाषा में बहुत से ऐसे शब्द हैं जो प्रायः हर एक वाक्य में काम आते हैं। इनके लिये संकेत-लिपि में एक प्रकार के संक्षिप्त-चिन्ह निर्धारित कर दिये गये हैं। ऐसे चिन्हों को "शब्द-चिन्ह" कहते हैं।

शब्दों में लिङ्ग और वचन के विचार से जो परिवर्तन होते हैं उनका शब्द-चिन्हों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि वे मुहावरे से पढ़ लिए जाते हैं।

ये शब्द-चिन्ह सुविधानुसार रेखा के ऊपर, रेखा पर या रेखा को काटते हुए बनाये जाते हैं।

अभ्यास—१४

१ . . २ . ... । .
३ . . ४ .. ..
५ . . . . .

१. एक दो। २. ऊपर, पै, पर में
३. है, हो हैं, हूँ ४. का को
५. कि, की के

[नोट—पूर्ववत् नीचे लिखे जानेवाले ल और र बड़े अक्षरों में लिख गये हैं।]

१. आदा माड़ दवा पीता मानना हरा बोरा
२. सीता बाबू बाजा लाल काट गोद नाता
३. रोते लेखा आगम चाची मामी काम

४. भोग असली कारन लोभी . लालची
५. बगुला जागता डरावना भयानक लेनेवाला
६. एक आदमी पेड़ पर है।
७. भोला का बाप कानपुर जाता है।
८. राम को दो बोझा करबी काट कर दे दो।
९. लड़का रोते रोते छेदी के घर पर चला गया
१०. लालची आदमी सदा मारा जाता है।

अभ्यास—१५

१ ... २ ...
३ ...
४ ...
५ ... ६ ...
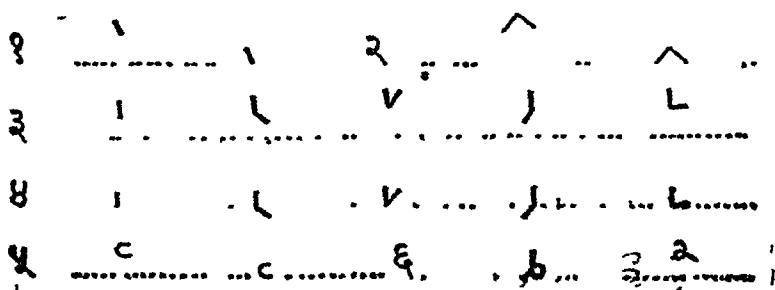
१. ने से २. कौन कुछ
३. मैं मैंने मुझे मेरा मुझको
४. उस उसने उसे उसका उसको
५. वह वे ६. उसी इसी

१

२

३

४

५

६

७

८

९

अभ्यास—१६

१ .... २ ....

३ ....

४

१. कम - क्या किया २. हाँ हुआ - होता

३. तुम तुमने तुम्हें तुम्हारा तुमको

४. उन उनने उन्हें उनका उनको

---

१. माला हार टोना भूल आना खाना

२. पड़ोसी ताकत घोसला काटने

३. नज़ाकत भतीजी डरावना दोपहर

४. क्या वह बाजार गया है। हाँ वह गया है। अभी तो उसे कुछ ही देर हुई है।

५. हाँ उसने कौन काम किया जो सजा हुई।

६. तुम कौन हो। तुम्हारा क्या नाम है। तुमने यह कोट कब पाया।

७. वे कमज़ोर थे हार गये। तुमको उनकी मदद करनी थी।

८. उन लोगों से कुछ न होगा। उनको जाने दो।

९. अगर कुछ हुआ होता तो उनने जरूर कहा होता।

शब्द-चिन्ह

१

२

३

कहाँ जहाँ वहाँ यहाँ

यदि-दाम-दान दे-देना-देता दिन-दी-दिया

आएँगे - आगे - गाय गया

बात - बाद बड़े - बड़ा बहुत - बुरा

अतः-अति भाँति - तौर इत्यादि - अत्यंत

हाथ-साथ-साथी थोड़ा था-थी-थे

न नहीं

[नोट—प को लाइन के ऊपर लिखने से 'आप', लाइन पर लिखने से 'पहले—पैसा' और लाइन को काटकर लिखने से यद्यपि-पीछे पढ़ा जायगा ।]

अभ्यास—१७

अभ्यास—१८

१. गणेश गदाधर नमक गिरजा गिरधर

२. गुलनार जीवन तैराक तौलना पाइप

३. गुलाब झुमका पैराक दिहाव दौलत

४. नूपुर नेगचार बैरागी बेहतर बैजनाथ

५. मुटाई मुश्किल लगातार लिपाई

६. करंजा कम्बल जंतर चौंचक पँचकस लोबान

७. वह बहुत बड़ा आदमी हो गया है। अब बात-बात में बिगड़ जाता है।

८. अतः सिद्ध हुआ कि बड़े आदमी के हाथ में ताकत है पर दीनानाथ गरीब आदमी के सहायक हैं।

९. हाँ, अमीर लोग दीनानाथ को भूले हैं, उनकी पहुँच उनके पास नहीं है, न होगी।

१०. पहले तो लोग अति करके बुरा-करते हैं, बाद में भाँति-भाँति और तौर-तौर की बातें इत्यादि बनाकर अत्यंत मूर्ख बनते हैं ऐसे आदमी का साथ कौन साथी देगा।

स, श और ज़ (१)

व्यंजन स, श केवल वक्र रेखा ही से नहीं बनता बल्कि एक छोटे वृत से भी बनता है। यह व्यंजन की सरल और वक्र रेखाओं में बड़ी सरलता के साथ जोड़ा जा सकता है। इसका उच्चारण स और श के अलावा ज़ भी होता है। जैसे—मेज़, जहाज़, ज़ामिन, ज़ुल्फ आदि में ज़, ज़, ज़ा और ज़ु है।

जब यह 'स' वृत किसी व्यंजन की सरल रेखा के आरंभ में मिलता है या बीच में इस तरह आता है कि व्यंजन के बीच में कोण नहीं बनता तो यह दाहिने से बाएँ की तरफ लिखा जाता है। यदि यह वृत किसी सरल व्यंजन के अंत में आता है तो बाएँ से दाहिने को लिखा जाता है। कवर्ग में यह वृत नियमानुसार आदि, मध्य और अंत में चाहे जहाँ आवे ऊपर लगता है। जैसे—नं० १-२-३ चित्र नीचे
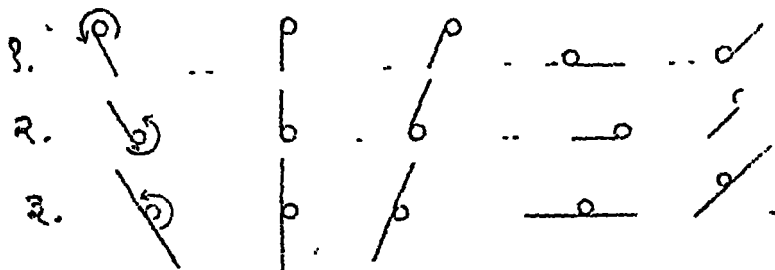
१. सप	सट	सच	सक	सर
२. पस	टस	चस	कस	रस
३. पसप	टसट	चसच	कसक	रसर

जहाँ व्यंजन की सरल रेखा कोण बनाती है वहाँ से वृत्त कोण के बाहर बनाया जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१.
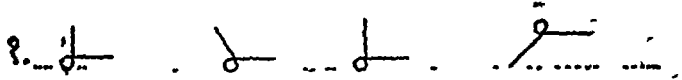
टसक पसक डसक रसक

जब यह स वृत्त व्यंजन की किसी अकेली वक्ररेखा में मिलाया जाता है तो उसके अन्दर लगता है और यदि दो वक्र रेखाओं के बीच मे या एक वक्र और दूसरी सरल रेखा के बीच में आता है तो सुविधानुसार पहली या दूसरी वक्र रेखा के बीच में बनाया जाता है। अधिकतर तो यह पहली ही वक्ररेखा के बीच में बनाया जाता है पर यदि लिपि की धारा प्रवाह और सुचारुता में सहायता मिले तो दूसरी वक्र रेखा के भीतर भी लिखा जा सकता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१.

२. या
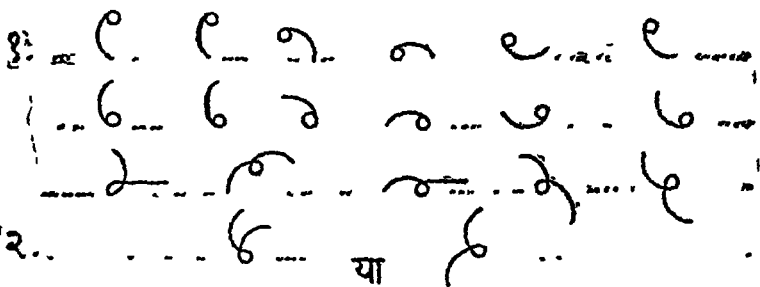
(१) सत सद सर सम सन सस

तस दस रस मस नस सस

तसक लसम मसक रसर ससस

लेकिन (२) तसल (ऊ) या तसल (नी) आदि

जब किसी व्यंजन में स वृत पहले लगता है तो वह वृत सबसे पहले पढ़ा जाता है। इसकी मात्राएँ जिस व्यंजन में यह वृत लगता है उसके पहले रखी जाती हैं और वृत के बाद पढ़ी जाती हैं। फिर व्यंजन और व्यंजन के बाद में रखी हुई उसकी मात्रा पढ़ी जाती है। जैसे—'शाला' शब्द में (शब्द नं० २ चित्र नीचे) पहले वृत, फिर व्यंजन के पहले रखी हुई मात्रा 'आ' फिर व्यंजन 'ल' और अंत में व्यञ्जन 'ल' की मात्रा 'आ' पढ़ी जायगी। जैसे—चित्र नीचे

सूम	शाला	सास	शादी
शाक	शान	शोर	रोज़

इसी तरह जब 'स' वृत अंत में आता है तो जिस व्यञ्जन में 'स' वृत लगता है पहले वह व्यञ्जन और उसकी मात्राएँ पढ़ी जाती हैं और अत में 'स' वृत पढ़ा जाता है। 'स' वृत के पश्चात् फिर कोई मात्रा नहीं आती। जैसे—मूस शब्द में पहले म व्यंजन और उसकी मात्रा 'ऊ' पढ़ी जायगी और अंत में 'स' वृत पढ़ा जायगा। वृत के बाद मात्रा आने से वृत न लिखा जायगा।

जैसे—नं० १ चित्र नीचे
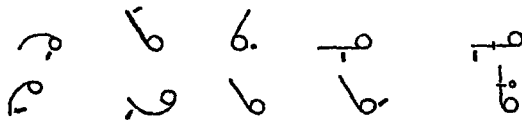
(१) मूस बास चीज़ कोस खास
लाश नाज़ पीस पूस ठोंस
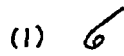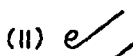
य और व के आरम्भ 'स' वृत उसके आँकड़े के अन्दर ही लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र नीचे

(२) (i) सय (ii) सव

जब 'ह' संकेत के आरम्भ मे 'स' वृत मिलाना हो तो 'ह' के रेखागत वृत को ही दुगुना कर दिया जाता है। जैसे—नं० ३ चित्र नीचे

(३) सह — शहर सियाना सुवास

नोट—य, व और ह के अन्त से नियमानुसार र (ऊ) की तरह स वृत लगता है।

१.
२. (i) (ii)
३ = सह

बीच में स वृत जिस व्यंजन के बाद आता है पहले वह व्यंजन और उसकी मात्राएँ पढ़ी जाती हैं और फिर 'स' वृत पढ़ा जाता है। जो मात्राएँ वृत के पश्चात् आती हैं वह उसके अगले व्यञ्जन के पहले यथा-स्थान रखी और पढ़ी जाती हैं।

यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि जब बीच में 'स' वृत या कोई दूसरा ऑकड़ा आ जाय तो तृतीय स्थान की मात्राएँ जिस व्यंजन के बाद होंगी उसी व्यञ्जन के बाद तृतीय स्थान पर रखी जायँगी और वृत या ऑकड़े को छोड़ कर अगले व्यंजन के

तृतीय स्थान के पहले न रखी जायँगी। जैसे नीचे के 'किसमिस' शब्द में। यहाँ 'क' के तृतीय स्थान की मात्रा बीच में 'स' वृत होने के कारण 'क' के तृतीय स्थान के पश्चात् ही रखी गयी है। अगले व्यञ्जन 'म' के तृतीय स्थान के पहले नहीं। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

शब्द-चिन्ह

कैसा - कैसे   किस   किसलिए

सामने - सम्पूर्ण   सम्बंध - समय   यह   ये

साहब - सुबह   सब-सबसे-सूबे   सबब सबक

इस   इन

अभ्यास—१६

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

१०.

११.

अभ्यास—२०

हम हमने हमें हमारा हमको
रात-द्वारा ओर-औरत और-रुपया

---

१. सर शर सम शाम सार साल सेव
२. कस टस जस नस भेस लेस सोचा
३. नाश्ता कसाई काइस कोसना समोसा
४. किशमिस चूसना जालसाज तसकीन नौसादर
५. आसमान मुसलमान वास्तव व्यवसाय विकसित
६. शासक को दिन-रात बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ता है। शासन करना कुछ खेल नहीं है।
७. भले शासक हमारी शिक्षा को सरल बनाने और उसके द्वारा विद्या की ओर—मरद और औरत दोनों की—सुरुचि लगाने का सुविचार करते हैं।
८. इससे हमको रुपया और धन मिलता है।
९. हम सरस्वती को हासिल करेंगे। यह हमने पहले ही से निश्चय किया है।

स, श और ज़ (२)

चूँकि ये स, श वृत शब्दों में सबसे पहले और अंत में पढ़े जाते हैं इसलिये यदि शब्द के पहले या अन्त में मात्रा आवे या किसी शब्द मे 'स' अकेला व्यंजन हो तो 'स' को वृत्ताकार न बनाकर 'स' व्यञ्जन को पूरा संकेत लिखना चाहिए। जैसे—नं० १ चित्र नीचे
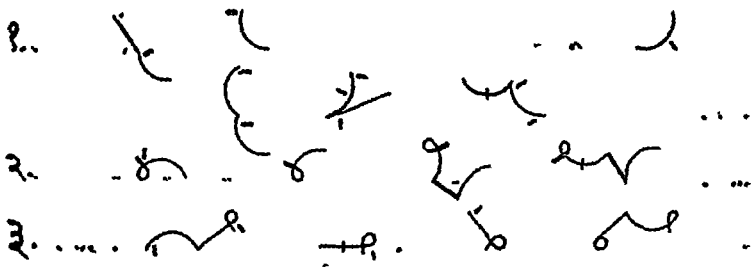
१. पैसा आश शो
ताश ओसारा मूसा

पर यदि आरंभ में 'अ या आ' की मात्रा आवे या अन्त में 'ई' की मात्रा आवे तो आरंभ में एक छोटा डैश लगाकर वृत लिखा जाय और अंत मे वृत को बढ़ा कर एक छोटा सा डैश लगा दिया जाय। इससे आरभ में 'अ या आ' की मात्रा लगी समझी जायगी और अन्त मे 'ई' की मात्रा समझी जायगी। जैसे--नं०२–३

२ असामी असली अस्तबल असेम्बली
३. मारूसी खुशी पासी हँसी

यह तुम पहले ही पढ़ चुके हो कि स और श के उच्चारण में विशेष अंतर नहीं है और मुहावरे से सरलता-पूर्वक समझा भी जा सकता है और इसलिये उनके लिए एक ही संकेत बनाये गए हैं पर यदि उनको 'स' वृत से लिखने में अशुद्धि का डर हो तो 'श' को उसके पूरे संकेत से लिखना

चाहिए। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१. (i) और (ii) और

२

१—(i) सर और शर (बाण) (ii) शव और सव (सैकड़ा) ष के स्थान पर जब 'स' उच्चारण करते हैं तो स वृत या स व्यञ्जन का प्रयोग होता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

२— षटपद षडरस

अभ्यास—२१

जिस जिन चाहे-चाहते-चाहिए छोटा अच्छा
मालूम-मानों मध्य-मतलब
आज-जाय भोजन-समाज-जो जीवन-जरूरी

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

अभ्यास—२२

लाला-लम्बा　　लोग-लेकिन　　लिए-लाये

ऐसा-आशा　　स्वत:　　इसलिये-ईश्वर

अब　　कब　　जब　　तब

---

१. शिवाला शीतल मरुस्थल स्वास्थ्य

२. सुधार अवस्था मसखरा मसाला

३. नासमझ नाशवान चौकस चौदस तस्वीर

४. देश दशमलव दस्तूरी दस्तावेज़

५. गौशाला उल्लास काशमीर संख्या

६. लाला सीताराम और बहुत से लोग बस्ती गये थे। वहाँ से बहुत सी चीजें लाए।

७. ऐसा काम न करो कि लोग तुमको बुरा कहें। ईश्वर से डरो।

८. अगर रोशनी न हुई तो लोग शाम को काम कैसे करेंगे

९. वह ऐसा तेज़ दौड़ा कि गिर पड़ा। इसलिये आज स्कूल नहीं गया।

१०. तुम यहाँ कब आये। जब से तुम यहाँ थे तब से मैं भी था। अब चलो घर चलें।

सर्वनाम

सर्वनाम

सर्वनाम में अधिकतर शब्द-चिन्हों का ही प्रयोग किया गया है। बहुत से सर्वनाम चिन्ह पहले आ चुके हैं और बहुत से अभी बाकी हैं। इनको किन संकेतों का सहारा लेकर बनाया गया है, वह यहाँ पर दिये जाते हैं।

स न रा का को ए

में पर

मूल सर्वनाम में उपरोक्त चिन्ह लगाकर गरदान बनाई गई है। प्रवाह का विचार कर कभी कभी ये चिन्ह उलट पलट दिये गए हैं। जैसे—'स' के लिए। 'र' का चिन्ह कभी पहले और कभी बाद में आया है जैसे—हमारा। इसमें 'र' का चिन्ह पहले आया है।

पूरी सूची अगले पृष्ठ-पर दी जाती है। इसको ध्यान से समझ कर याद करने में बड़ी सरलता पड़ेगी।

१.	मैं	मुझसे	मैंने	मेरा	मुझको	मुझे	मुझमें	मुझपर
२.	उस	उससे	उसने	उसका	उसको	उसे	उसमें	उसपर
३.	हम	हमसे	हमने	हमारा	हमको	हमें	हममें	हमपर
४.	तुम	तुमसे	तुमने	तुम्हारा	तुमको	तुम्हें	तुममें	तुमपर
५	इस	इससे	इसने	इसका	इसको	इसे	इसमें	इसपर
६	इन	इनसे	इनने	इनका	इनको	इन्हें	इनमें	इनपर
७.	उन	उनसे	उनने	उनका	उनको	उन्हें	उनमें	उनपर
८.	आप	आपसे	आपने	आपका	आपको	×	आपमें	आपपर
९.	जिस	जिससे	जिसने	जिसका	जिसको	जिसे	जिसमें	जिसपर
१०.	तिस	तिससे	तिसने	तिसका	तिसको	तिसे	तिसमें	तिसपर
११.	किस	किससे	किसने	किसका	किसको	किसे	किसमें	किसपर

कुछ और सर्वनाम

१२.	जो	जो लोग	कौन	कुछ	कैसा	किसी
१३.	सो	कोई	कई	ऐसा	जैसा	तैसा
१४.	वैसा	क्या	यह	ये	वह	वे

'भी' के लिये १५-नं० १ का चिन्ह और 'ही' के लिए १५-नं० २ का चिन्ह निरधारित किया गया है। जैसे—नं० १५

नं० १५-पहली लाइन—कभी जभी तभी अभी

नं० १५-दूसरी लाइन—मैंही तूही हमही वही यही येही

नं० १५-तीसरी लाइन—मैंभी हमभी तुमभी इसी उसी

आदि—

तरह का चिन्ह 'त' लगाकर बनता है जैसे—नं० १६

१६. जिस तरस किस तरह इस तरह उस तरह

नोट—(१) स्थान का पूरा ध्यान रहे। जो चिन्ह लाइन के ऊपर है वे ऊपर लिखे जायें और जो चिन्ह लाइन पर हैं, वह लाइन पर लिखे जायँ। लाइन के ऊपर और लाइन पर के शब्दों का पूरा विचार न करने से अर्थ में बड़ा अंतर पड़ जायगा। जैसे—

मैं, उस, हम, तुम।

(२) लिङ्ग-भेद से चिन्हों में अंतर नहीं पड़ता। जैसे—

कैसा कैसे कैसी, ऐसा ऐसे ऐसी।

(३) हिन्दी भाषा में सर्वनाम का अत्यधिक प्रयोग होता है अतः विद्यार्थियों को इस प्रकरण को आजिह्व कर लेना चाहिए। जिसकी लेखनी से ये जितना ही अधिक निस्सृत होगा उतना ही अधिक सफल लेखक बन सकेगा।

अभ्यास—२३

अभ्यास—२४

१. जो सो यह वह वे कौन कोई
२. थे मैं तुम मुझको मेरा तुम्हारा हमारा
३. इनमें इनपर उसका हमारा हमपर तुमपर
४. ही तुम-भी इस तरह उस-तरह किस-तरह
५. जो लोग कैसा क्या कभी अभी
६ तभी मैंही वह-भी तूही तुमसे मुझसे
७. सुन्दरवन एक जङ्गल है। इसमें कई किस्म के जानवर कुछ छोटे, कुछ बड़े रहते हैं। जो जिसको पाता है खा जाता है। कोई किसी का विचार नहीं रखता। जिस-तरह के जानवर यहाँ रहते हैं उनसे किसी-तरह भी जान छुड़ाना मुश्किल है।
८. उसने उसकी कलम और उसकी ही स्याही से आप कई तसवीरें खींची। न तुमको बुलाया न तुम्हारे पास आया। यह मुझमें कमी थी कि मैंने तुमको, न तुम्हारे बहन को इसकी कोई सूचना दी जिससे तुम गुस्सा हो गये।

अभ्यास—२५

[नोट—नीचे के वाक्यों में करीब २ सब पिछले शब्द-चिन्ह आ गये हैं।]

१. उसने उसको एक पैसा दिया।
२. बहुत बड़ी बात और बाद में बुरी बात दोनों बुरी है।
३. अब तुम कब आओगे। जिस-तरह भी हो उसको साथ लेकर अति तेजी से आना।

४. वह यहाँ वहाँ जहाँ कहीं भी हो सका गया पर मार खाने के सिवा और कुछ नहीं पाया ।

५ ईश्वर स्वतः कुछ नहीं करता लेकिन वह हमारे, तुम्हारे या उनके द्वारा सारा काम करता है ।

६. यदि तुम चाहो तो एक अथवा दो अमरूद खा सकते हो ।

७. वे बाजार गये थे । वहाँ से भाँति भाँति और तौर-तौर के खिलौना इत्यादि अत्यन्त सस्ते दाम पर लाए । क्या अब आशा की जाय कि लड़के खुश होंगे ।

८ सामने जो लाला साहब लम्बी छड़ी लिये खड़े हैं उनके द्वारा कई ऐसे काम हुए हैं जिनको आज छोटे बड़े सब मानते हैं । अतः पहले उनकी बात और बाद में उनके साथी की बात मानी जाती है ।

९. सुबह उठकर सबक याद करना चाहिए । यह जीवन के लिए जरूरी है । विद्या से सम्बन्ध रखने वाले समाज को इस ओर सब लोगों का ध्यान खींचना चाहिए ।

१०. दान में रुपया-गाय आदि सब कुछ देना चाहिये । इसके सबब से सम्पूर्ण काम तथा धन मिलता है । रात-दिन, औरत-मरद सबको जब कभी समय मिले, थोड़ा बहुत जो कुछ हो सके, यह काम करे । इस तरह हाथ जोड़े जिससे मालूम हो मानों और कोई काम से कुछ मतलब ही नहीं है तब अच्छा फल होता है ।

'त' का प्रयोग

एक छोटा सा घुमावदार आँकड़ा व्यंजन की सरल रेखा के अंत में जब बायें से दाहिने तरफ जोड़ा जाता है तो उससे 'त' का अर्थ निकलता है। यह आँकड़ा कवर्ग में ऊपर की तरफ और य, र (ऊ), व और ह में बाएँ तरफ लगना है।
जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१.— १. ... २... ...३... ...
४... ...५. ...

२.— १. ... २. ... ३. ...
४ ... ५. ...

३.— १ ... १ ... २ ... १... ...

४.— ...

लेकिन ...

५.— ...

६.— ...

७.— ...

८.— ... लेकिन ...

१. रत २. पत ३. खत
४. गत ५. ढत

व्यंजन की वक्र रेखा के अंत में यह छोटा आँकड़ा घुमाव के साथ अंदर की तरफ लगता है और उसमें एक लम्बाकार छोटी सी आड़ी रेखा हल्के डैश के रूप में लगा दी जाती है। वक्र रेखा में ऐसे डैश लगे हुए आँकड़े से भी 'त' पढ़ा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ ८०

१. सत २. लत ३. ड़त

४. मत ५. नत

केवल क्रिया के साथ इस घुमावदार आँकड़े का अर्थ 'ता, ती, ते' होता है और वाक्य में मुहावरे से अर्थ लगाकर समझा जाता है कि स्थान विशेष पर उसका अर्थ क्या है, ता, ती या ते। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ ८०

१. मैं जाता हूँ। यहाँ आँकड़े का अर्थ 'ता' है। यदि स्त्रीलिङ्ग में हो तो इसका अर्थ 'ती' होगा।

२. वे जाते हैं। इस वाक्य में इस आँकड़े का अर्थ 'ते' होगा। बहुवचन है।

संज्ञा के साथ यह आँकड़ा व्यंजन की सरल और वक्र दोनों रेखाओं में केवल 'त' का अर्थ देता है। यदि कोई स्वर 'त' के पश्चात आता है तो 'त' का आँकड़ा नहीं बनाया जाता, पूरी रेखा लिखी जाती है जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ ८०

पोत गोत भात मात नात सात

लेकिन - पोता गोता माता नाता

यह 'त' का आँकड़ा व्यंजन के सरल रेखाओं में लगकर बीच में भी आता है और इस तरह मिलाया जाता है। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ ८०

पतप पतक रतर कतक कतप चतट

जहाँ ठीक न मिले वहाँ संकेत पूरा लिखा जाय। जैसे—
नं० ६ चित्र पृष्ठ ८०

रतह आदि

जब 'त' बीच में आता है तो यह आँकड़ा केवल 'त' का ही उच्चारण देता है 'ता, ती, ते' का नहीं। यदि 'त' के पश्चात् कोई स्वर आता है तो वह अगले व्यंजन के पहले नियमानुसार लगाकर प्रगट किया जाता है। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ ८०

जतन जताना जोतना पोतना पोताना पतला पुतला

बीच में यह 'त' का आँकड़ा केवल सरल रेखा के अंत में लगकर आता है, वक्र रेखा के अंत में लगकर बीच में नहीं आता। जैसे—नं० ८ चित्र पृष्ठ ८०

पताका — लेकिन — मतलब नतीजा

अभ्यास—२६
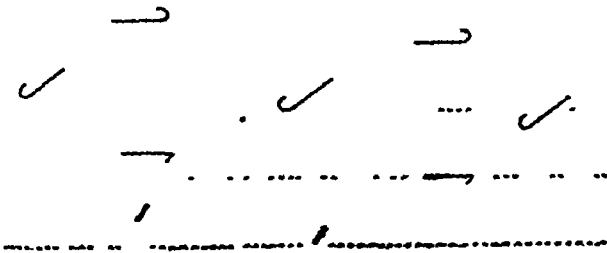
कहते-ताकत वक्त-किताब

वास्तव-अथवा वास्ते सर्वथा

एकदम एकट्ठा

ज्यादा चीज़

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

१०.

अभ्यास—२७

१

३.

४.

आवश्यक-शिकायत शक्ति-सकते-सके
तथा-तक-ताईं तो तथापि
अन्य-नाई-नया नीचे-नित्य-निरा

—:o:—

१. खाता खेत मारता ढोता रोती हँसती
२. अस्त आदत आपत एकांत औसत आगत विपत
३. कतरना करता काढता कीमत कौशिल गरजता
४. असंगत छाता छूता जाकता नाता नीति पढ़ता
५. कतार वीरता भारत स्थानोचित गंम्भीरता
६. तुम निरे मूर्ख हो। कोई अन्य नई बात बोलो। नित्य नित्य वही बात कहते रहने से लोग नीचे गिरते हैं।
७. तुम्हारी शिकायत सुनते सुनते जी ऊब गया। अब यह आवश्यक है कि जहाँ-तक हो सके शक्ति भर तुम सुधारने की कोशिश करो, नहीं तो पिटोगे।
८. तुम तथा तुम्हारे दोस्त हमारे लड़के की नाईं गेंद नहीं खेल सकते तथापि खेलते रहो, आदत पड़ेगी ही।

'न' का प्रयोग

जिस तरह किसी व्यंजन में बायें से दाहिने तरफ का घुमावदार आँकड़ा लगाने से 'त' बनता है उसी तरह यदि दाहिने से बाएँ की तरफ घुमावदार एक छोटा सा आँकड़ा व्यंजन की सरल रेखा के अंत में लगाया जाय तो 'न' बनता है। जैसे—नं० १ नीचे
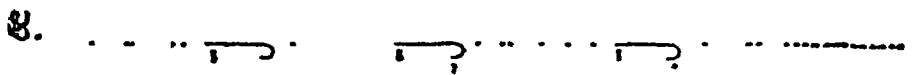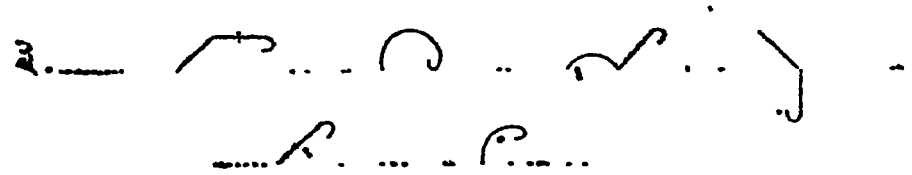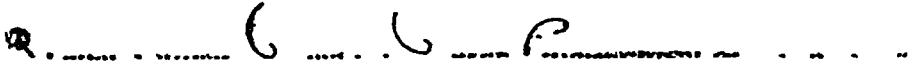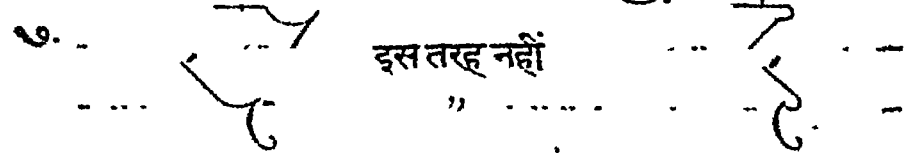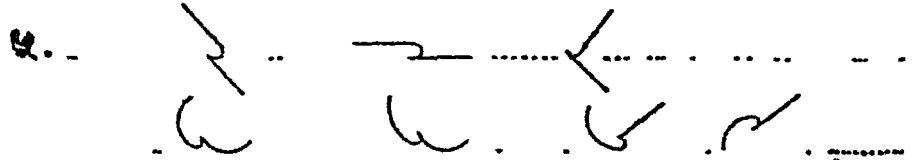
वक्र रेखा में यह ऑंकड़ा उसके अंत में अंदर एक छोटे घुमाव के रूप में लगाया जाता है। इसके और 'त' के ऑंकड़े में केवल इतना ही अंतर होता है कि 'त' के ऑकड़े में एक छोटा सा हलका लम्बाकार डैश लगा रहता है और 'न' के ऑंकड़े मे कोई डैश आदि नहीं रहता। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ ८५

२—दन सन लन आदि

क्रिया के अंत मे इस ऑकड़े का उच्चारण 'ना या ने' और कभी कभी 'नी' मुहावरे के अनुसार होता है। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ ८५

३—रखना-ने-नी लड़ना-ने मारना-ने पीटना-ने रोना-ने लेना-ने-नी

संज्ञा के अंत में इस ऑकड़े का उच्चारण केवल 'न' होता है। यदि कोई मात्रा 'न' के पश्चात् आती है तो 'न' का ऑकड़ा न लिखकर पूरी रेखा लिखी जायगी। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ ८५

४—कान काना काने आदि
परन्तु — शान मान पान आदि

यह 'न' का ऑकड़ा 'त' ऑंकड़े के समान वीच में भी आता है। केवल अंतर यह है कि 'त' का ऑकड़ा वक्र रेखा में लग कर बीच में नहीं आता पर यह 'न' का ऑकड़ा वक्र रेखा में भी लगकर वीच में अता है। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ ८५

५—पनप कनक चनप
तनन सनन सनर लनर

जब यह आँकड़ा किसी व्यंजन की दो रेखाओं के बीच में आता है तो इसका अर्थ केवल 'न' होता है और मात्रा आदि अगली रेखा के पहले नियमानुसार लगाई जाती हैं।
जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ ८५

६—पनसारी बनिज बनेठी चूनादानी ताना

बीच में जब 'न' आँकड़े के साथ दूसरा अक्षर सरलता-पूर्वक न मिल सकता हो या जब प्रवाह में रुकावट का डर हो तो बीच में 'न' का आँकड़ा न रखकर पूरा 'न' लिखना चाहिए। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ ८५

७—खनिज
पानदान

पहले तरीके लिखना ठीक है दूसरे तरीके से नहीं।

[नोट—प्रवाह से यह मतलब होता कि जहाँ तक हो सके यदि संकेत आगे को बढ़ते हैं तो आगे ही को बढ़ते जायँ पीछे को न हटें। ऐसा करने से रुकावट होती है जो इस संकेत-लिपि के लिए अत्यन्त हानिकारक है।]

शब्द-चिन्ह

१.

२.

३.

जौन-ज्यों क्यों तौन-त्यों यों
किन किनसे किनने किन्हें किनका किनको किनमें किनपर
जिन जिनसे जिनने जिन्हें जिनका जिनको जिनमें जिनपर

१.

२

३. आदि

४.

अपना-नी-ने इतना-नी-ने उतना-नी-ने
कितना जितना तितना
दुगुना तिगुना आदि, 'न' को संख्या के नीचे लिखने से गुना
तमाम-ताज्जुब तुरन्त-तले तनिक-कतई

अभ्यास—२८

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

अभ्यास—२६

१. जनन चरन पसन्द दमन नेशन निशान
२. निम्न उठाना बतलाना भावना किसान
३. कौनसिल चेतावनी कानून जलपान पसीना
४. मुसलमान फिलस्तीन आदेशानुसार जनानी
५. अनुसार कामिनी कारखानी मरदानी
६. लड़के अपने अपने खिलौने और पकवान लिए खेलने जा रहे थे। वे जितना ही खेलेंगे तन्दुरुस्त होंगे।
७. यह बड़े ताज्जुब की बात है कि वह दुगुना, तिगुना, चौगुना तो खाता है फिर भी उतना काम नहीं करता जितना कम खानेवाले।
८. हमको कितना ही काम करना पड़े और इस बात का कतई तनिक भी विचार न करें तुरन्त जो काम हो भेज दें।
९. मैं इतना काम तो तुरन्त ही कर सकता हूँ। मेरे नीचे और भी बहुत से काम करने वाले आदमी हैं जो तमाम कामों को बड़ी आसानी से कर सकते हैं।
१०. चिराग के तले हमेशा अँधेरा ही रहता है।

'र' का प्रयोग

१
२
३
४
या
५
या
६
७.

र का प्रयोग

जिस तरह सरल व्यंजन के अंत में बाएँ तरफ आँकड़ा लगाने से 'न' पढ़ा जाता है उसी तरह सरल व्यंजन के आरंभ में बाएँ तरफ बाएँ से दाहिने को घुमाव देकर जो आँकड़ा लगाया जाता है उससे नीचे का र लटकन, रेफा या ऋ की मात्रा पढ़ी जाती है। 'चक्र' शब्द में 'र' लटकन, 'धर्म' में रेफा और 'कृपा' में ऋ की मात्रा लगी है। कवर्ग में यह आँकड़ा नीचे की तरफ लगता है। जैसे—नं० १ चित्र पृष्ठ ९२

१—प्र - पृ   क्र - कृ   च्र - चृ   ट्र - ट्री   आदि

'य, र (ऊ)', 'ल', और 'ह' के संकेतों में यह आँकड़ा नहीं लगता बल्कि पूरा लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ ९२

२—हर   वर   यर   आदि

वक्र व्यंजनों में भी यह 'न' की तरह व्यंजन के अंत के बदले व्यंजन के आरंभ में उनके भीतर लगाया जाता है। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ ९२

३—त्र - तृ   द्र - दृ   स्र - स   म्र - मृ   न्र - नृ

ल और र (नी) में यह आँकड़ा नहीं लगता बल्कि पूरा लिखा जाता है। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ ९२

४—लर या लर   ,   रर या रर   आदि

जिस व्यंजन में यह 'र' का आँकड़ा लगता है पहले वह व्यंजन पढ़ा जाता है और फिर यह आँकड़ा पढ़ा जाता है। पहले आँकड़ा पढ़कर व्यंजन नहीं पढ़ा जाता। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ ९२

५—क्र - कृ   प्र - पृ   त्र - तृ   म्र - मृ   न्र - नृ

नियमानुसार जो मात्राएँ इस 'र' आँकड़ा में लगे हुए व्यंजन के पहले आती हैं वह पहले पढ़ी जाती हैं और जो

मात्राएँ व्यंजन के बाद आती हैं, वह व्यंजन के बाद न पढ़ी जाकर 'र' आँकड़े के बाद पढ़ी जाती हैं, क्योंकि व्यंजन और 'र' आँकड़े के बीच कोई मात्रा नहीं होती। जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ ९२

६—प्रेस प्रेम प्रलाप श्री अत्र प्रस्थान
त्रिजटा प्रोग्राम बृटेन प्रोहित पृथ्वी
कर्तृ शिप्रा

ऐसे शब्दों को भी इस 'र' आँकड़े से लिख सकते हैं जहाँ व्यंजन और 'र' आँकड़े के बीच कोई दीर्घ स्वर न आकर छोटी अ, इ या उ की मात्राएँ आती हैं। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ ९२

७—पेपर पीपर बरसात मरना झरना
डरना परम गरम जरमनी
फरमान धर्म कर्म नर्म फिर
कानपुर

पर यदि पहले व्यंजन और 'र' के बीच कोई दूसरी दीर्घ मात्रा आवे या 'र' अपने पहले आनेवाले व्यंजन के साथ न पढ़ा जाकर अकेला या बादवाले व्यंजन के साथ पढ़ा जाय तो 'र' का आँकड़ा न लिखा जाकर 'र' पूरा लिखा जाता है। जैसे—'पपरा' में 'र' 'प' के साथ न पढ़ा जाकर अकेला पढ़ा जाता है और 'चरस' में 'र' अपने पहले व्यंजन 'च' के साथ न पढ़ा जाकर बाद के व्यंजन 'स' के साथ पढ़ा जाता है। इसलिए यहाँ 'र' का पूरा संकेत लिखा जायगा, आँकड़ा

नहीं। जैसे—नं० ८ चित्र पृष्ठ ६२

८—पपरा मकरी बाजरा भुखमरा

तवर्ग और 'स' के अक्षर दाएँ-बाएँ दोनों तरफ से लिखे जाते हैं। 'र' का आँकड़ा भी इसीलिये दोनों तरफ लगता है। जैसे—नं० ९ चित्र नीचे

९.

१०.

११.

१२.

९— त्र, तृ स्र, सृ

इनमें स्वर लगाने का वही नियम है जो इन व्यंजनों के अकेले होने पर लागू होता है अर्थात् यदि किसी शब्द में यह अकेला व्यंजन हो और उसके पहले कोई मात्रा हो—चाहे उस व्यंजन के बाद भी मात्रा हो—तो 'र' आँकड़ा सहित व्यंजन का बायाँ समूह आता है जैसे—नं० १० चित्र ऊपर

१०—इत्र अत्र — आदि

और यदि मात्रा बाद में आती है—पहले नहीं—तो दायाँ समूह लिखा जाता है। जैसे—नं० ११ चित्र पृष्ठ ९५

११—थ्रू   श्री   आदि

जब ये दूसरे व्यजन से मिलते हैं तो सुचारुता के विचार से दाहिने-बाएँ दोनों तरफ लिखे जाते हैं जैसे—नं० १२ चित्र पृष्ठ ९५

१२—त्रिकाल   त्रिशंकु   आश्रम   श्रीमान

अभ्यास—३०

१

२.

३.

परन्तु-प्रायः   प्रत्येक   पूर्वक-प्रति-प्रतिकूल

तरह-तरफ   तरसों-बेहतर   भीतर-तरकीब

कर-करके-कारण   करीब-किनारे

या

अभ्यास—३१

१ [shorthand outlines]

२ [shorthand outlines]

३ [shorthand outlines]

४ [shorthand outlines]

पास - पश्चात् पेश्तर आपस
बाहर - खराब देर दूर - धीरे
इधर उधर किधर जिधर तिधर
जैसा वैसा तैसा

१. गर्व आम्र ऊपर चर्म चरस परसन प्रसन्न
२. प्रताप बरतन प्रदेश बरधा प्रजा चरचा
३. प्रगट प्रकोप निरचक्र गरभवती करनाल
४. अप्रसन्न दर्शन अपरिचित चारुपात्र निरजोश पुरजोश
५. गर्वीला चर्मसीमा नौकर पराक्रम श्रम
६. जैसा करोगे वैसा फल मिलेगा। बच कर किधर भागोगे। जिधर भागोगे तिधर ही मार पड़ेगी।
७. आपस में मिलकर रहना चाहिए। बाहर बहुत देर तक या बहुत दूर तक घूमना खराब बात है।
८. खेलने के पश्चात् तुमको इधर उधर न घूमना चाहिए। घर पर अपने बाप के पास बैठकर पढ़ना चाहिए। पेश्तर तो तुम ऐसा नहीं करते थे। धीरे २ तुमको आदत सुधारना चाहिए।

'ल' व्यंजन

जो आँकड़ा सरल रेखा के आरम्भ में बाएँ से दाहिने की ओर लिखे जाने पर 'र' लटकन प्रगट करता है, वही आँकड़ा यदि दाहिने से बाएँ को लिखा जाता है तो 'ल' प्रगट करता है। कवर्ग में यह आँकड़ा आरंभ में ऊपर की ओर लगता है। यह आँकड़ा भी 'र' के समान व्यंजन के बाद ही पढ़ा जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

1.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.
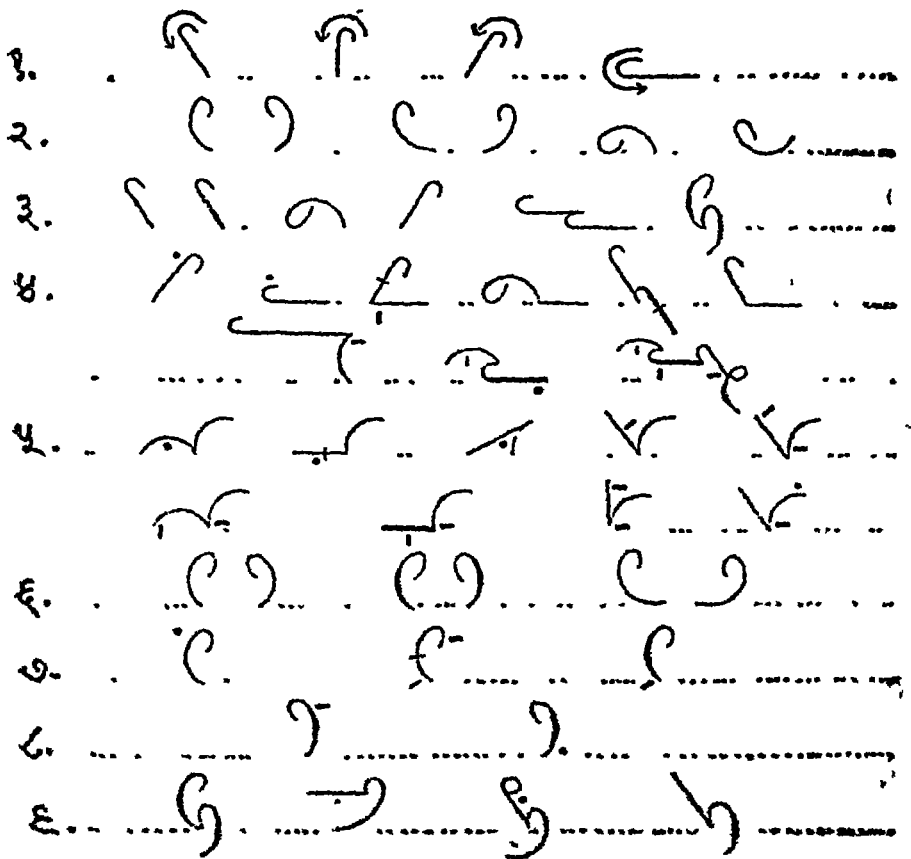
१— पल दल चल फल

वक्र रेखाओं में यह आँकड़ा उनके भीतर आरंभ में 'र'

के ऑंकड़े के स्थान पर उससे बड़ा फैला हुआ ऑंकड़ा बनाकर प्रगट किया जाता है। जैसे—न० २ चि० पृ० ९९

२— तल सल मल नल

प्रारंभ या बीच में 'र' की तरह जिस व्यंजन में यह 'ल' का ऑंकड़ा लगा रहता है अधिकतर उसके और 'ल' के बीच मे कोई स्वर नहीं आता पर सुचारुता के विचार से कही २ अ, इ, उ, की ह्रस्व मात्राएँ रहने पर भी यह ऑंकड़ा लगाकर 'ल' लिखा जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० ९९

३—पल, बल या बिल, मल चल कलकल दलदल

र के ऑंकड़े की भाँति ल का ऑंकड़ा भी य, र, ल, व और ह मे नहीं लगता।

नियमानुसार आदि और मध्य में कहीं पर भी जो मात्रा व्यंजन के पहले आती है वह व्यंजन के पहले और जो मात्रा व्यंजन के बाद आती है वह 'ल' के बाद पढ़ी जाती है क्योंकि व्यंजन और ल के बीच कोई मात्रा नहीं आती। ह्रस्व स्वर, अ, इ, उ की जो मात्रा आती है वह लगाई नहीं जाती आप ही पढ़ी जाती है। जैसे—नं० ४ चित्र पृ० ९९

४—अचल अकल छिलका मुल्क पलभर पलक
कलकत्ता मंगली मंगलाप्रसाद

'ल के ऑंकड़े और उसके पहले व्यंजन के बीच यदि 'र' ऑंकड़े के समान अ, इ, उ की ह्रस्व मात्रा को छोड़ कर कोई दूसरी दीर्घ मात्रा आवे या 'ल' अपने पहले आने वाले व्यंजन के साथ न पढ़ा जाकर अकेला या बादवाले व्यंजन के साथ पढ़ा जाय तो 'ल' का ऑंकड़ा न लिखा जाकर 'ल' पूरा लिखा जाता है जैसे

पुतला में 'ला' त के साथ न पढ़ा जाकर अकेला पढ़ा जाता है। इसलिए त में ल का आँकड़ा न लगाकर पूरा लिखा जायगा। जैसे—नं० ५ चि० पृ०-९९

५— मेल खेल रेल पोल पाला
माला गोला टला पिला

जैसे पहले ही बताया जा चुका है तवर्ग और स के अक्षर दाएँ-बाएँ दोनों तरफ लिखे जाते हैं और इसलिए 'ल' का आँकड़ा भी दोनों तरफ लगता है। जैसे—नं० ६ चि० पृ० ९९

६— तल दल सल

इनमें स्वर लगाने का भी वही नियम है जो व्यंजन के अकेले रहने पर लागू होता है अर्थात् यदि किसी शब्द में यह अकेला व्यंजन हो और उसके पहले कोई मात्रा हो—चाहे फिर उस व्यंजन के बाद भी कोई मात्रा हो—तो ल आँकड़ा लगे हुए व्यंजन का बायाँ समूह आता है। जैसे—नं० ७ चि० पृ० ९९

७—अतल उथला ऊदल

और यदि मात्रा बाद में आती है—पहले नहीं—तो दाँया समूह लिखा जाता है। जैसे—नं० ८ चि० पृ० ९९

८—दला दली

जब यह दूसरे व्यंजन से मिलता है तो सुचारुता के विचार से सुविधानुसार दाएँ-बाएँ दोनों तरफ लिखा जाता है। जैसे—नं० ९ चि० पृ० ९९

९— दलदल कौशल स्पेशल पैदल

शब्द-चिन्ह

१

२.

३.

४

काला-कल केवल-मुश्किल

काबिल-बिला बल्कि बिल्कुल - कब्ल - बल

हिस्सा-हफ्ता हमेशा हिन्दुस्तान-हिन्दू-हिन्दी

बारे-बार मेम्बर नम्बर

१.

२.

३.

जल-जलसा जेल जल्दी-बिजली

साधारण-सारा सबेरा-सर्व सिर्फ-शुरू-खूबसूरत

आ आए आता आना

अभ्यास—३२

अभ्यास—३२

१. अकुल अखिल नाला अचल अटकल फुटकल

२, उल्लू कलफ पुतली कुलवान कौशल

३. बुलबुला तलफना पलथी मलका मेला भोला

४. मलमल पलना पतलून पतली सरल साइकिल

५. कलमतराश तलवाना मलमल् अधखिला

६. आप कब आयेंगे। जल्दी आना, अभी तो बहुत सबेरा है, नहीं देर हो जायगी। बिना आपके आए काम न चलेगा।

७ कौंसिल के कई मेम्बरों ने जेल का निरीक्षण कर आने पर अपनी राय पेश कर दी।

८ मैं सबेरे उठकर सिर्फ दूध पीता हूँ। इससे बदन पर रौनक आती है और खूबसूरती बढ़ती है।

९. आज के साधारण जलसा में कई प्रश्नों पर अच्छा वादविवाद रहा। नगर में जल, बिजली, जेल आदि के प्रबन्ध पर बहस रही। शुरू में तो कुछ गर्मागरमी रही परन्तु जल्दी ही सारा काम खतम हो गया।

स्व, स्त, या स्थ, दार या त्र, म्प या म्ब के आँकड़े

(१)

जो छोटा वृत्त किसी व्यंजन के साथ लगाने से 'स' को सूचित करता है यदि वही वृत्त बड़ा कर दिया जाय और 'स' वृत्त के ही स्थान पर किसी व्यंजन के आरंभ में लगाया जाय तो वह बड़ा वृत्त स्व को प्रगट करता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१. स्वर स्वतः स्वप्न स्वामिन स्वागत

इसमें मात्रादि भी 'स' वृत्त के नियमानुसार ही लगती हैं और यदि इस स्व, वृत्त के पहले कोई मात्रा आवे—चाहे वह मात्रा 'अ या आ' की ही क्यों न हो—तो शब्द संकेत पूरे 'स' और 'व' को मिलाकार लिखा जाता है जैसे—नं० २ चि० ऊपर

२—आश्वासन अश्व यशस्वी तेजस्वी

इस 'स्व' वृत्त का प्रयोग बीच और अंत में नहीं होता। य, व, और ह के आरंभ में भी यह वृत्त नहीं लगता। यदि बीच में आवे तो 'स' वृत्त और 'व' पूरा लिखा जाता है।

(२)

इसी तरह छोटा सा एक चाप (Arc) जब किसी सरल या वक्र व्यंजन के आरंभ या अंत में लगाया जाता है तो वह स्त, स्थ या ष्ट को सूचित करता है। चाप वृत्त की रेखा (परिधि) के एक छोटे हिस्से को कहते हैं। इस चाप को व्यंजन में लगाते समय इस बात का खूब ध्यान रखना चाहिए कि यह आँकड़ा बढ़कर

किसी दशा मे भी व्यंजन के आधे के ऊपर न जाने पावे। जहा तक हो यह आँकड़ा व्यंजन के आधे से कम पर ही लगाया जाय। जैसे—नं० १ चित्र नीचे –

१.

२.

पर
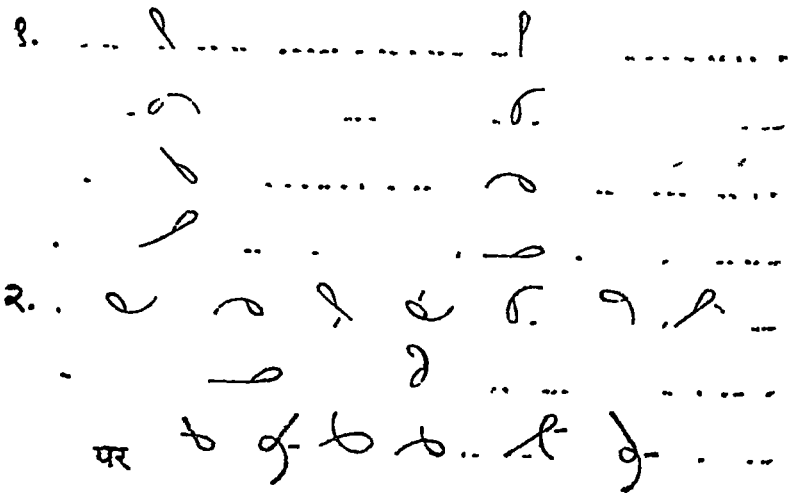
स्त - स्थ - ष्ट—प ; स्त - स्थ - ष्ट—ट

स्त - स्थ - ष्ट—म ; स्त - स्थ - ष्ट—ल

प—स्त - स्थ - ष्ट , म—स्त - स्थ - ष्ट

र—स्त - स्थ - ष्ट ; क—स्त - स्थ - ष्ट

यह चाप 'स' वृत्त के नियमों के अनुसार लिखा और पढ़ा जाता है और स्वर आ द के भी रखने के वही नियम हैं। अंतर केवल यह होता है कि आरंभ में 'अ य आ' आने पर भी पूरा संकेत लिखा जाता है पर अंत में 'ई' आने पर पूरा संकेत न लिखकर 'स' के नियमानुसार वह चाप ज़रा डैश के रूप मे बढ़ा दिया जाता है। आदि या अंत में कोई दूसरी मात्राएँ आने पर 'स' वृत्त के समान, यह आँकड़ा न लिखा जाकर पूरा संकेत के

रूप में लिखा जायगा। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ १०६

२—स्तन मस्त स्तूप स्थान स्थल स्थिर रुष्ट कष्ट दृष्टि

पर—बस्ती जस्ता सस्ती मस्ती रस्ता बस्ता

नोट—यह आँकड़ा बीच में नहीं आता।

(३)

किसी व्यंजन के अंत में 'स्थ' चाप की तरह एक बड़ा चाप लगाने से शब्द के अंत में 'दार-धार या त्र' पढ़ा जाता है। यह चाप व्यंजन की आधी रेखा के ऊपर तक जरूर जाना चाहिए। इसके अंत में भी स्वर नहीं आता। यह चाप सरल रेखाओं में 'त' की तरफ और वक्र रेखाओं के अन्दर लगाया जाता है। जैसे—नं० १ चि० नीचे

१.

२.

३. त्र = द्र =
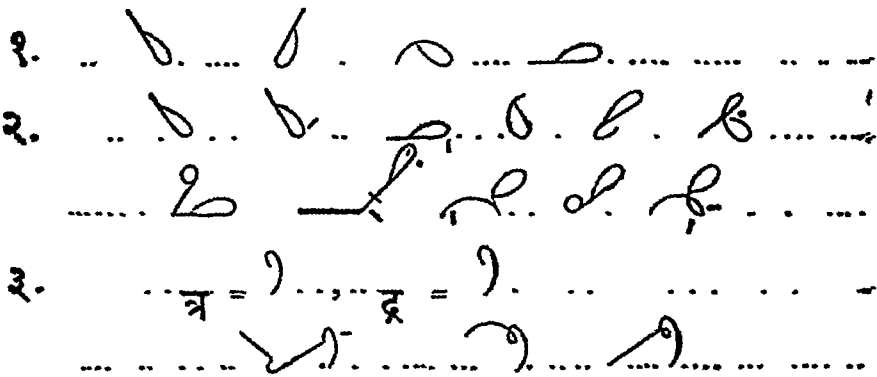
१—प - त्र या प - दार - धार च - त्र या च - दार - धार म - त्र या म - दार - धार क - त्र या क - दार - धार

अकेले व्यंजन वाले शब्द के अंत में इसका अर्थ अधिकतर 'त्र' के अर्थ में होता है पर एक से अधिक व्यंजन वाले शब्दों के अंत में लगाने से यह 'दार या धार' के अर्थ में भी आता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

२— पत्र पुत्र कुत्र तत्र यत्र रिश्तेदार हकदार गद्दारीदार मालदार सरदार मूसलाधार

यदि अंत में 'ई' के अलावा कोई स्वर हो या 'स' के बाद त्र या दार आवे तो त्र या द्र लिखा जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १०७

३— पवित्रा मिस्त्री सरदार

पर यदि अंत में दूसरी मात्राएँ न आकर 'ई' की मात्रा आवे तो घुमावदार चाप को 'स' वृत्त के समान ज़रा आगे बढ़ा कर लिख देने से 'ई' की मात्रा लगी हुई समझी जायगी। जैसे—नं० ४ चित्र नीचे

४.
५.
६
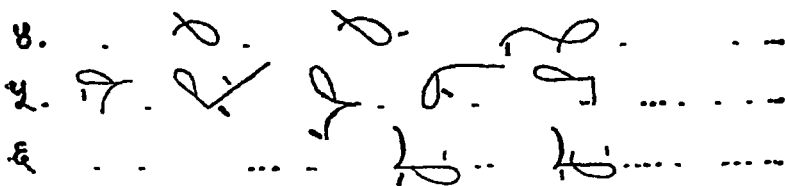
४— पत्री पुत्री ईमानदारी

यह चाप आरंभ में भी आता है पर जब आरंभ में आता है तो केवल 'त्र' या 'त्रि' को सूचित करता है और पहले पढ़ा जाता है। मात्रा आदि नियमानुसार व्यंजन के पहले या बाद में रखी जाती है और इस चाप के बाद पढ़ी जाती है। जैसे—नं० ५ चित्र ऊपर

५— त्रिकाल त्रिपुरारी त्रिशूल त्रैलोक त्रिकूट

जब आँकड़ा सरल रेखा में 'न' के आँकड़े की तरफ लगाया जाता है तो 'दार या धार' के पहले 'न' भी पढ़ा जाता है और यथा-नियम उसे बढ़ा देने से 'ई' की मात्रा लग जाती है। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १०८

६— दूकानदार   दूकानदारी

(४)

'म' व्यंजन को मोटा कर देने से 'प या ब' लग जाता है पर ऐसी दशा में 'म' और 'प या ब' के बीच में कोई मात्रा नहीं आती। म के पहले या 'प या ब' के बाद मात्रा आ सकती है। जैसे—नं० १ चि० नीचे

१. ...

या
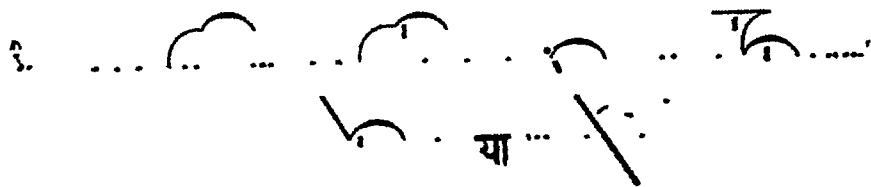
लम्प   लम्बा   अम्बा   कोलम्बो

बम्बा   या   बम्बा

अभ्यास—३४

१. ...

२. ...

३. ...
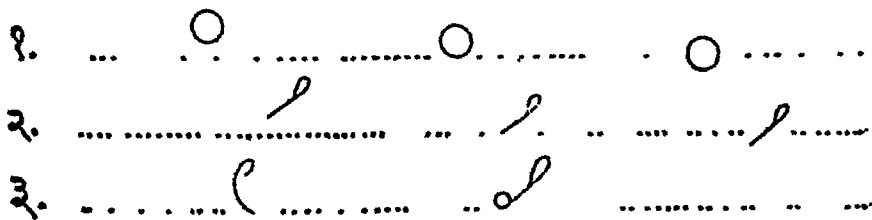
स्वराज्य - स्वास्थ्य   स्वयं - स्वतन्त्रता   स्वरूप-स्वीकार

प्रस्ताव -प्रस्थान   रास्ते - ता   तन्दुरुस्त - ती

अत्र   सर्वत्र

अभ्यास—३५

१. . . . .

२. . . .

३. . . . .

सहायता समेत-सेतमेत सहित-सम्मति
अचम्भा - बारंबार परमात्मा - समाप्त
महाशय - मुसलमान मुसीबत - मुस्लिम

—:०:—

१. स्वच्छंद स्वदेशी स्वागत स्वामिन त्रिपाठी जिम्मेदार
२ दरख्वास्त दस्ताना दस्तावेज दार-मदार ताम्बूल
३. सूत्र योगशास्त्र रोबदार जमादार उदार थानेदार
४. दमदार सुष्टि स्थलचर दुष्ट तम्बाकू दुष्टता
५. समष्टि स्थापना स्पष्ट स्तुति स्थिर सुधाकर
६. महाशय जी आप किसी की मुसीबत को क्या जानें। हमको तो सिर्फ परमात्मा का ही भरोसा है। यदि वह सहायता न करता तो अब तक तो मैं तुम्हारा शिकार बन गया होता।
७' वह चूहे को चूहेदानी समेत उठा ले गया। इसमें अचम्भे की क्या बात है। ऐसा तो वह पहले भी कई बार कर चुका है। जाओ और चूहेदानी सहित उसको बुला लो।
८. हिन्दू और मुसलमानों में जो रोज बारंबार झगड़े होते हैं उसके कई कारणों में से एक मुस्लिम-लीग और हिन्दू-महासभा ऐसी संस्थाओं का होना भी है।
९. अब इन झगड़ों का समाप्त करना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। सेतमेत बैठे २ झगड़ा करना अच्छी बात नहीं। इस विषय में तुम्हारी क्या सम्मति है ?

लिङ्ग और वचन

यह तो तुम पहले ही पढ़ चुके हो कि शब्द-चिन्हों में लिंग का कोई लिहाज नहीं रखा गया। क्रिया-शब्द भी मुहावरे से ही पढ़े जाते हैं। 'वह आता है, वह आती है' आदि। संज्ञा तथा विशेषण शब्द मात्राओं या शब्दों के हेर-फेर से बन जाते हैं जैसे घोड़ी-घोड़ा; गाय-बैल, हरा-हरी आदि। इसलिए लिंग आदि के अनुसार शब्दों को बनाने के लिए कोई विशेष नियम की आवश्यकता नहीं है।

वचन

जब किसी शब्द का एक वचन से बहुवचन किया जाता है तो अधिकतर मात्राओं के हेर-फेर से काम चल जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१.
२.
३.
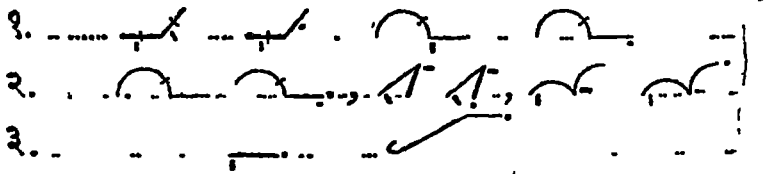
१— घोड़ा घोड़े लड़का लड़के

पर जहाँ-मात्राओं का ही हेर-फेर से नहीं रहा वहाँ बहुवचन 'य, यें, ओं, यॉ' आदि लग कर बनते हैं उस दशा में शब्द के अंत में संकेत के पास ही एक बिन्दु रख दिया जाता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

२—लड़की - लड़कियाँ, राजा-राजाओं, माला-मालाएँ

दाहिने की तरफ रेफा के स्थान पर लिखा जाकर किसी व्यञ्जन से मिले तो उसमें स या स्व वृत के बाद 'र' भी लिखा हुआ समझा जायगा। जैसे—नं० १ चि० पृ० ११३

१— सफर सफरी सब्र सिखरन सुवर्ण स्वीकृत स्वाक्षर

दो व्यंजनों की सरल रेखा में जहाँ कोण नहीं बनता वहाँ 'र' की तरफ वृत बनाने से 'र' लगा हुआ समझा जाता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० ११३

२— कसकर डसटर सपर-सपर परस्पर

स्व वृत बीच में नहीं लगाया जाता।

पर जब दो सरल व्यंजन या एक सरल और एक वक्र व्यंजन के बीच कोण बनता है तो दोनों 'स' वृत और 'र' का आँकड़ा अलग-अलग दिखाया जाना चाहिए। जैसे—नं० ३ चि० पृ० ११३

३— डिसाइनर मिस्री एक्सप्रेस बीस-चर तस्वीर

यदि किसी सरल व्यंजन रेखा के बाद 'स' वृत है और फिर 'र' का आँकड़ा मिला हुआ कवर्ग के अक्षर आवें जैसे 'कर, गर' आदि तो इस तरह लिखना चाहिए। जैसे—नं० ४ चि० पृ० ११३

४— पुष्कर चूसकर डसकर

वक्र रेखा में 'स' वृत, आदि या मध्य में रेफा वाले आँकड़े के भीतर इस प्रकार लिखा जाता है कि दोनों वृत और रेफा साफ साफ प्रगट हों। स्व वृत वक्र रेखा में 'र' के स्थान में नहीं लिखा जाता। जैसे—नं० ५ चि० पृ० ११३

५— सदर समर जसोधर वस्तर दुस्तर मिस्री

इसी तरह 'स' वृत 'ल' के आँकड़े के भीतर अलग से लगाया जाता है चाहे रेखा सरल हो या वक्र इसमें 'स्व' का वृत नहीं लगता। जैसे—नं० ६ चि० पृ० ११३

६— सबल सफल सदल सवल सकल

जब यह 'स' वृत और 'ल' का आँकड़ा बीच में आता है तो भी 'स' वृत उस 'ल' के आँकड़े में इस प्रकार लगाया जाता है कि दोनों साफ २ मिलते हुए भी अलग अलग दिखाई दें। अगर ऐसा न हो सके तो पूरा संकेत लिखा जाय। जैसे—नं० ७ चि० पृ० ११३

७— पशुबल बीसकल बाइसकिल

इनमें स्वर यथा-नियम लगाये जाते हैं अर्थात् यदि 'स' वृत पहले लगता है तो उसकी मात्राएँ व्यंजन के पहले रखी जाती हैं और यदि यह वृत बीच में आता है तो इसकी मात्राएँ अगले व्यंजन के पहले रखी जाती हैं। व्यंजन और 'ल या र' आँकड़े के बीच अ, इ, उ की ह्रस्व मात्राओं को छोड़ कोई दूसरी मात्रा नहीं आती और यह पहले ही बताया जा चुका है कि यह मात्राएँ लगाई नहीं जाती। 'ल या र' के बाद की मात्राएँ व्यञ्जन के बाद रखी जाती हैं। जैसे—नं० ८ चि० पृ० ११३

८— बीसकल बीसोकल बीसकला बीसखेल

तुम यह पढ़ चुके हो कि जब 'र या ल' का आँकड़ा किसी व्यंजन में मिलता है तो या तो उनके बीच कोई मात्रा नहीं रहती या सिर्फ ह्रस्व अ, इ, या उ की मात्रा आती है। जैसे—नं० ९ चि० पृ० ११३

९— प्रेम बल्व प्रतिमा प्लुत

पर यदि 'र और ल' आँकड़े के व्यंजन के बीच दूसरे दीर्घ स्वर आवें और र या ल के बाद ह्रस्व स्वर को छोड़ कर कोई दीर्घ स्वर न आवे, और सुविधानुसार अच्छे संकेत बनें तो उनके बीच की 'आ, ऊ, ए, ओ' की मात्राओं को क्रमशः इन चिन्हों से सूचित कर सकते हैं:—

'आ' चिन्ह आँकड़ा के सिरे पर रखा जाता है पर दूसरे चिन्ह आँकड़े के पास ही व्यंजन के बाद रखे जाते हैं। दूसरी

मात्राएँ यथा-विधि अपने स्थान पर रखी जाती हैं। व्यञ्जन और 'ल या र' आँकड़े के बीच 'ई, औ' आदि की दूसरी मात्राओं के आने पर या 'ल या र' के बाद ऐसी दीर्घ मात्राओं के आने पर जिससे 'ल या र' अपने पहले वाले व्यञ्जन के साथ न पढ़ा जाकर पिछले व्यञ्जन के साथ पढ़ा जाय या अकेला पढ़ा जाय तो संकेत पूरे लिखे जाते हैं। जैसे—नं० १० चि० पृ० ११३

१०—पारसल	घोरतम	मारकेश
मूलधन	भूगोल	
पर - अकोला	मझोला	पतला

सरल रेखा के अन्त में 'न' आँकड़े के स्थान पर यदि 'स' वृत लिख दिया जाय तो 'न' भी लगा हुआ समझा जायगा। जिस व्यञ्जन में वृत इस तरह लगा होगा पहले वह व्यंजन, फिर न का आँकड़ा और अंत में 'स' वृत पढ़ा जायगा। नियमानुसार वृत को डैश रूप में जरा बढ़ा देने से अंत में 'ई' पढ़ी जायगी जैसे—नं० ११ चि० पृ० ११३

११— कंस	हंस	हँसी

वक्र रेखा में यह 'स' वृत 'न' आँकड़े के अंदर अलग से लगाया जाता है पर नियमानुसार वृत को भी डैश रूप में जरा बढ़ा देने से अंत मे 'ई' पढ़ी जायगी। दूसरी मात्राओं के आने पर संकेत यथा-नियम पूरे लिखे जाते हैं। जैसे—नं० १२ चि० पृ० ११३

१२—मानस	मानसी	पर - मनसा
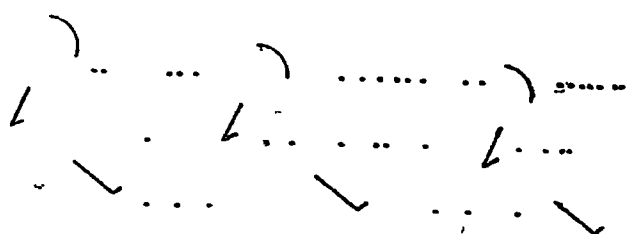
अभ्यास—३६

१

२.

३

४.

५

६

७.

८

९.

१०.

अभ्यास—३७

१. पुष्कल पेशराज बसीकरन पिस्तौल सरकिल

२. सरबराकार सरसत सरकार सफलता

३. सफामैना सचर-चर सचरना सकरपाला सदर

४. कालिमा कालापानी कालधर्म कालचक्र

५. कारखाना कारस्तानी बोल-चाल खेल-कूद

६. इतना बड़ा अर्थात् लंबा-चौड़ा पतलून पहिन कर कहाँ जाने का इरादा है। यह पतलून बड़े होने पर भी ऊँचा है।

७. एक नाव गंगा जी को पार कर रही थी पर बीच धारा में पहुँचते ही डूब गई।

८. परस्पर न लड़ो। हम लोगों के अतिरिक्त भी जो कोई इसे देखता है, बुरा कहता है।

९. इस किस्म का कोई अच्छा उदाहरण खोज निकालो।

र और ल के ऊपर और नीचे लिखे जाने का नियम

जहाँ जहाँ किसी व्यंजन के उच्चारण के लिए ऊपर और नीचे के दोहरे संकेत दिए गए हैं वहाँ स्वरों के बिना प्रयोग के ही उच्चारण करना और सरलतापूर्वक संकेत चिन्हों का लिखा जाना, इन दोनों बातों का पूरा विचार रक्खा गया है। यदि ये दो बातें ध्यान में पूरे तौर पर आ जायँगी तो समझने में बड़ी सरलता होगी। इन्हीं मूलतत्वों पर इन नियमों की रचना की गई है।

१. यदि किसी शब्द में 'र' अकेला व्यंजन हो और यदि

(अ) 'र' के पहले कोई वृत या आँकड़ा न हो तो यदि कोई स्वर पहले आवे तो 'र' नीचे को लिखा जाता है और यदि स्वर पहले न आवे तो 'र' ऊपर को लिखा जाता है। जैसे—नं० १ चि० नीचे

१

२.

३.

४.

५
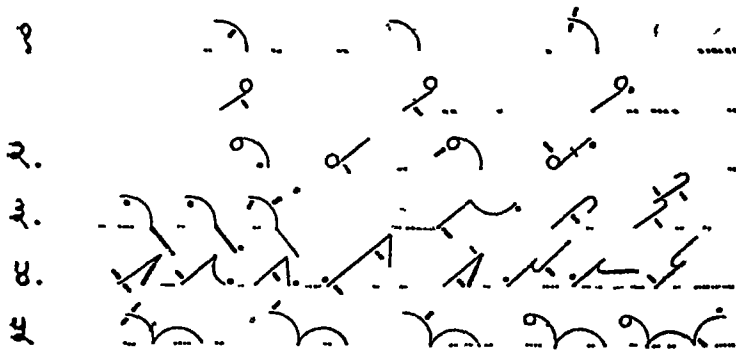
ओर और आर।

['ओर तथा और' के शब्द चिन्ह बन गये हैं]

रोज़ राज़ रीस

(ब) जब 'र' के पहले कोई वृत्त, आँकड़ा या कोई संकेत आता है और उस 'र' संकेत के अंत में कोई स्वर नहीं आता तो 'र' नीचे को लिखा जाता है पर यदि अंत में कोई स्वर आता है तो 'र' ऊपर को लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० १२०

२— सीर सीरा सार साड़ी

२. जब 'र' शब्दों में पहला अक्षर होता है—

(अ) यदि किसी शब्द में 'र' के पहले स्वर है तो 'र' नीचे को लिखा जायगा। यदि पहले स्वर नहीं है तो ऊपर को लिखा जायगा। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १२०

३— अरब, अरबी, आरोप, रानी, रोना, रोता-रोता

(ब) शब्द-संकेतों की रोचकता पर विचार कर सुविधानुसार 'र' चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और र, य, व, अथवा ल आँकड़ा मिले हुये कवर्ग के पहले ऊपर की तरफ लिखा जाता है और स्वर का कोई विचार नहीं किया जाता केवल इस बात का ख्याल रखा जाता है कि संकेत न बिगड़ने पावें। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १२०

४— आराजी आरती रोटी अरारोट
उरूज अरवा अरगल आर्य्य

(स) 'म' के पहले 'र' हमेशा नीचे लिखा जाता है चाहे मात्रा पहले आवे या न आवे। जैसे—नं० ५ चि० पृ०-१२०

५—आराम राम रोम शरम शरमीला

३. जब 'र' शब्द के अंत में आता है तो—

(अ) यदि कोई स्वर अंत में नहीं आता तो 'र' नीचे को लिखा जाता है। जैसे—नं० १ चि० पृ० १२३

१— मार मारो गाड़ी बार बारी चोर चोरी

(ब) ऊपर लिखे जाने वाले व्यंजनों के पश्चात् 'र' ऊपर लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० १२३

२— रार होरी यारी वार

(स) तवर्ग, स और न के बाद यदि वृत हो तो 'र' वृत के साथ ऊपर या नीचे लिखा जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १२३

३— तीसरा अनुसार शिशिर

नोट—यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि तवर्ग और 'स' के दायें बायें का प्रयोग से यदि नं० ३ (अ) के नियम का पालन हो सके तो जरूर करना चाहिये—जैसे 'तीसरा' शब्द के अन्त में मात्रा है इसलिए 'र' ऊपर जाना चाहिए और यह तवर्ग के दायें-बायें दोनों समूह से लिखने पर हो सकता है पर यदि 'तीसरा' लिखना हो तो दायें समूह से ही लिखा जाना चाहिए जिससे 'र' नीचे लिखा जा सके।

(द) जब 'र' किसी दूसरे व्यंजन के बाद आता है और उसके अंत में कोई आँकड़ा होता है तो वह ऊपर को लिखा जाता है। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १२३

४—मारना लड़ना पारस पेरवा

४. जब 'र' शब्द के बीच में आता है तो अधिकतर ऊपर लिखा जाता है पर कभी कभी सुचारुता के विचार से नीचे भी लिखा जाता है। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १२३
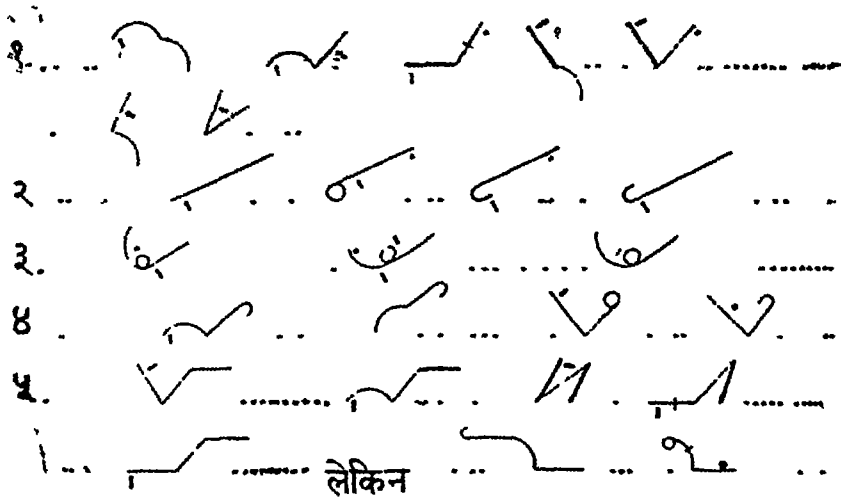
५—पारक मारग जारज खारिज
कारक - लेकिन - क्लर्क सड़क

---

(२) ल

जब 'ल' अकेला आता है तो हमेशा ऊपर लिखा जाता है चाहे मात्रा कहीं भी आवे।

१. जब 'ल' किसी शब्द संकेत का पहला अक्षर होता है तो—

(अ) यह अधिकतर ऊपर लिखा जाता है चाहे आरंभ में मात्रा आवे या न आवे। जैसे—नं० १ चि० पृष्ठ १२४

१—लाठी लड्डू उलट उलच लाभ

(ब) जब कवर्ग, न, म या ङ के पहले 'ल' आवे और उसके पहले कोई स्वर आवे तो 'ल' नीचे को लिखा जाता है और यदि स्वर पहले नहीं आता तो ऊपर को लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० १२४

२—लोक अलग लाम आलम

(स) जब 'ल' के बाद कोई वृत आवे और उसके बाद कोई वक्र व्यंजन आवे तो 'ल' उसी वृत के घुमाव के साथ लिखा जाता है। जैसे—नं० ३ चि० नीचे

१.
२
३.
४
५
६.
७.

लेकिन

३—लासुन लाज़िम लसता अलसर

२. जब 'ल' शब्द के अंत में आता है तो

(अ) 'ल' अधिकतर ऊपर लिखा जाता है चाहे अंत में मात्रा आवे या न आवे। जैसे—नं० ४ चि० ऊपर

४—फल फली माल माली जाली
जाल पल पीला फसली डाल डाली

(ब) कवर्ग, तवर्ग, स या ऊपर लिखे जाने वाले व्यंजनों के बाद, 'ल' यदि अंत में स्वर आता है तो ऊपर लिखा जाता है और यदि कोई स्वर नहीं आता तो

नीचे को लिखा जाता है। इस नियम को पालन करने के लिये तवर्ग और 'स' के बाएँ या दाएँ समूह को सुविधानुसार प्रयोग करना चाहिए ! जैसे—नं० ५ चि० पृ० १२४

५—थाली थाल दाल खेलो खेल असल
असली बेल वाला

३. 'न' के पश्चात् 'ल' अधिकतर नीचे लिखा जाता है चाहे अंत में मात्रा आवे या न आवे। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १२४

६—नाल नाली नीला नाला

४. यदि 'ल' शब्द के बीच में आवे तो अधिकतर ऊपर लिखा जाता है पर कहीं कहीं सुचारुता के विचार से नीचे भी लिखा जाता है। जैसे—नं० चि० पृ० १२४

७— बालटी मालती खेलती
लेकिन — कालम कोलंबो

अभ्यास—३८

खाना-खाते　　देखना-देखते

मत　　मदद

—

नीचे की कहानी को संकेत-लिपि में अनुवाद करो—

एक नगर में एक बुढ़िया रहती थी। वह बहुत गरीब थी। लोगों की मजदूरी करके अपना पेट पालती थी। जब उसके पास कुछ पैसा हो गया तो उसने उन पैसों से एक मुर्गी मोल ली।

वह मुर्गी रोज़ एक अंडा दिया करती थी। बुढ़िया उसको बेच कर अपना काम चलाती थी। एक दिन बुढ़िया ने सोचा कि मुर्गी का पेट चीर कर सब अंडे निकाल लेना चाहिए जिससे बहुत सा दाम मिले।

यह सोचकर उसने मुर्गी को पकड़ कर छुरी से उसका पेट चीर डाला। मगर वहाँ एक अंडा भी न निकला। तब तो बुढ़िया को बहुत अफसोस हुआ और पछताने लगी।

———

अभ्यास—३६

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

प, ब, ज और ह

जिस तरह आरम्भ में एक छोटा सा वृत 'स' के लिए आता है उसी तरह 'प' के लिए नं० १ का पहला चिन्ह, 'ब' के लिए नं० १ का दूसरा चिन्ह और 'ज' के लिए नं० १ का तीसरा चिन्ह काम में आता है। देखो चित्र पृष्ठ १२६ ये चिन्ह बीच और अंत में नहीं आते। यदि इन चिन्हों के पहले स्वर आता है तो भी ये चिन्ह नहीं लिखे जाते, पूरा चिन्ह लिखा जाता है। यह व्यंजनों में इस प्रकार लगाये जाते हैं। देखो चित्र—पृष्ठ १२९

२— पक, पच, पट, पप, पत (दा० बा०), पम, पन, पय, पर, पल, पव, पस (बा० दा०)

३— बक, बच, बट, बप, बत (दा० बा०), बम, बन, बल, बर, बस (दा० बा०), बह (नी० ऊ०)

४— जक, जच, जट, जप, जत (दा० बा०), जम, जन, जय, जर, जल, जव, ज़स (दा० बा०)

प्रारंभ में इन चिन्हों के बाद दूसरे आँकड़ें नहीं आते। यदि दूसरे आँकड़े लिखना सुविधाजनक हो तो ये चिन्ह पूरे लिखे जायँ। प में ह, ब में य, तथा र और ज में ह नहीं मिलता।

आरंभ में 'ह' लगाने के लिए उसके वर्णाक्षरों को छोटा भी कर सकते हैं। देखो चित्र—नं० १ का चौथा चिन्ह।

नियमानुसार इनमें मात्रा 'स' वृत के समान व्यंजन के पहले, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रखी जाती है। जैसे—नं०५ चि० पृ० १२६

५— पाठक, पूजा, बचन, बेचैन, हाथी, जाप, ज़ामा

बीच में 'ह' के लिए 'स्व' के समान वैसा ही एक बड़ा वृत बना दिया जाता है क्योंकि 'स्व' वृत बीच में नहीं आता। इस 'ह' वृत में भी नियमानुसार 'स' वृत के समान ही मत्राएँ लगती हैं और पढ़ी जाती हैं। जैसे—नं० ६ चि० नीचे

१. प, ब, ज, ह

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

६—चाहक महक ग्राहक चौहान
चोहल पाहन ताहम

अंत में भी 'ह' एक बड़े वृत से सूचित किया जाता है और 'स' वृत के नियमानुसार लगाया और पढ़ा जाता है, पर यदि 'ह' के बाद 'ई' के अलावा कोई दूसरी मात्रा आवे तो उस बड़े वृत को न लगाकर 'ह' पूरा लिखा जाता है। उसी 'ह' के पश्चात् नियमानुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान की मात्रा लगानी चाहिए। पर अंत में यदि 'ई' की मात्रा हो तो वृत को ज़रा डैश के रूप में नियमानुसार बढ़ाना चाहिए। यदि इस वृत के बाद 'न, त' का आँकड़ा आवे तो 'ह' वृत को बढ़ाकर ये आँकड़े भी लगा दिये जाते हैं। कोई मात्रा या आँकड़े अंत में न आने पर 'ह' के लिए अंत में केवल एक बड़ा वृत लगा दिया जाता है। जैसे—नं० ७ चि० पृष्ठ १२९

७— कह कलह पनही पनहा पौदह
इम्तिहान बेहोश बेहोशी

बीच या अंत में यदि 'ह' के बाद 'स' आवे तो 'ह' का वृत बना कर उसके बाद 'स' का छोटा वृत भी बना दिया जाता है। ऐसी दशा में यदि 'ह' के बाद कोई मात्रा आती है तो उसका विचार नहीं किया जाता है। जैसे—नं० ८ चि० पृष्ठ १२९

८— महसूल तहसीलदार

यह 'ह' का वृत 'स' वृत के समान ही लिखा जाता है, इसलिये यदि इसे सरल रेखा के अंत में 'स' के स्थान पर न लिख कर, 'न' के स्थान पर लिखें तो वृत के पहले 'न' भी पढ़ा जायगा पर ऐसी दशा में 'न' और 'ह' के बीच मात्रा न होगी। जैसे—न० ९ चि त्रपृष्ठ १२९

९— पनह कान्ह टोनह

———

शब्द-चिन्ह

आओ		आइए
पछताना	अपेक्षा	पूछना
कहना	कहता है	कहते हुए
चूँकि	जेनरल	खिलाफ

महान-महोदय		मशहूर
पहिचानना	पहिनना	पहुँचाना - पहुँचना
बाबत	बंदोबस्त-जवाब देना	बनिस्बत

अभ्यास—४०

१.

२.

३.

४.

५.

६.

अभ्यास—४१

१. पाम्म बाबा बिरला बिहाग पपड़ा पतरी

२. पनसेरी पहाड़ पहेली पारस पारसी

३. पारसनाथ पूरनमासी बीजगणित बीजारोपण

४. बीजमंत्र बेबस बेहतरीन बजघर

५. जाफरान बिकास पत्र वाहक बैजनाथ

६. यदि कोई यह चाहता है कि उसकी बनी हुई चीजें दूर तक पहुँचें, सारे संसार में मशहूर हों तो उसको बड़ी इमानदारी, मेहनत और लगाव के साथ इस महान काम को करना चाहिए।

७. आदमी का यह फर्ज है कि दूसरों के सुख-दुख को पहिचाने, उनके मुसीबत में मदद करे और यदि समय पड़े और हो सके तो उनके सारे काम का बंदोबस्त कर दे।

८. क्यों महोदय जी आपकी उस दर्जी के बाबत क्या राय है। वह कपड़े खूब अच्छा सीता है। उसके बने हुए कपड़े पहनने से जी खुश हो जाता है। आज तो वह आपके यहाँ आया था। आपने उसे क्या जवाब दिया।

द्विध्वनिक मात्राएँ

किसी २ शब्द मे एक मात्रा और स्वर एक साथ आते हैं और उनका स्पष्ट अलग २ उच्चारण होता है। ऐसी मात्रा और एक स्वर को द्विध्वनिक चिन्ह कहते हैं। जैसे—'आई, आओ, आऊ, ओई, ऊआ, ईओ' आदि।

इन द्विध्वनिक चिन्हों में अधिकतर पहली मात्रा अधिक आवश्यक होती है क्योंकि पहले आने के कारण उनका बोध होना आवश्यक है। उसके बाद आनेवाला स्वर तो सोचकर भी निकाला जा सकता। इसलिए यह बताने के लिए कि किसी स्थान पर एक मात्रा और दूसरा स्वर है एक विशेष चिन्ह से काम लिया जाता है। यह चिन्ह दो तरह ऊपर और नीचे से बनाए जाते हैं। जैसे—नं० १ और २ चित्र १३५

ऊपर की तरफ बायाँ नं० १ और नीचे की तरफ दायाँ नं० २ है।

बायाँ द्विध्वनिक मात्रा

१. बायाँ वाला द्विध्वनिक चिन्ह पहले स्थान पर 'ऐ' और उसके पश्चात् ही कोई दूसरे आनेवाले स्वर को सूचित करता है। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ १३५

३— गैआ मैआ

२. दूसरे स्थान पर 'ए' और 'औ' और उसके पश्चात् ही आनेवाला कोई दूसरा स्वर। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ १३५

४— टेआ तेऊ कौआ पौआ लौआ

३. तीसरे स्थान पर 'इ-ई' और उसके पश्चात् आनेवाली कोई दूसरी मात्रा। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ १३५

५— पिआ किआ सिआ

१. बायाँ ...... २. दायाँ ...

३. ....

४. . . ..

५. ....

६. . .. . पर

७. ... .

८ ....

९. ....

१०. ... .
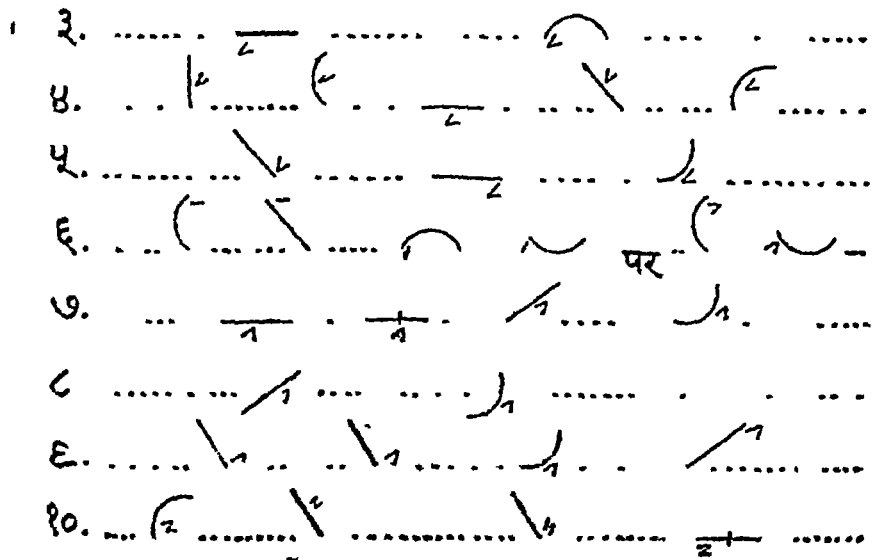
दायाँ द्विध्वनिक मात्रा

१. दायाँ वाला चिन्ह पहले स्थान में 'आ' और इसके पश्चात् आनेवाले कोई भी दूसरे स्वर को सूचित करता है। 'आई' के लिए एक विशेष संकेत पहले ही से निरधारित किया जा चुका है, इसलिए 'आई' के स्थान पर पहले वाला ही चिन्ह काम में लाना चाहिये। जैसे—नं० ६ चित्र ऊपर

६— ताई पाई माई नाई—रर — ताऊ नाऊ आदि

२. दूसरे स्थान पर 'ओ' और इसके पश्चात् आनेवाला कोई दूसरा स्वर। जैसे—नं० ७ चित्र ऊपर

७— कोआ खोआ रोआ सोआ

यदि आप चाहते हैं कि 'रोआ सोआ' न पढ़ा जाकर 'रोई और सोई' पढ़ी जाय तो आप उसी शब्द को लाइन काट कर लिखिये। जैसे—नं० ८ चित्र पृष्ठ १३५

८— रोई सोई

[आगे चलकर यह बात पूर्ण रूप से समझाई जायगी।]

३. तीसरे स्थान पर 'उ-ऊ' और उसके पश्चात् आनेवाला कोई दूसरा स्वर जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ १३५

६— पूआ बूआ सूई रूई

त्रिध्वनिक मात्राएँ

कभी २ किसी शब्द के बाद तीन मात्राएँ भी आती हैं। इनको त्रिध्वनिक मात्राएँ कहते हैं। इनके लिखने का नियम भी द्विध्वनिक मात्राओं की तरह है पर फर्क केवल इतना होता है कि द्विध्वनिक संकेत में एक डैश और लगा दिया जाता है। बाकी नियम वही रहते हैं। जैसे—नं० १० चित्र पृष्ठ १३५

१०— लाइए बोआई पिआऊ खाइये

ट, त और क का प्रयोग

ट, त और क

१. यदि किसी व्यञ्जन रेखाओं को उसकी साधारण लम्बाई का आधा किया जाय तो ट, त या क और मिल गया समझा जाता है। पर प्रारम्भ में 'ह' आधा नहीं किया जाता लेकिन अगर 'ह' आधे के बाद 'र' य 'ल' आँकड़ा लगा हुआ कवर्ग आवे तो 'ह' को आधा कर भी सकते हैं। जैसे—नं० १ चित्र पृष्ठ १३८

१— पट-पत या पक, टट-टत या टक, चट-चत या चक
मट-मत या मक, नट-नत या नक

२. इसी तरह यदि 'य, र (नी), ल, व, स और 'ह' मोटा कर दिया जाय तो 'ड' लग जाता है। जैसे—नं० २ पहली लाइन। चित्र पृष्ठ १३८

२— यड, रड, लड, वड, सड, हड

३. इसी तरह मोटे व्यञ्जनों को अद्धा करने से या 'य, र (नी), ल, व, स, म, न और ह' को मोटा कर अद्धा करने से 'द' लग जाता है। जैसे—नं० २ दूसरी लाइन और नं० ३ चित्र पृष्ठ १३८

२— यद, रद, लद, वद, सद, हद, मद, नद
३— बद— बदमाश, बदला

४. जो मात्रा इस अर्द्ध व्यञ्जन के पहले आती है वह सबके पहले और जो मात्रा इस व्यञ्जन के बाद में आती है वह व्यंजन के बाद पढ़ी जाती है। अंत में ट, क या त पढ़ा जाता है। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ १३८

४— पेट मेट औपट महक थोक फीट पाट
झपट उपट याद लाद हीद हुड सेट

५. यदि व्यंजन के पहले वृत या आँकडे हैं तो नियमानुसार पहले वृत या मात्राएँ पढ़ी जाती हैं, फिर मूल व्यंजन की रेखा, उसके आँकड़े और उसकी मात्रा पढ़ी जाती है और अन्त में अद्धे किए हुए रेखा के चिन्ह ट, त या क पढ़े जाते हैं। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ १३८

५— संकट, सिमिट, प्लेट प्रेट, सीलड

६. पर यदि व्यंजन के अन्त में वृत या आँकड़े हों तो पहले व्यंजन, उसके बाद की मात्रा और तब अद्धा पढ़ा जाता है, फिर अन्त में यह वृत और आँकड़े पढ़े जाते हैं। जैसे— नं० ६ चित्रपृष्ठ १३८

६—पीनक, पातक, बतक, काटना, पी॰ता, पीटना, लेटना, लोटना लादना वेदना

७. यह व्यंजन बीच में भी ट, त, द या क के लिए आधे किये जाते हैं पर ऐसी दशा में व्यंजन के तीनों स्थानों की मात्रा व्यंजन ही के पश्चात् और ट, त या क की मात्राएँ अगले व्यंजन के पहले यथा-स्थान लगाई और पढ़ी जाती हैं। जैसे —नं० ७ चि० पृष्ठ १३८

७— लाटरी, चटोरा, मकड़ी, पुटकी, मोटूमल, फुटकल, पतीली, आरडिनेन्स, सोडावाटर, मोल्ड

८. यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी व्यंजन को 'त या द' के लिए अद्धा तभी करते हैं जब कि इनसे सुचारुता के विचार से अच्छे शब्द संकेत बनने की आशा होती है। जैसे—नं० ८ चित्र पृष्ठ १३८

८— पतरी या बदमाश (अच्छे संकेत नहीं)

९. त और द अद्धे के प्रयोग से दोनों संकेत अच्छे बनते हैं। जैसे—नं०९ चित्र पृष्ठ १३८ पतरी या बदमाश (अच्छे संकेत)

१. शब्द के अन्त में यदि त, ट, द, ड या क आवे और उनके पश्चात् मात्राएँ आवें तो अर्द्ध संकेत काम में न आवेंगे पर पूरी रेखाएँ लिखी जायँगी। जैसे—नं० १० चित्र पृष्ठ १३८

१०—पाट पट्टी नट नटी मोट मोटी
पात पता लाड लादा सूड
सादा

अभ्यास—४२

खूब-अखबार खुद
अद्भुत फिर
उन्होंने जिन्होंने किन्होंने इन्होंने उसीने तुम्हीने हमीने इसीने

१

२

३

४

५

अभ्यास—४२

नीम

जिस तरह जाड़े में धूप अच्छी लगती है उसी तरह गरमी में छाया भली मालूम होती है। गर्मी में इधर दोपहरी आई उधर लोग घरों में छिपने लगे।

कुछ लोग पेड़ों के नीचे चारपाई बिछाकर आराम करते हैं। मगर जो मज़ा नीम की छाया में आता है वह कहीं नहीं आता। नीम की पत्तियाँ बहुत घनी होती हैं। धूप को नीचे नहीं आने देतीं।

नीम की हवा भी ठंडी होती है। नीम की पत्तियाँ आरी की तरह कटावदार होती हैं। इनका रंग हरा होता है। इसको देखकर आँखों को ठंडक आती है।

नीम की पत्तियों का पानी सुरमा में मिलाकर अंजन बनता है। इसे आँखों में लगाते हैं इसके लगाने से आँखों की बीमारियाँ जाती रहती हैं। नीम की टहनी से दातून बनता है। दातून करने से दाँत साफ और मज़बूत होते हैं।

लड़कों, क्या तुमने नीम को रोते हुए देखा है। कभी २ नीम के तनों में से पानी निकलता है। उसे नीम का रोना कहते हैं। यह पानी भी दवा के काम में आता है।

तर, दर, टर या डर

१. जिस तरह व्यंजन को अद्धा करने से 'ट और क' आदि लगता है उसी तरह उसे दुगना करने से 'तर या दर' लग जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे
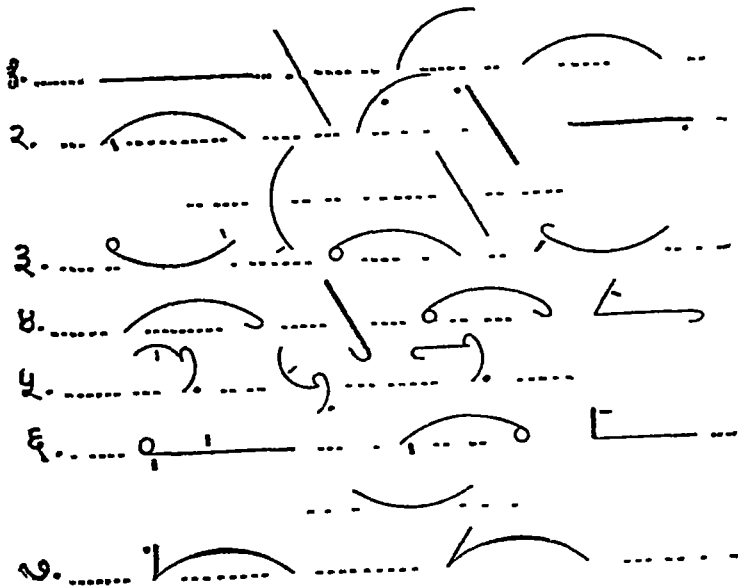
१— क-तर   प-तर   ल-तर   म-तर
क-दर   प-दर   ल-दर   म-दर

२. अद्धे की तरह जो मात्रा व्यंजन के पहले आती है वह सबके पहले और जो मात्रा व्यंजन के बाद आती है वह व्यञ्जन के बाद पढ़ी जाती है। अन्त में तर, दर आदि पढ़ा जाता है जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

२— मादर   लेदर   अवतर   गीदड़   उत्तर   पितर

३. अद्धे की तरह यदि व्यंजन के पहले वृत या आँकड़े हों तो पहले ये वृत और उनकी मात्राएँ पढ़ी जाती हैं और फिर 'तर या दर' पढ़ा जाता है। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ १४४

३— सुन्दर समतर निरादर

४. पर यदि व्यंजन के अंत में वृत या आँकड़े हों तो पहले व्यंजन और वृत या आँकड़े पढ़े जाते हैं और फिर 'तर या दर' पढ़ा जाता है। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ १४४

४— मंतर बन्दर समन्दर चोकन्दर

५. यदि अंत में 'तर या दर' के बाद मात्रा हो तो संकेत पूरा लिखा जाता है। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ १४४

५— मंत्री संत्री कर्तृ

६. कभी २ सुविधानुसार अंत में 'तर या दर' के अलावा व्यंजन को द्विगुण करने से 'आतुर,टर या डर' लग जाता है। जैसे—नं० ६ पृष्ठ १४४

६— शोकातुर मास्टर डाक्टर

७. 'म्ब या म्प' को दूना कर देने से अंत में केवल 'र' और लग जाता है। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ १४४

७— आडम्बर चेम्बर

८. इसी तरह 'न' को मोटा और दूना करने से 'र' और लग जाता है। जैसे 'निरर्थक'।

———

अभ्यास—४४

अंतर अंदर

अधिकतर

बकरी

हामिद—आज हमारी बकरी कहाँ गई ?

अम्मा—बेटा ! कहीं बाहर खेत में चर रही होगी।

हामिद—अम्मा वह क्या खाती है ?

अम्मा—घास खाती है और कुछ नहीं खाती।

हामिद—क्या ! घास और कुछ नहीं।

अम्मा—हाँ, वह सानी भी खाती है और अगर रोटी दी जाय तो रोटीभी खा लेती है।

हामिद—और पत्ते भी खा लेती है।

अम्मा—हाँ पत्ते भी खा लेती है। पीपल के पत्ते बड़े शौक से खाती है।

हामिद—अम्मा उसके थनों में दूध कहाँ से आता है ?

अम्मा—जो कुछ वह खाती है उसका दूध बनकर थनों में जमा हो जाता है। पीपल के पत्तों से बहुत दूध बनता है।

अभ्यास—४५

१.

२.

३

४

५

६

७.

१. न०१ न०२

२

३.

४

५.

६

७

पर या या

८. =

=

९

व	वा	य	या
वे	वो	ये	यो
वी	वू	यी	यू

१० ११.

१२

व और य का प्रयोग

१-२ 'व' चिन्ह नं० १ से सूचित किया जाता है और 'य' चिन्ह नं० २ से। प्रारंभ में 'व' व्यंजनों में इस प्रकार मिलाया जाता है। जैसे—नं० चि० पृ० १४८

२—वक वट वच वप वत (दा० बा०) वम वन वय वर वल वव वस (दा० बा०) वह

३. प्रारंभ में 'य' पूरा लिखा जाता है और यदि सुविधाजनक हो तो 'व' का भी पूरा संकेव लिख सकते हैं। ह (नी) में व का चिन्ह नहीं लगता ' अंत में 'व' इस प्रकार मिलाया जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १४८

३— कव टव चव पव तव (दा० बा०) मव नव यव र (ऊ) व, र (नो) व, लव, वव, सव, (दा० बा०) ह (ऊ) व, ह (नी) व

४. अंत में 'य' इस प्रकार मिलाया जाता है। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १४८

४— कय टय चय पय तय (दा० बा०) मय यय, नय, र (उ) य, र (नी) य, लय, वय, सय (दा० बा०), ह (ऊ) य, ह (नी) य

५. आखीर में स वृत को गोला कर थोड़ा आगे बढ़ाने से 'व' और 'व' में एक डैश लगाने से 'य' इस प्रकार मिलाया जाता है। जैसे—नं० ५ चित्र पृ० १४८

५— कसव कसय पसव पसय रसव रसय

६. 'व' का आँकड़ा से 'वी' भी पढ़ा जाता है। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १४८

६— यशस्वी तेजस्वी

७. 'व' का आँकड़ा आरम्भ में तभी तक लगता है जब तक केवल वर्णमाला के शुद्ध संकेत आते हैं, परन्तु ज्योंही वे वर्णमाला के संकेत स्वयं किसी वृत या आँकड़े के साथ आवे तो व का आँकड़ा न लिखकर पूरा 'व' का संकेत लिखते हैं। जैसे—नं० ७ चि० पृ० १४८

७— विपत वियोग विपिन विनय प्रनय नाविक--पर—
बिप्र या बिप्र, विकल या बिकल

८. इन 'व और य' के व्यंजनों का प्रयोग अच्छे संकेतों के लिए ही किया जाता है। यदि इसके स्थान पर 'ब और ज' से अच्छे संकेत बनें तो 'व और य' लिखने की आवश्यकता नहीं क्योंकि 'व और ब' तथा 'य और ज' में भेद नहीं माना जाता है। जैसे—नं० ८ चि० पृ० १४८

८— नं० १ वर्ग मील नं० २ वर्ग मील
नं० १ जोग शास्त्र नं० २ योग शास्त्र

ब और ज से लिखे हुए पहले संकेत अच्छे हैं।

९. बीच में यह नीचे दिए हुए 'व--य' के चिन्ह किसी भी व्यंजन के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रखे जा सकते हैं और उस स्थान की मात्रा इस 'व—य' चिन्ह के बाद समझी जाती है। जैसे—नं० ९ चि० पृ० १४८

१०. उदाहरण—जैसे नं० १० चि० पृ० १४८—पवन भवन

११. पर बीच में यदि कोई मात्रा इन 'व—य' चिन्हों के पहले आती है तो 'व -य' चिन्ह न लिखा जाकर संकेत पूरे लिखे जाते हैं। जैसे—न० ११ चि० पृ० १४८

११— निवेदन निवाज नेवता आदि

१२. कभी कभी 'य' का चिन्ह बीच में मिलाकर दोनों तरफ लिखा जाता है और उसकी मात्राएँ नियमानुसार अगले व्यंजन के पहले लगा दी जाती हैं। जैसे—नं० १२ चि० पृ० १४८

१२— पारिवारिक बलवती

षण, क्षण, शन आदि का प्रयोग

बहुत से शब्दों के अन्त में 'षण, क्षण, शन' आदि शब्दांश आते हैं। ये 'न' के आँकड़े के समान एक बड़ा आँकड़ा शब्दों के अंत में लगाने से समझा और पढ़ा जाता है। इसके अन्त में भी स्वर आने से ये पूरा लिखा जाता है।

इसके लगाने के यह नियम हैं :—

१. वक्र व्यंजनों के अन्दर अन्त में 'न' आँकड़े को बड़ा कर लगाया जाता है। जैसे—नं० १ चि० नीचे

1.
2.
3.
4.
5.
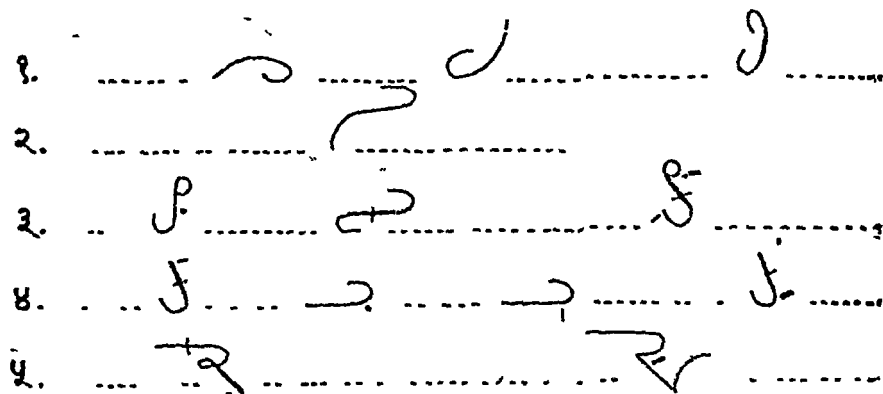
१—मिशन सेशन दर्शन

२. ल (ऊ) के साथ जब कवर्ग आता है तो यह ऊपर लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

२— लक्षण

३. जब यह सरल व्यंजनों में लगता है तो जिस तरफ़ सरल व्यजन के आरम्भ में वृत या आँकड़ा रहता है उसके दूसरे तरफ़ यह ऑकड़ा लगाया जाता है क्योंकि इसमें सुविधा होती है। जैसे—नं० ३ चित्र पृ० १५१

३— स्टेशन घर्षण सुभाषण

४. शब्द के दूसरे सरल व्यंजनों में सबसे आखीर की मात्रा के विपरीत दिशा में लगाया जाता है। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १५१

४— भाषण किशन कुशन भूषण

इससे मात्रा लगाने में सुविधा होती है।

५. कभी कभी यह 'शन, छन' आदि का ऑकड़ा बीच में भी आता है उस समय उसमें स्वर नियमानुसार अगले व्यंजन के पहले लगाये जाते हैं। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १५१

५— खुश नसीब किशनपाल

अभ्यास—४६
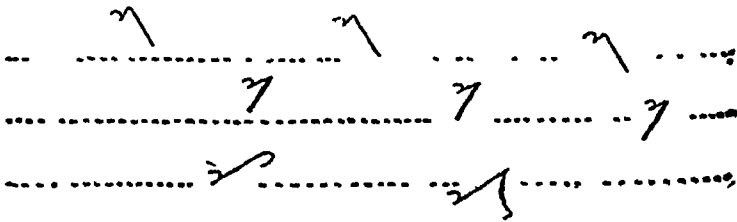
व्यापार	विपत	वापस
वाजिब	वेजा	वजह
वरन	विरुद्ध	

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

अभ्यास—४७

१ ....

२ ....

३ ....
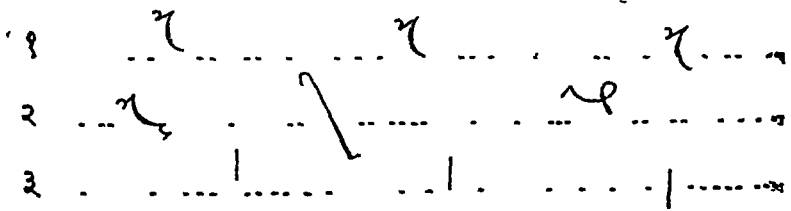
विद्या - विद्वान विधि विद्यार्थी

विषय प्रारंभ मजबूत

अटकल मोटा उल्टा

कबूतर

विद्यार्थियों तुमने कबूतर तो जरूर देखा होगा। इसकी सूरत में भोलापन बरसता है। ये छोटे मोटे सब किस्म के होते हैं। विद्वानों ने इनके विषय की विद्या की बड़ी अनुसन्धान की है। इनकी याददाश्त बड़ी तेज होती है। यह एक बार अपना घर देख लेते हैं तो किसी विधि भी नहीं भूलते।

कबूतर बड़ा मिलनसार और प्रेमी जानवर है। प्रारम्भ में तो वह आदमी को देखकर बड़ी दूर भागता है पर जब हिल जाता है तो उनके साथ प्रेम से रहता है। यह सब चीजें नहीं खाता पर दाने और रोटी-पूरी बड़े चाव से खाता है।

घर से इसको कितनी ही दूर ले जाकर छोड़ो तुरन्त अपने घर उलटा चला आता है। इसको ज्यादा वक्त नहीं लगता, अटकल से खोजने में वक्त नहीं खोता।

यह बड़ी ही समझदार चिड़िया है।

स्वर

(लोप करने के नियम)

इनका वर्णन विशेष रूप से किया जा चुका है पर यदि वे
सब स्वर व्यञ्जनों में लगाये जायँ तो बहुत समय लगेगा और
संकेत-लिपि का मतलब ही जाता रहेगा। इसलिए स्वरों के
एक-एक करके छोड़ने की आदत डालना चाहिए। इसके लिए
नीचे के नियमों को ध्यानपूर्वक पढ़ना तथा समझना चाहिए।
सारे पिछले नियम भी इसी सिद्धान्त पर बनाये गये हैं।

१. देखो—(१) जब शब्द के आदि या अन्त में स्वर आता है तो
व्यञ्जन पूरा लिखा जाता है। जैसे—नं० १ चि० पृ० १५६

१— पान पानी मान मानी खटक खटका

२. 'र और ल' के ऊपर और नीचे लिखे जाने से भी पता
लगता है कि स्वर पहले या आखीर में हैं। जैसे—नं०
२ चि० पृ० १५६

२— पार पैरा पूरा अर्क कूड़ा
कौड़ी आलम लाख

३. शब्द-चिन्ह लाइन के ऊपर, लाइन पर और लाइन को
काट कर बगैर मात्रा के लिखे और पढ़े जाते हैं जैसे—
नं० ३ चि० पृ० १५६

३— दान - दाम देना - दे दिन - दिया

४. इन नियमों से स्वर न रखे जाने पर भी कम से कम इतना
तो पता चल ही जाता है कि आदि और अन्त में कोई
स्वर है। अब कौन सा स्वर है इसके लिए निम्न नियमों
पर ध्यान दीजिए।

जिस तरह स्वरों के तीन स्थान—प्रथम, द्वितीय और
तृतीय होते हैं और स्थानानुसार उनके उच्चारण भी

१.

२

३

(१) (२) (३)

४

५

६.

७.

८

९.

भिन्न-भिन्न होते हैं, उसी प्रकार शब्द भी ध्वनि के अनु-सार तीन स्थान पर लिखे जाते हैं और वह शब्द के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान कहे जाते हैं। प्रथम स्थान लाइन के ऊपर, द्वितीय स्थान लाइन पर और तृतीय स्थान लाइन को काट कर समझा जाता है। जैसे— नं० ४ चि० पृ० १५६

. हर एक शब्द में उसकी मात्रा ही इस बात को निश्चय करती है कि वह शब्द कहाँ लिखा जाय। यदि शब्द में प्रथम स्थान की मात्रा मुख्य है तो शब्द प्रथम स्थान पर यदि द्वितीय स्थान की मात्रा मुख्य है तो शब्द द्वितीय स्थान पर और यदि तृतीय स्थान की मात्रा मुख्य है तो शब्द तृतीय स्थान पर लिखा जाता है। यदि शब्द में कई मात्राएँ हों तो उस शब्द की खास दीर्घ उच्चरित मात्रा ही के लिहाज से स्थान निर्धारित किया जाता है। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १५६

५— पार पोर पीड़
टाल टोल टूल
माल मोल मील

. यदि एक से ज्यादा दीर्घ उच्चरित मात्रा हों तो पहले मात्रा के लिहाज से स्थान निर्धारित किया जाता है। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १५६

६— पाल पोलो पीला
राठा रीठा रूठा
कीला काला बाला बोलो
चेला चील

. आड़ी रेखाएँ लाइन को काट कर नहीं लिखी जातीं।

इसलिए उनके द्वितीय और तृतीय दोनों स्थान लाइन ही पर होते हैं जैसे—नं० ७ चि० पृ० १५६

७— मामा मेम काकी काका
कूक काम कौम सान सोना

८. जो शब्द शब्द-चिन्ह से बनते हैं उसमें पहला शब्द-चिन्ह अपने ही स्थान पर लिखा जाता है। जैसे—नं० ८ चि० पृ० १५६

८— बातचीत बहुत दिन

९. जो अर्द्ध-संकेतों से शब्द लिखे जाते हैं उनमें भी तीन स्थान नहीं होते। पहला स्थान लाइन के ऊपर और दूसरा-तीसरा स्थान लाइन पर होता है। जैसे—नं० ९ चि० पृ० १५६

९— पटरा पटरी चटका चटकी
मटका मटकी पटका पटकी
लटका लटकी रटना आदि

---

१. ऊपर लिखे जाने वाले दुगने व्यञ्जनों के तीनों स्थान नियमानुसार होते हैं। जैसे—नं० १ चि० पृ० १५९

१— यंतर लेदर लतर

२. पर यदि यह दुगने व्यञ्जन नीचे लिखे जानेवाले हैं तो इनका केवल एक स्थान लाइन को काट कर होता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० १५९

२— प्रिंटर बंदर पातर

३. बिना मात्रा वाले शब्द तीसरे स्थान पर लिखना चाहिए। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १५९

३— पर्क पक आदि

४. बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनमें मात्रा न लगाने से अर्थ के समझने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। उनमें जो मात्रा स्थान विशेष से न समझी जा सके उसे लगाना चाहिए। जैसे—नं० ४ चित्र नीचे

४— आरी ऊबा एवं ओदा ओला आदि

५. जब 'ल या र' के ऊपर और नीचे लिखने से स्वर का ठीक ठीक पता न लगे तो मात्रा को लगानी चाहिए। जैसे—नं० ५ चि० नीचे

५— आरता आरती आराम आरज़ू आदि

१.

२.

३.

४.

५.

६.
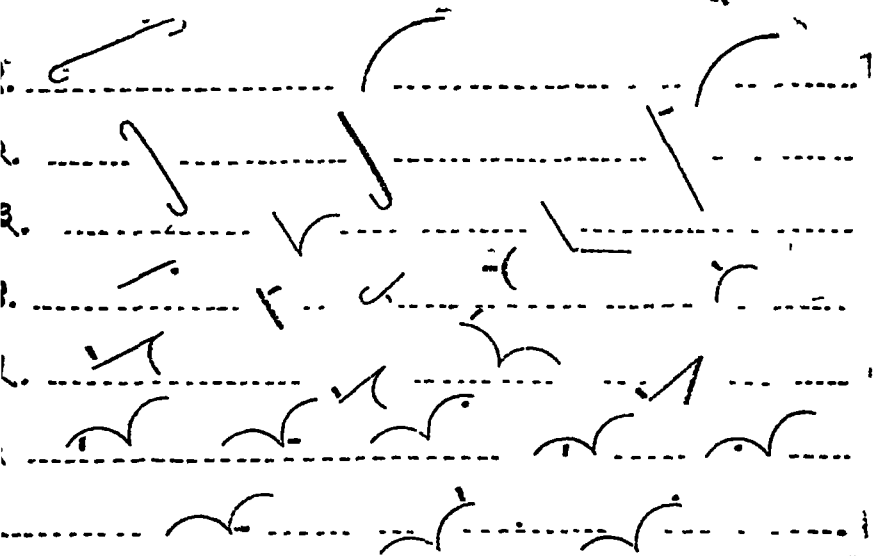
६. ऐसे स्थानों पर भी मात्रा लगा सकते हैं—

(१) जहाँ एक ही शब्द संकेत से कई शब्द बनते हैं। जैसे—नं० ६ चि० ऊपर

६— माला मैला माली मोल मेल
मेला मूल मील

(२) जहाँ शब्द नया और कई बार का लिखा न हो।

(३) जहाँ जल्दी मे शब्द संकेत ठीक स्थान पर या अशुद्ध लिखा गया हो

(४) जहाँ कोई बिल्कुल नया विषय लिखा जा रहा हो।

(५) जहाँ संदर्भ आदि का ठीक ठीक पता न चल सके।

कटे हुये व्यञ्जनों का प्रयोग

इसी तरह प, फ; क, ख; च, छ आदि में भी आप देखते हैं कि एक ही संकेत दोनों व्यञ्जनों में आते हैं; भिन्नता केवल इतना ही है कि दूसरा व्यञ्जन कटा हुआ होता है। इस संकेत-

लिपि के तेज लिखनेवाले इस फ, ख, छ आदि को तभी काटते हैं जब उनका काटना अनिवार्य हो जाता है अन्यथा एक ही संकेत से काम निकाल लेते हैं जैसे—

'पुल' को 'फुल' न पढ़ेंगे 'फूल' पढ़ सकते हैं पर वाक्य में

यदि यह कहा जाय कि 'वह पुल पर जा रहा था' या 'गाड़ी पुल पर जा रही थी', तो मुहावरे से पढ़ कर यह न कहा जायगा कि 'वह फूल पर जा रहा था' पर यदि 'ख, छ' आदि कटे हुए व्यंजन शब्द के आरंभ या अन्त में आवें तो एक छोटा सा हल्का सीधा डैश-चिन्ह वर्ण-संकेत के साथ मिलाकर इस प्रकार लिखें। जैसे—नं० १ चि० पृ० १६०

१— आदि में— ख ठ छ फ थ म न
अंत में— ख ठ छ फ थ म न
फटा . इम्तहान

यदि आरम्भ में 'र या ल' और अंत में 'त या न' का आँकड़ा लिखा हो और कहीं भी उपरोक्त आँकड़ा लगाने की जगह न मिले तो यह चिन्ह इस प्रकार लिखना चाहिए। जैसे—नं० २ चि० पृ० १६०

२—१ रेखा—खर ठर छर फर थर नर मर
२ ,, —खन ठन छन फन थन नन मन
३ ,, —खत ठत छत फत .

जिन वक्र अक्षरों के अंत में 'न' का आँकड़ा लगता है उनके आँकड़े में भी यह सूचित करने के लिए कि वे कटे अक्षर हैं— एक हल्का छोटा सा डैश लगा सकते हैं। इससे 'त' के आँकड़े का भ्रम न होना चाहिये क्योंकि 'त' आँकड़े के डैश में और इस कटे हुए अक्षरों के डेश में बड़ा अंतर होता है। वक्र रेखा के 'त' वाले आँकड़े का डैश सीधा लगता है और वक्र रेखा में कटे हुए अक्षरों का डैश तिरछा आँकड़े से मिला हुआ लगता है। वक्र रेखाओं में 'त' आँकड़े का डैश लगाने के बाद फिर यह डैश नहीं लगता। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १६०

३— मत नत - पर - नन मन

इनके अलावा बीच में कटे हुए अक्षर आवें और अर्थ में विशेष अंतर पड़ने का डर हो तो उस अक्षर को काट देना चाहिए।

आगे के अभ्यासों में अब इन्हीं नियमों को काम में लाया जायगा और सिवा अत्यावश्यक मात्राओं के दूसरी मात्रा न लगायी जायँगी।

क्व, ग्वर, रर

'क और ख्श' के लिए 'क और ख' के, 'ग्व और घ्व' के लिए 'ग और घ' के आरम्भ में ऊपर को 'ल' आँकड़े के स्थान पर वैसा ही एक बड़ा आँकड़ा लगा दिया जाता है जैसे—नं० १ चि० नीचे

१— १. क्व २. ख्व ३. ग्व ४. घ्व

१ ... १. ... २. ... ३. ... ४.

२.

३. ... १ → ... ← २

४.
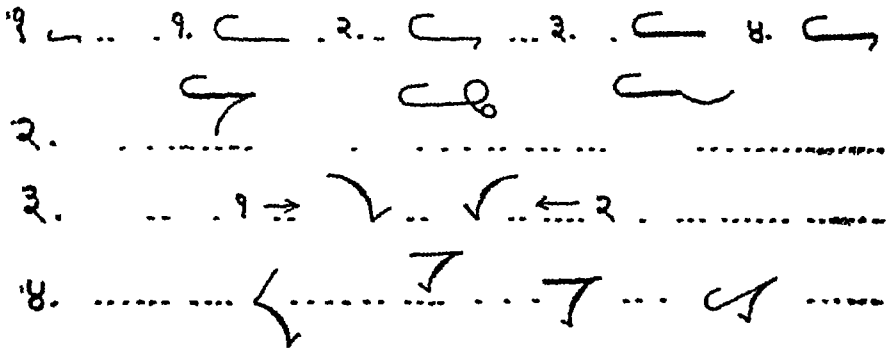
यह आँकड़ा आरम्भ और बीच में लगाया जाता है। स्वर इसके पहले या बाद में आ सकता है। जैसे—नं० २ चि० ऊपर

२— ग्वाला ख्वाहिश अग्वानी

र (नी) और ल (नो) को मोटा करके एक डैश लगाने से एक 'र' और लग जाता है जैसे नं० ३—'र-र' 'ल-र'। यह केवल शब्द के अन्त में आता है। जैसे—नं० ४ चि० ऊपर

४— चरर कालर गूलर बीलर

१
२
३
४
५ आँकडा
६.
७
८
९
१०
११
१२.
१३.
१४. या
१५ या
१६.
१७.
१८ ?

कुछ प्रत्यय शब्द और उनके संकेत

प्रत्यय वे शब्द हैं जो शब्दों के अन्त में जुड़ कर उनके अर्थ में विशेषता पैदा करते अथवा भाव बदल देते हैं।

ये प्रत्यय संकेत शब्दों के अन्त में लिखे और पढ़े जाते हैं। यदि मिलने में असुविधा हो तो शब्दों के पास ही लिख देना चाहिए। [चिन्हों को बाँए तरफ देखिये]

१. आगार = धनागार कारागार शयनागार स्नानागार
२. कर = हितकर सुखकर रुचिकर शांतिकर
३. कारक = हानिकारक गुणकारक फलकारक हितकारक
४. कारी = हानिकारी गुणकारी फलकारी हितकारी
५. अर्थी—('र' आँकड़ा और थी) = लाभार्थी परीक्षार्थी परमार्थी
६. आलय = शिवालय हिमालय औषधालय संग्रहालय
७. शील = धर्मशील गुणशील न्यायशील कर्मशील
८. शाली = बलशाली प्रभावशाली
९. हर, हारी } = सन्तापहर सन्तापहारी पापहारी
१०. हार } = मनोहर अनुहार
११. अहार प्रतिहार विहार
१२. संगहार
१३. वाला = दूधवाला घीवाला तेलवाला आमवाला
१४. हीन = बुद्धिहीन बलहीन ज्ञानहीन धर्महीन
१५. वान = गाड़ीवान कोचवान इक्केवान
१६. जनक = सन्तोषजनक आशाजनक
१७ क — (अद्धा से)=गायक पाठक मारक
१८. वट = मिलावट बनावट सजावट

१९ ...

२० ... २ ... ३ ... ४ ...

२१ ... ७c ६c ८c ...

२२ ...

२३ ...

२४ ...

२५ ...

२६ ...

२७ ...

२८ ...

२९ या ...

३० ...

३१ ...

३२ ...

३३ ...

३४ ...

३५ ... ६ २ ...

३६ ...

१९. हट = फिसलाहट चिकनाहट

२०. गुना = संख्या के नीचे 'न' से दुगुना तिगुना आदि

२१. वाँ—संख्यों के बाद = सातवाँ नवाँ आठवाँ

२२. पन—(मिला या अलग) = लड़कपन मीठापन

२३ मान = बुद्धिमान अपमान

२४. त्व = दासत्व गुरुत्व लघुत्व महत्व

२५ दाता = व्याख्यानदाता सुखदाता

२६. मन्द = अक्लमन्द दौलतमन्द

२७. बीन = तमाशबीन खुर्दबीन

२८. पूर्वक = सुखपूर्वक दुखपूर्वक

२९. पूर्ण = रहस्यपूर्ण शशिपूर्ण

३०. ता = कटुता मृदुलता मित्रता कुशलता

३१. रूपी—(काट कर) = विद्यारूपी

३२. सागर = विद्यासागर दयासागर गुनसागर

३३. सार = मिलनसार

३४. पति—(काटकर) = गनपति जदुपति

३५. वाहा = चरवाहा

३६. खाना —(काट कर) = गुसलखाना कूड़ाखाना

३७

३८

३९

४०

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

३७. प्रद = सन्तोषप्रद आशाप्रद
३८. नामा = (काट कर)— हलफनामा बयनामा इकारनामा
३९. साजी = जालसाजी
४०. वादी = राष्ट्रवादी साम्राज्यवादी

उपसर्ग

उपसर्ग वे शब्द हैं जो शब्दों के पूर्व जुड़ कर उनके अर्थ को घटाते बढ़ाते अथवा उलट देते हैं। जैसे—सुजन, सुपथ।

१. प्र = प्रयत्न प्रचार प्रबल प्रख्यात
२. परा = (अलग)—पराजय पराभव पराक्रम
३. अप = (लाइन के ऊपर)—
अपकीर्ति अपमान अपशब्द अपकार
४. उप = (लाइन काट कर) —उपकार उपकृत
५. अनु = (लाइन के ऊपर)—
अनुदिन अनुकरन अनुचर
६. नि, इन = (लाइन पर)—निधन निवास निषिद्ध इनसाफ
७. निस = निष्पाप निष्कर्म निश्चय
८. निर = (लाइन पर, मिला या अलग)—निरजीव निरमल
९. आ = (साधारणतः लाइन के ऊपर)—
आमरण आजीवन आकर्षण
आयोजन आक्रान्त
१०. अति = (लाइन के ऊपर)—अतिकाल अतिव्याप्त अतिशय
११. न = (काट कर)—नालायक नाइत्तिफाक नापसन्द

१२.

१३

१४

१५ 'सत'

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३.

२४

२५.

२६.

२७.

१२. सम, समा, सन—संकेत के पहले अलग या मिलाकर—
= समागम संतोष संग्रह संरक्षण

१३. स, सु—(नियमानुसार 'स' वृत से)—
= सफल सजल सजीव सयत्न

१४. सह —(नियमानुसार स+ह से)—
= सहचर सहगमन सहोदर सहवास

१५. सत् = (ध्वनि के अनुसार)—सज्जन सद्गुरु संमित्र.

१६. 'स्व' = नियमानुसार 'स्व' वृत से-स्वकुल स्वदेश स्वरचित

१७. दुस = (लाइन पर, अलग या मिला) —
दुष्कर्म दुष्प्राप्य दुश्चरित्र

१८. दुर = (" ")—दुरजन दुरगम

१९. कु = (अलग या मिला)—कुचाल कुसुत कुमारग

२०. चिर = चिरायु चिरकाल

२१. भर = भरपेट भरपूर भरसक

२२. बद = (ब अद्धा)—बदबू बदमाश बदशकल
बदकार बदनाम

२३. कम, कान—(व्यञ्जन के आरम्भ में एक विन्दु)—
= कमजोर कमजोरी कम्बख्त कांफ्रेंस

२४. हर = (मिला या अलग)—हररोज हरसाल हरदिन

२५. हम = (काट कर)—हमसाया हमजुल्फ

२६. अध— (मिलाकर या अलग) —
= अधपक्का अधसेरी अधजल

२७. वी = (नियमानुसार)—विदेश विज्ञान वियोग
विकल विशेष

२८
२९
३०
३१
३२

२८. बे = (लाइन पर) —बेइमान बेकार बेहाल
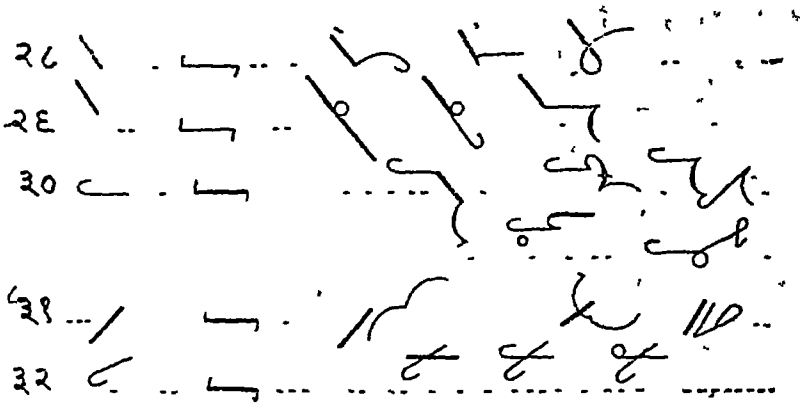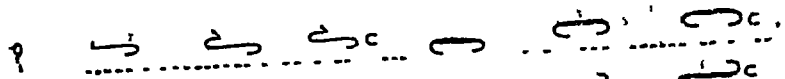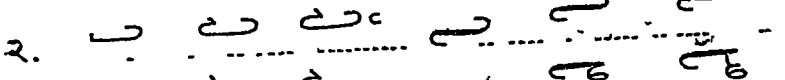
२९. बा = (लाइन के ऊपर)—बासबब बाजाब्ता बाकायदा

३०. कुल = कुलबधू कुलधर्म कुलदेवता
कुलांगार कुलश्रेष्ठ

३१. जीवन = (लाइन को काट कर) जीवनलीला जीवनधन
जीवन चरित्र

३२. यथा = (काट कर) —लाइन के ऊपर—यथायोग
यथाकाल यथाशक्ति
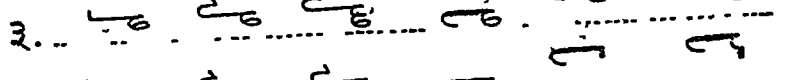
अभ्यास—४८
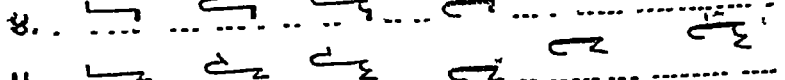
१. मैं आम खाता हूँ। तुम क्या खा रहे हो ? राम तो पहले ही खा चुका है। सोहन ने भी तो खाया है। जब मैं आम खा रहा था तो वह पहले ही से आ डटा। पर राम उसके भी पहले आ चुका था। सोहन ने भी खूब आम खाये। गोविन्द भी एक किनारे बैठा आम खाता था और जो कुछ आम खा चुकता था उसकी गुठली सोहन पर फेंक देता था।

२. रात आठ बजे या तो मैं दूध पी रहा हूँगा या पी चुका हूँगा। दूध तो मैं और पहले पी चुका होता मगर कैसे पीऊँ घर में तो कोई था ही नहीं। भाई कहीं घूमने जा रहे होंगे और रमेश कहीं खेलता होगा। आखिर क्या वे लोग न पियेंगे मैं ही पीता।

३. स्टेशन पर कितनी ही चीजें बाहर से लाई जाती हैं। अगर यह चीजें बाहर से न लाई जातीं तो काम न चलता। जब मैं वहाँ पहुँचा तो आम लाया जा रहा था। लीचियाँ पहले ही से लाई गई थीं और भी बहुत से फल लाये जाते होंगे यह देख कर मुझसे न रहा गया। मैंने सोचा मुझे भी कुछ खाना चाहिए। यह सोच कर आम पर मैं टूट पड़ा और जितना खा सकता था खाया।

४. अगर तुमने आम खा डाला तो कौन सी बड़ी बात हुई। वह तो घर पर इसीलिए रखे थे। तुम पहले से वहाँ उपस्थित नहीं थे नहीं तो तुमको पहले मिल जाता। श्याम को तो मैं पहले ही दे चुका था। वह तो आज घर पर ही था। रास्ते में गिर पड़ने के कारण कल वह कहीं नहीं गया था, न आज जावेगा।
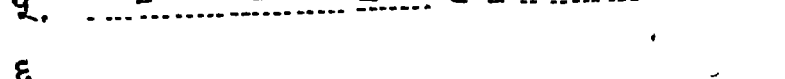
क्रिया
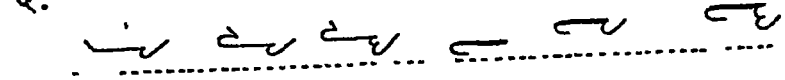
१

२.
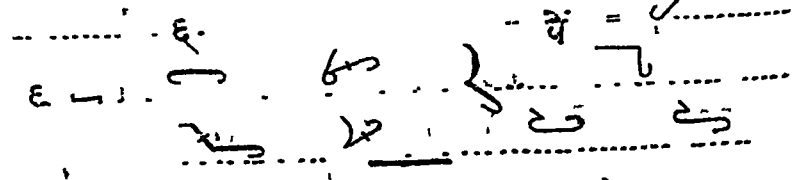
३.

४.

५.

६.

८. १. 'न' का आँकड़ा २. 'त' का आँकड़ा

३. ऊं = ४. ओ = ५. हुए =

६. ये =

६.

क्रिया

काम के करने या होने को क्रिया कहते हैं। सर्वनाम के समान यह भी ध्यान देने योग्य विषय है। रूप के विचार से नियमानुसार इनके कुछ साधारण चिन्ह निरधारित किये गये हैं जो लिपि को संक्षिप्त करने के साथ ही साथ सुचारुता और पढ़ने में सहायता देते हैं।

कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया को मुहावरे से पढ़ना होता है जैसे यदि 'जाता' शब्द लिखा है तो 'वे' के साथ 'जाते' और वह (स्त्रीलिंग) के साथ 'जाती' पढ़ा जायगा।

(अ)

(चित्र बाँए तरफ)

पहले क्रियाओं के मूलरूप पर ध्यान दीजिये—नं १ से ६

	मूलरूप (सकर्मक)	साधारण सकर्मक	प्रेरणार्थक सकर्मक;	मूलरूप (अकर्मक)	साधारण सकर्मक	प्रेरणार्थक सकर्मक
१—	खाना	खिलाना	खिलवाना;	गिरना	गिराना	गिरवाना
२—	खाता	खिलाता	खिलवाता;	गिरता	गिराता	गिरवाता
३—	खाऊँ	खिलाऊँ	खिलवाऊँ;	गिरूँ	गिराऊँ	गिरवाऊँ
४—	खाओ	खिलाओ	खिलवाओ;	गिरो	गिराओ	गिरवाओ
५—	खाइए	खिलाइए	खिलवाइए;	गिरिए	गिराइए	गिरवाइए
६—	खावें	खिलावें	खिलवावें;	गिरें	गिरावें	गिरवावें

ऊपर क्रिया के दो रूप दिए गये हैं। एक सकर्मक क्रिया और दूसरी अकर्मक क्रिया से बनी हुई सकर्मक क्रिया है। इनके रूप प्रेरणार्थक क्रिया में गरदनाकार दिखलाया गया है।

---

१. अकर्मक क्रिया में कर्म की आवश्यकता नहीं होती और बगैर कर्म के ही सार्थक वाक्य बन जाते हैं। जैसे—गिर पड़ा।

२. सकर्मक क्रिया में कर्म की आवश्यकता होती है और बगैर कर्म के सार्थक वाक्य नहीं बन सकते हैं। जैसे—मैंने आम खाया और बगैर 'आम' शब्द के वाक्य पूरा नहीं होता।

३. प्रेरणार्थक क्रिया से जाना जाता है कि कर्ता किसी दूसरे से काम लेता है। जैसे—वह दिवाल मजदूरों से गिरवाता है।

---

१. क्रिया के मूल रूप को उच्चारण के विचार से बनाकर (१) में 'न' आँकड़ा, (२) में 'त' आँकड़ा, (३) में 'ऊँ' का चिन्ह (४) में 'ओ' का चिन्ह (५) में 'इए' का चिन्ह और (६) में 'वे' का चिन्ह लगाया गया है। इसके लिए निम्न चिन्ह निरधारित किए गए हैं। ये सदा लाइन पर लिखे जाते हैं। जैसे—नं० ८ चि० पृ० १७५

८— (१) 'न' का आँकड़ा (२) 'त' का आँकड़ा
(३) 'ऊँ' (४) 'ओ' (५) 'इए' (६) 'वे'

२. सकर्मक के दूसरे रूप का ध्वनि के अनुसार संकेत बनाकर सदा प्रथम स्थान में लिखना चाहिए क्योंकि साधारणतः इसमें प्रथम स्थान की मात्रा अवश्य रहती है। जैसे—नं० ९ चि० पृ० १७५

गिराना, चढ़ाना, दबाना, काटना, भागना, तोड़ता, खिलाता, खिलाना, आदि । यह मुहावरे से बड़ी सरलता से पढ़ लिये जाते हैं क्योंकि सकर्मक क्रिया में साधारणतः कर्म अवश्य मिलता है और कर्म मिलते ही क्रिया का सकर्मक रूप पढ़ना बहुत सरल हो जाता है। परन्तु यदि फिर भी पढ़ने में दिक्कत पड़ने की सम्भावना हो तो इन सकर्मक क्रियाओं के पास आरंभ में एक 'आ' को मात्रा रख सकते हैं। इससे मतलब बिलकुल साफ हो जायगा कि क्रिया सकर्मक के दूसरे रूप में है जैसे—चित्र नीचे
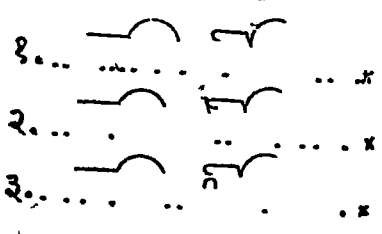
१.................. काम करने के लिए।

२.................. काम कराने के लिए।

३.................. काम करवाने के लिए।

३. प्रेरणार्थक क्रिया को भी प्रथम स्थान में लाइन के ऊपर लिखना चाहिए पर क्रिया के अंत में 'व' का चिन्ह अलग या मिलाकर अवश्य लिखना चाहिये। रूपों को ध्यान से देखिए और समझिये कि यह 'व' चिन्ह कहाँ पर किस प्रकार से मिलाया गया है जैसे—नं० ३ चि० ऊपर

———

(व)

वर्तमान—१

कर्तृवाच्य क्रिया के रूपों पर ध्यान दीजिये—

१—मैं खाता हूँ, वह खाता है, तुम खाते हो, हम खाते हैं।

'त' का लोप कर क्रिया के अंतिम व्यञ्जन को अद्धा कर देते हैं, फिर 'है' आदि को लगाकर मुहावरे से पढ़ लेते हैं। यह रूप लाइन के ऊपर, लाइन पर, या लाइन काट कर क्रिया के ध्वनि के अनुसार लिखा जाता है जैसे—नं० १ (१) चि० ऊपर

२—मैं खा रहा हूँ, वह खा रहा है, तुम खा रहे हो।

'रहा हूँ, रहा है, रहे हो' आदि के लिए क्रिया के अंतिम व्यञ्जन को दुगना कर दिया जाता है और फिर 'है' आदि लगाकर मुहावरे से पढ़ लिया जाता है। जैसे—नं० १ (२) चि० ऊपर

३—मैं खा चुका हूँ, वह खा चुका है, तुम खा चुके हो।

'चुका' के लिए 'क' से जहाँ तक हो क्रिया को काट दो और यदि सम्भव न हो तो उसके पास लिखो। इसमें 'च' का लोप हो जाता है। जैसे—नं० १ (३) चि० ऊपर

४—मैंने खाया है—क्रिया को पूरा लिखकर 'है' को मिला देना चाहिए। जैसे—नं० १ (४) चि० ऊपर

भूतकाल—२
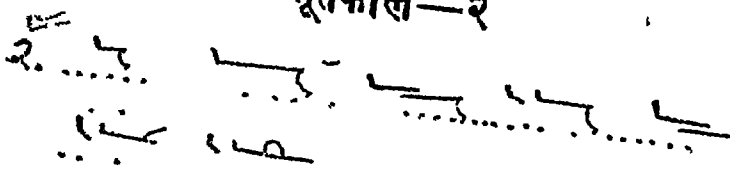
१. मैं खाता था— अद्धे से लिखा जायगा। नं० २ (१)
२. मैं खा रहा था—अन्तिम व्यञ्जन को दुगना कर 'था' लगाया जायगा। नं० २ (२)
३. मैं खा चुका था—'क' से काट कर 'था' लगा दिया गया। नं० २ (३)
४. मैंने खाया था—क्रिया को पूरा लिख कर 'था' को मिला दिया गया। नं० २ (४)
५. मैं खा चुका—'क' से 'चुका' सूचित होता है। नं०२ (५)
६. मैंने खाया— 'य' को लगा दें। नं० २ (६)
७. मैंने खाया होगा—क्रिया के पश्चात् 'ह और ग' का चिन्ह मिला दें। नं० २ (७)
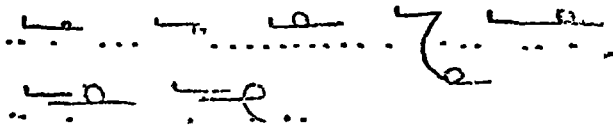
भूतकाल की बहुत सी क्रियायें स्वतंत्र रूप से 'गया' की क्रिया लगाकर बनाई जाती हैं। इसमें 'गया' शब्द के स्थान पर उसका पूरा चिन्ह न लिखकर 'व' के छोटे रूप से सूचित करते हैं। जैसे—नीचे
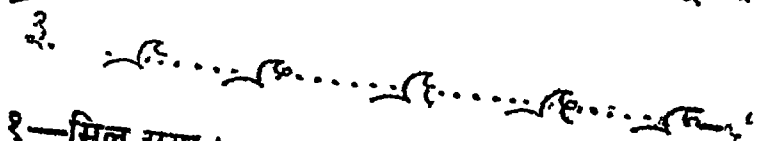
१—मिल गया। २—मिल गया है। ३—मिल गया था।
४—मिल गया होता। ५—मिल गया होगा।

'व' चिन्ह के अंदर 'स' वृत के साथ 'त' और 'ग' लगाने

स 'होता' और 'होगा' पढ़ा जायगा । अन्य स्थानों में पूरा '
वृत और 'त या ग' लगाया जायगा ।

भविष्यत काल—३

४. ....

१. मैं खाऊँगा—वृतवाली अनुस्वार की मात्रा लगाकर क्रिया को थोडा डैश के रूप में अक्षर के प्रवाह की तरफ बढ़ा दीजिये । नं० ४ (१)
२. मैं खाऊँ—'ऊ' का चिन्ह जैसे पहले बताया गया है लगाइए ।
३. मैं खाता हूँगा—'त' का लोप कर पूरा 'हूँगा' लिखिए ।
४. मैं खाता रहा हूँगा—ऐसी क्रियाओं में जहाँ 'त' के पश्चात् 'रहा' आये तो क्रिया के अंत में 'त' लगाकर दुगना कर दिया जाता है और फिर 'हूँगा' आदि जोड़ते हैं । ऐसा करने से 'खाता रहा हूँगा' और 'खा रहा हूँगा' का अंतर स्पष्ट हो जाता है । नं० ४ (४) और ४ (५)
५. मैं खा रहा हूँगा—'रहा' के लिए क्रिया के आखिरी अक्षर को दुगना करके 'हूँगा' जोड़ा गया । ४ (५)
६. मैं खा चुका हूँगा—'क' से चुका के लिए काट दिया और फिर 'हूँगा' जोड़ दिया । नं० ४ (६)
७. मैं खा चुका होता—'क+होता' चुका होता । नं० ४ (७)

क्रियाओं में 'हो' का प्रयोग

'हो' को निम्न प्रकार से सूचित करते हैं :—

1..

2..

3..(1)

(2)
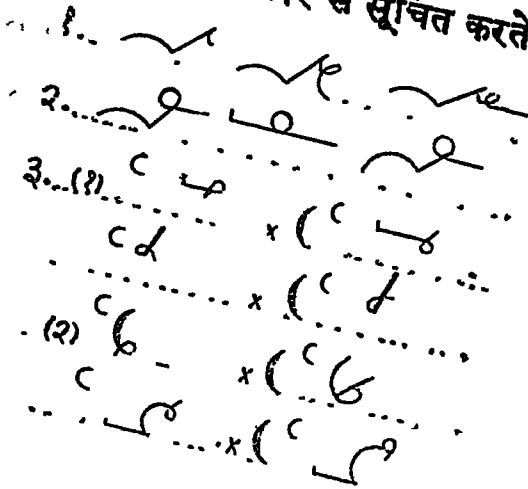
(१) क्रिया 'गया' के अन्दर 'स' वृत से जैसे—

नं० १ (१)—मारा गया।

१ (२)—मारा गया होता।

१ (३)—मारा गया होगा।

(२) क्रियाओं के बीच में 'ह' वृत से जैसे—

नं० २ (१)—मारा होगा।

२ (२)—खाता होगा।

२ (३)—लड़ा होगा।

(३) अंत में—

यदि (१) शब्द का अंतिम अक्षर सरल रेखा है तो ऊपर की तरफ जैसे—

नं० ३ (१)—वह खाता है। यदि वह खाता हो।

वह जाता है। यदि वह जाता हो।

यदि (२) शब्द का अंतिम अक्षर वक्र रेखा है तो अलग से 'ह' लगाना चाहिए। जैसे—चि० पृ० १८१ नं० ३ (२)—वह देता है। यदि वह देता हो। वह खेलता है। यदि वह खेलता हो।

कर्मवाच्य क्रियाएँ

१.

२

३

१—(१) मैं लाया जाता हूँ। ज+हूँ—जाता हूँ।
(२) मैं लाया जा रहा हूँ। 'रहा' के लिए 'ज' को दुगुना किया फिर 'हूँ' लगा दिया।
(३) कपड़ा लाया जाता होगा। ज+हो+गा—जाता होगा।
(४) यदि वह लाया जाता हो। ज+हो—जाता हो।
(५) तुम लाये गये हो। गये+हो—गये हो।

२—(१) तुम लाये गये थे। गये+थे—गये थे।
(२) छाता लाया गया होगा। गया+हो+ग—गया होगा।
(३) मैं लाया जाता था। ज+थ—जाता था।
(४) वह लाया जा रहा था। 'रहा' के लिए 'ज' को दुगुना किया फिर 'था' लगा दिया।
(५) वे लाये जाते। 'जा' और 'त' आँकड़े से जाते।

३-(१) मैं लाया गया होता। गया+हो+ता—गया होता।
(२) वह लाया जाता होता। ज+हो+ता—जाता होता।
(३) वह लाया जायगा। भविष्य काल।
(४) छाता लाया जाय तो मैं देखूँ। 'जाय' में 'या' का लोप।
(५) कपड़ा लाया जा चुका है। ज+क+है—जा चुका है।
[नोट—क्रियाएँ जो मिल सकें उन्हें मिला देनी चाहिए।]

कुछ और साधारण वाक्य

१. ....
२. ....
३. ....
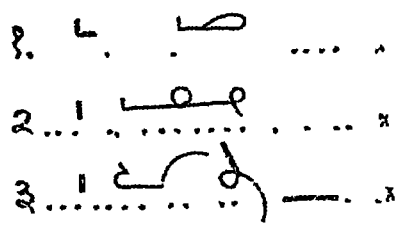
१. मुझको खाना चाहिए। अर्द्ध-वृत के आँकड़े को क्रिया में लगाने से 'चाहिए' लगता है। 'न' लोप हो जाता है। नं० १ चि० ऊ०

२. मैं खा सकता हूँ। 'सकता हूँ' क्रिया से मिला कर लिख सकते हैं। नं० २ चित्र ऊपर

३. मैं खेलने के लिए बाजार गया। क्रिया में 'ल' लगाने से 'लिए' पढ़ा जाता है। नं० ३ चित्र ऊपर

४. क्रिया या दूसरे शब्दों को कुछ वर्णाक्षरों से काटने पर विशेष अर्थ सूचित होता है। जैसे—
 १. क्रिया को 'ड' से काटने पर 'डाला' पढ़ा जायगा।
 २. " " 'र' " " 'रखा' " "

[नोट—र अलग लिखा जाने पर 'रहा' पढ़ा जाता है]

३. क्रिया को 'क' से काटने पर 'चुका' पढ़ा जायगा।
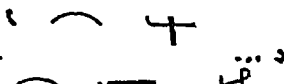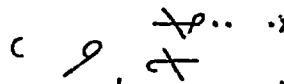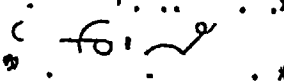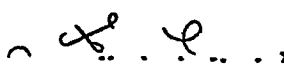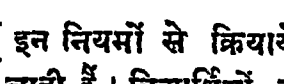
४. " " 'प' " " 'पड़ा' " "

५. " " 'ल' " " 'लगा' " "

[नोट—लाया के वास्ते 'ल' अलग से लिखा जाता है]

६. " " 'पस' (स - वृत) " उपस्थित " "

जैसे—चित्र नीचे

१. .... x मैंने आम खा डाला।

२. .... x आम घर पर रखे हैं।

३. .... x वह पानी पी चुका है।

४. .... x वह रास्ते में गिर पड़ा।

५. .... x वह कहने लगा मैं मारूँगा।

६. .... x तुम वहाँ उपस्थित नहीं थे।

[इन नियमों से क्रियायें बड़ी सरलतापूर्वक लिखी और पढ़ी जाती हैं। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे इन्हीं नियमों के आधार पर क्रियाओं को खूब अच्छी तरह से अभ्यास कर लें क्योंकि हिंदी में क्रियाओं का स्थान सबसे मुख्य स्थान है। इसके अलावा क्रिया के बहुत से और भी दूसरे रूप मिलेंगे। उनमें से अधिकांश का वर्णन आगे के वाक्यांश के परिच्छेद में मिलेगा। विद्यार्थियों को चाहिए कि ऐसे चिन्ह वे स्वयं बनाने का प्रयत्न करें]

संधि

संधि का हिन्दी भाषा में बहुत अधिक प्रयोग होता है जिसके कारण शब्द अपने नियमित रूप से बहुत बढ़ जाते हैं और सांकेतिक लिपि में पूरे-संकेत लिखने पर गति में रुकावट होती है। इसलिए निम्न नियमों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इन नियमों के अनुसार लिखे जाने पर शब्द बहुत छोटे संकेतों में लिखे जा सकते हैं।

संधि में कम से कम दो शब्द होते हैं। एक, जिसमें संधि की जाती है और दूसरा, जिसकी संधि की जाती है। जिसमें संधि की जाती है, उस शब्द को यथानियम पूरा लिखना चाहिए पर जिस शब्द की संधि की जाती है उसका पहला अक्षर जिस शब्द में संवि की जाती है उसके पहले या बाद—पहले, द्वितीय या तृतीय स्थान पर—शब्द के पास लिखना चाहिए।

१—पहले—आरंभ में लिखने से 'ए'
बीच " " " 'ए या औ'
अंत " " " 'ई'
२—बाद—आरंभ में लिखने से 'आ'
बीच " " " 'ओ'
अंत " " " 'ऊ'

आड़ी रेखाओं में 'पहले' ऊपर की तरफ और 'बाद' नीचे की तरफ समझा जाता है। इन संधियों का प्रयोग उन शब्दों के लिए न करना चाहिए जो छोटे हों और आसानी से लिखे जा
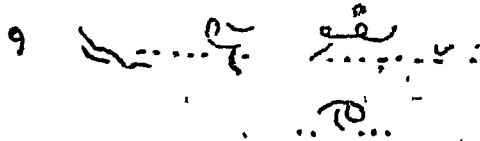
पहला के लिये शब्द चिह्न नं० १ बना है। दूसरा, तीसरा, चौथा इस तरह लिखा जाता है। जैसे नं० २ चि० पृ० १८६

पाँचवाँ, छठवाँ, सातवाँ आदि इस तरह लिखा जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १८६

[नोट—संख्याओं के बाद जो आठ का सा चिन्ह बना है वह 'व' का चिन्ह है।

दोनों, तीनों, चारों आदि को 'ओ' की मात्रा लगाकर बनाते हैं। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १८६

दुगुना और तिगुना इस प्रकार लिखा जाता है जैसे—नं० ५ नीचे 'न' चिन्ह रखते हैं। चि० पृ० १८६

सैकड़े के लिए 'स'—नं० ६–१ ; चि० पृ० १८६

हज़ार के लिए 'ह'—नं० ६–२ ;

लाख के लिए 'ल'—नं० ६–३ ;

करोड़ के लिए 'क'—नं० ६–४ ;

अरब के लिये 'र' (नी)—नं० ६–५ ;

खरब के लिए 'ख'—नं० ६–६ और

संख्य के लिए 'सङ्क'—नं० ६–७ लगता है।

दस हजार, दस लाख आदि के लिये सांकेतिक चिन्ह के अंत में 'स' वृत लगा दिया जाता है। जैसे—नं० ६–८ व ६–९ ; दस लाख, दस हजार आदि। चि० पृ० १८६

विराम

विराम अधिकतर हिन्दी संकेत के लेखकगण स्वयं ही लगाते हैं। इनका प्रदर्शन कर समय व्यर्थ नहीं खोया जाता पर यदि समय मिले तो आवश्यकतानुसार—

(१) अर्द्धविराम या कामा को 'उ' की मात्रा से सूचित करते हैं।

(२) दोहराने के लिए इस चिन्ह 'S' का प्रयोग होता है।

(३) बात-चीत में डैश के स्थान पर इस तरह—का चिन्ह लगाया जाता है।

(४) विराम चिन्ह के लिए एक छोटा सा क्रास '×' लाइन पर लगाते हैं।

दूसरे चिन्ह नहीं लिखे जाते और मतलब से समझे तथा लगाये जाते हैं।

अभ्यास—४६

डैश से मिले हुए शब्दों को एक साथ लिखो—

१. युवावस्था मानव जीवन का वसंत है। उसे पाकर मनुष्य मतवाला हो-जाता है। इस अवस्था में न उसे कारागार का डर रहता-है, न वह हितकर कार्यों से भागता है। वह हानिकारक कामों से बचता-और गुणकारी कामों में लगता है। वह अपने को धर्मशील, तथा बलशाली बनाना-चाहता-है और संतापहारी कार्य से दूर रहकर मनोहर कार्यों को करना-चाहता-है।

यह तेलवाले, आमवाले, कोचवान, इक्केवान, चरवाहे आदि अधिकतर बुद्धिहीन होते हैं। इन लोगों का व्यवहार संतोषजनक नहीं होता। तेलवालों के तेल में अक्सर इतनी मिलावट रहती है कि चिकनाहट तक नहीं रह-जाती। दूधवाले तो कभी कभी दुगना या तिगुना तक पानी मिलाते हैं, यहाँ तक-कि दूध का मीठापन तक निकल-जाता-है। इससे उनका अपमान होता-है और यही उनके दासत्व की निशानी है। ऐसे कामों के लिए भी अक्लमन्द नहीं कहा-जा सकता। अगर वे ऐसा न करते तो शायद अपने जीवन को सुखपूर्वक-बिता सकते तथा धनपूर्ण और कटुता-रहित बना-सकते।

अनुदिन मनुष्य को इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि पराजय तथा अपकीर्ति न हो चरित्र निर्मल तथा निष्पाप बना रहे, दुर्जन से बचा रहे तथा सज्जन का साथ हो। इससे मनुष्य आजीवन सुखी रह सकता-है। उसको दूसरों के साथ उपकार तथा इनसाफ करना-चाहिए।

तुम्हारा हर वक्त-बाहर रहना हमें नापसन्द है। यह तुम्हारी प्रतिदिन की आदत सी हो-गई-है। बदमाश तथा नालायकों का समागमन हो गया है। यह चिरकाल तुम्हारे जीवन-यात्रा को सफल होने से रोकेगा। इसके कारण तुम अभी से दुष्कर्म में फंस गये और तुम्हारी आदत कुचाल की-पड़-गई है। अब न तुम पेट भर खाते हो; न तुमको सहोदरों का ख्याल है। हर रोज बस हमजोलियों के साथ फिरा-करते हो। यदि तुम यथाशक्ति अपने को इन कमबख्तों से दूर रखने का प्रयत्न न-करोगे, तो तुम्हारा हाल बेहाल हो जायगा, तुम कमज़ोर हो जाओगे और विकल रहोगे या बाक़ायदा कुलांगार की तरह फिरा-करोगे।

दूसरा भाग

आगे बढ़े हुए छात्रों के लिए

[अब तक जो कुछ आपने पढ़ा है उसका अच्छा अभ्यास करने पर आपकी गति कम से कम ११५-१२५ शब्द प्रति-मिनट की अवश्य हो जायगी। चाहे किसी स्थान पर कैसा ही शब्द क्यों न बोला जाय आप उसको सरलता से लिख लेंगे। हमारा उद्देश्य यह है कि हिन्दी के सारे शब्द केवल दो वर्ण और आँकड़े आदि के प्रयोग से ही लिखे जा सकें। इसलिए हिन्दी और उर्दू के करीब १०,००० (दस हजार) शब्दों को मथने के पश्चात् जिनकी रेखा दो वर्णों से बढ़ती थी उनके संक्षिप्त-संकेत बना दिये गये हैं। दूसरे भाषा के प्रचलित वाक्यों को भी एक साथ लिखने के नियम तथा एक बृहत सूची आगे दी गई है। इनका अच्छा अभ्यास कर लेने पर आपकी गति फौरन ही १५० शब्द प्रतिमिनट पहुँचेगी।]

कुछ विशेष नियम

१. जब आरंभ, बीच या अंत में दो 'श' एक साथ आवें तो दोनों एक के बाद दूसरे वृत बना कर लिखे जा सकते हैं। पहला वृत अपने स्थान पर लिखा जाय दूसरा वृत सुविधानुसार किसी तरफ भी लिखा जा सकता है। जैसे नं० १ चित्र नीचे
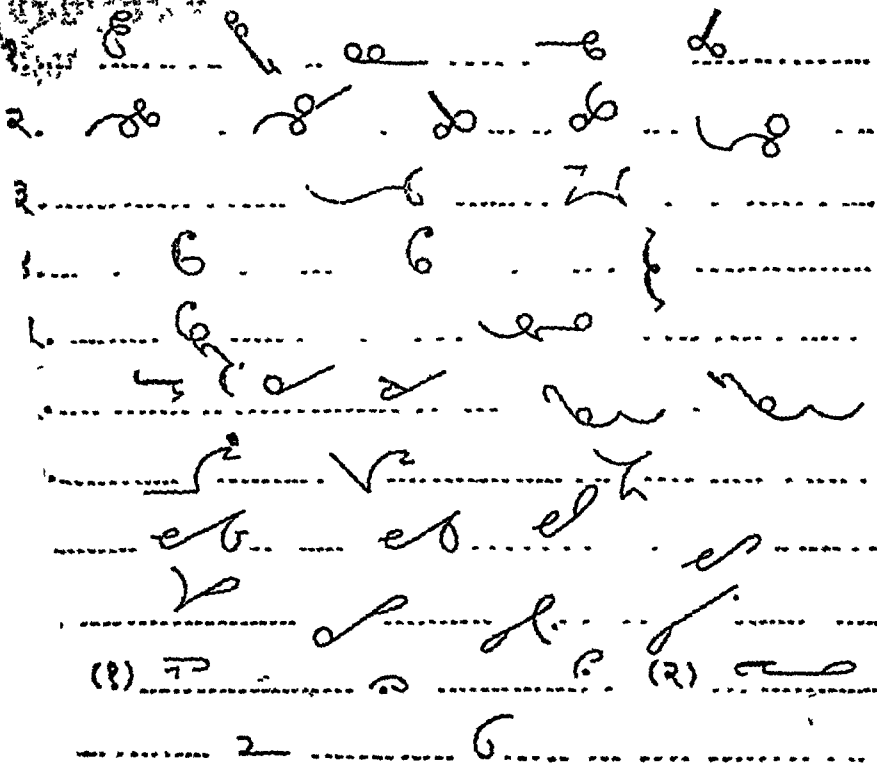
१—सुरताना, सुशोभित, शशक, कोशिश, जासूस

'ह' वृत के बाद 'स' वृत और 'स' वृत के बाद 'ह' वृत भी इसी प्रकार लिखे जा सकते हैं। यहाँ भी पहला वृत यथास्थान होगा। दूसरा और तीसरा वृत किसी

तरफ भी लिखा जा सकता है। बीच की मात्रा का विचार नहीं किया जाता। जैसे—नं० २ चि० पृ० १६१

२— महसूस मसेहरी बहस इतिहास ईसामसीह

३. तवर्ग के अक्षर अंत में 'म' के पश्चात् कभी कभी ऊपर भी लिखे जाते हैं। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १९१

३— नामजद समा

४. यदि 'स' वृत से छोटा वृत जिसमें वृत के बीच की जगह करीब १ निकल सी जावे आरंभ में लगा दी जाय तो 'सन्' और बीच में लगा दी जाय तो 'अनुस्वार' की मात्रा पढ़ी जाती है। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १६१.

४— संदेह संतोष धन्धा

५. 'स' वृत के बाद 'र' आॅकड़े के व्यंजन अगर न मिलें तो 'स' वृत को बढ़ा कर मिला सकते हैं। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १६१

५— संतोषप्रसाद निष्कर्ष

६. 'अ' की मात्रा व्यंजन, वृत या आॅकड़े के पहले एक मोटे लम्बाकार डैश के रूप में जोड़ी भी जा सकती है। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १६१

६— आज्ञा साधारण असाधारण प्रसन्न अप्रसन्न

७. 'ई' की मात्रा अन्त में इस प्रकार भी जोड़ी जा सकती है। जैसे—न० ७ चि० पृ० १६१

७— कीली पीली नीली

८. जब 'व' में 'ह' को लगाना हो तो 'स' वृत की तरह लगाते समय पहले एक डैश सा लगा दो। जैसे—नं० ८ चि०,पृ० १६१

८— हवालात हवलदार हवादार हवन

९. यदि 'स्त' का आॅकड़ा सरल रेखाओं के आदि या अन्त में क्रमशः 'र' या 'न' के स्थान पर आवे तो ये

'स्त' आदि को सूचित न कर 'फ' को सूचित करेगा।
जैसे—नं० ९ चि० पृ० १६१
तरफ शरीफ फुरसत फुरेरी
[नोट—तरफ का शब्द-चिन्ह बन चुका है]

१०. अँग्रेजी शब्दों में अर्द्ध को काम में लाने से अंत में 'ट' के अलावा 'ड' भी लगता है और ये अत के 'न' आँकड़े के बाद पढ़ा जाता है। जैसे—नं० १०—(१) चि० पृ० १६१
काउन्ट मेन्ट लैन्ड
और इसी तरह अँग्रेजी शब्दों के अंत में दुगने संकेतों के बनाने से 'टर' 'डर' के अलावा 'चर' भी लग जाता है। जैसे—नं० १०—(२) चि० पृ० १६१
एग्रिकलचरिस्ट

११. 'क और ल' में 'व' इस प्रकार भी लगता है।
जैसे—नं० ११ चि० पृ० १६१
वक वल

वर्णाक्षरों से काटने पर नये शब्द

भाषा में संस्थाओं, पदाधिकारियों, सभा या समितियों के कुछ ऐसे नाम आते हैं जिनका प्रयोग एक तो बहुतायत से होता है और दूसरे इसके साथ के शब्दों को पढ़ते ही पता लग जाता है कि दूसरा शब्द क्या होना चाहिए। ऐसे शब्दों को पूरा न लिख कर बल्कि जिनके साथ यह आते हैं उनको इन शब्दों के प्रथम वर्णाक्षर से काट देते हैं और यदि काटना सुविधाजनक नहीं होता तो साथवाले शब्द के पहले या बाद में जितने पास हो सकता है लिख देते हैं। इन वर्णाक्षरों को पहिले लिखे या काटे जाने पर पहिले, और बाद मे लिखे या काटे जाने पर बाद में पढ़ा जाता है। जैसे—

(२)

१. 'म' से मंडल—नरेन्द्रमंडल, मंत्रिमंडल, युवक मंडल
" " मजिस्ट्रेट—डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट
२. र (ऊ) से प्रारंभ में राज्य—राजनीतिक, राज्य-शासन
३. 'सप्र' से सुपरिन्टेन्डेन्ट—सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस
४. व से बैंक, बिल—इलाहाबाद बैंक, एग्रीकल्चरिस्ट रिलीफ बिल
५. प्र से परिषद — साहित्य परिषद
आरंभ में प्रधान— प्रधानाध्यापक, प्रधानमंत्री
६. 'ग' से गवर्नमेन्ट— प्रांतीय गवर्नमेन्ट
७. 'विभ' से विभाग— पुलिस विभाग
८. 'प' से पार्टी — मजदूर पार्टी
९. 'द' से दल — मजदूर दल
१०. 'रह' से रहित — प्रभाव रहित
११. 'सम' से समिति — साहित्य समिति, परीक्षा समिति
१२. 'ड' से डिपार्टमेंट — पुलिस डिपार्टमेंट

(२)

इसी तरह विशेषण या भाववाचक संज्ञा बनाने में भी इस नियम का पालन किया जाता है। जैसे—चित्र बाँए तरफ

१. 'त' से आत्मक — सत्तात्मक, संशयात्मक
२. 'प' से उत्पादक — प्रभावोत्पादक
३. 'क' से इक — दैनिक, मासिक
४. 'गन' से गण — बालकगण
५. 'द' से दायक — लाभदायक
६. 'श' से श्वरीय — अखिलेश्वरी, मातेश्वरी

———

वाक्यांश

वाक्यांश से हमारा वाक्य के उन अंशों से प्रयोजन है जो किसी पूरे वाक्य के बोलने में अधिकतर प्रयोग किए जाते है। जैसे कुछ शब्दों के लिए जो वाक्य में बार बार दिखाई पड़ते हैं विशेष सकेत निरधारित किये गये हैं और उन्हें शब्द-चिन्ह कहते हैं, उसी प्रकार वाक्यांशों के निरधारित चिन्हों को वाक्यांश-चिन्ह कहते हैं। इनको समझकर बनाने का अभ्यास कर लेने से लेखकों की गति में पर्याप्त वृद्धि प्रारम्भ हो जाती है। कम से कम १५ शब्द प्रति मिनट बढ़ जायगी। नियम और उदाहरण आगे दिये जाते हैं। यह नियमानुसार दो एक अक्षरों को लोप कर बनाये जाते हैं।

कुछ जुट शब्द

(१)

हिन्दी मे कुछ ऐसे जुट-शब्द हैं जो प्रयोग में तो एक साथ आते हैं पर अर्थ में बिलकुल भिन्नता रहती है जैसे—आदि-अंत, क्रय-विक्रय, आदि। इनको विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

इनके लिखने का ढंग यह है कि पहला शब्द तो पूरा लिखा जाता है पर दूसरा शब्द पूरा न लिखकर उसके पहले व्यंजन से पहले लिखे हुए शब्द को काट देते हैं जैसे अगर आकाश और पाताल लिखना है तो आकाश को पूरा लिखकर उसे 'प' से काट देने पर वह आकाश-पाताल पढ़ लिया जायगा। देखिये अगले चित्र का पहला शब्द।

१.

२.

३.

४.

५.

[नं० १ चि० पृ० १६७]

१. आकाश-पाताल
२. जीवन-मरण
३. शत्रु-मित्र
४. स्त्री-पुरुष
५. दिन-रात
६. लाभ-हानि
७. शुभ-अशुभ
८ धर्म-अधर्म
९. न्याय-अन्याय
१०. चर-अचर
११. उचित-अनुचित
१२. सोच-विचार
१३. खेल कूद
१४. झट-पट
१५. नट-खट
१६. जय-पराजय
१७. खटपट
१८. क्रय-विक्रय
१९. मेल-मिलाप
२०. आँधी-पानी
२१. स्वर्ग-नर्क
२२. सुख-दुख

कुछ जुट शब्द ऐसे होते हैं कि पहले शब्द में जोर देने के लिए प्रयोग होते हैं और उनके अर्थ में भिन्नता नहीं होती जैसे—धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी आदि । इनको अवधारित [अवधारण—Emphasis = जोर देना] शब्द कहते हैं ।

यहाँ भी पहले शब्द को लिखकर उसके बाद यह 'S' चिन्ह लगा देने से पहला शब्द दो बार पढ़ा जायगा । जैसे—नं० २ चि० पृ० १९७

२— धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा
जल्दी-जल्दी बड़े-बड़े

कभी-कभी बीच में कोई विभक्ति या 'ही' आती है और विभक्ति के बाद ही पहला शब्द फिर आता है । ऐसे स्थान पर यह सूचित करने के लिए कि विभक्ति के बाद शब्द दोहराया गया है अगले शब्द के पहले व्यंजन में एक छोटा

सा डैश लगाकर शब्द काटा जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १६७

३— सारा का सारा   दिन पर दिन

पर यह सूचित करने के लिए कि अगला शब्द 'ही' के बाद आया है, पहले शब्द के अंत में 'स' वृत लगाकर अगले शब्द का अंतिम व्यञ्जन उसमें मिला देते हैं। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १९७

४— हरियाली ही हरियाली   पानी ही पानी

यहाँ पानी लिखकर उसमें उसके अंत में 'स' वृत लिखा गया है और फिर अगले शब्द का अंतिम अक्षर 'न' मिला दिया गया है।

यह वृत 'ही' के अलावा 'हा, सा, सी' और कभी कभी 'और' को भी सूचित करता है। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १६७

५— ज्यादा से ज्यादा   कम से कम

वाक्यांश—१

१. होती है
२. लगती है
३. हो जाती है
४. होती रहती है
५. आती ही रहती है
६. यह नहीं है
७. यह आवश्यक है
८. यह देखा जाता है
९. यह सुना जाता है
१०. यह तो निश्चय ही है
११. आशा की जाती है
१२. आशा नहीं की जा सकती
१३. अधिक से अधिक
१४. अधिकाधिक
१५. चाहनेवाले
१६. चुपके से
१७. डील-डौल
१८. साफ-साफ
१९. तितर-बितर
२०. प्रातःकाल
२१. धूमधाम से
२२. अन्य प्रकार
२३. आज प्रातःकाल
२४. फल-फूल
२५. बाप-दादा
२६. बाल-बच्चे
२७. हाल-चाल
२८. उत्तरोत्तर
२९. जाँच-पड़ताल
३०. सुख-शांति
३१. साथ ही साथ
३२. हाथों हाथ
३३. एक दूसरे
३४. एक से अधिक
३५. लार्ड तथा लेडी
३६. भाई तथा बहनों

૧
૨
૩
૪
૫
૬
૭
૮
૯
૧૦
૧૧
૧૨
૧૩
૧૪
૧૫
૧૬
૧૭
૧૮
૧૯
૨૦
૨૧
૨૨
૨૩
૨૪
૨૫
૨૬
૨૭
૨૮
૨૯
૩૦
૩૧
૩૨
૩૩
૩૪
૩૫

वाक्यांश—२

१. बहुत से लोग
२. बहुत अच्छा
३. बहुत ज्यादा
४. सबसे पहले
५. सबसे बड़ा
६. सबसे बुरा
७. सबसे अच्छा
८. एकाएक
९. समय समय पर
१०. बात बात में
११. भाषण देते हुए
१२. उत्तर देते हुए
१३. देते हुए कहा
१४. भाषण देते हुए कहा
१५. उत्तर देते हुए कहा
१६. पहले पहल
१७. पहले ही से
१८. सर्व साधारण
१९. सर्व प्रथम
२०. जहाँ-तहाँ
२१. जब तक
२२. तब तक
२३. अब तक
२४. अब तक तो
२५. इसके बगैर
२६. जिसके बगैर
२७. उसके बगैर
२८. अभी तक
२९. ज्यों का त्यों
३०. कम से कम
३१. ज्यादा से ज्यादा
३२. रातो-रात
३३. दिनो-दिन
३४. दिन ब दिन
३५. कभी कभी

अभ्यास—५०

आशा-की-जाती-है कि लार्ड-और-लेडी को अधिकाधिक चाहनेवाले आज-प्रातः-काल-अपने बाल-बच्चे, भाई-बहिन और बाप-दादों को साथ-ही-साथ लिये बड़ी धूम-धाम-से वायसराय भवन में आये होंगे। ऐसे समय-में प्रायः यह-देखा जाता-है कि जनता भी अधिक से-अधिक तादाद में जमा-हो-जाती है। इस-बार-तो यह सुना-जाता है कि गेट पर एक-से-अधिक पहरेदार एक दूसरे को धक्के देनेवाले लोगों को चुपके से तितर-बितर कर देते थे। परन्तु जो डील-डौल से साफ़-साफ़ भले आदमी मालूम-देते हैं उन्हें रोकने की आशा-नहीं-की-जा-सकती।
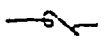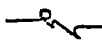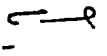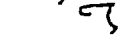
इस-समय बहुत से-लोगों ने लार्ड और लेडी लिंलिथगो का फलफूल तथा अन्य-प्रकार की चीजों से स्वागत किया। इनका उत्तर देते हुए लार्ड महोदय ने कहा कि आजकल यह आवश्यक है कि प्रातःकाल होते-ही हम देश-विदेश के हाल चाल पढ़े। ऐसी घटनायें आये दिन होती-हैं या होती-ही-रहती हैं और उनकी खबर भी हाथों-हाथ आती ही-रहती-है विशेष जाँच-पड़ताल करने पर पता-लगता है कि संसार की सुख-शान्ति उत्तरोत्तर नाश की ओर बढ़ती-जाती-है। ऐसी दशा में यह तो-निश्चय-ही है कि भावी वैदेशिक हलचल में भारतवर्ष बिलकुल चुपचाप नहीं बैठ सकता।

अभ्यास—५१

(अ) वैसे तो बहुत-से-लोग राष्ट्रपति की हैसियत से भारत के बड़े-बड़े शहरों में समय-समय पर भ्रमण करते-रहे हैं परन्तु पण्डित जी ने ही सर्व-प्रथम रातों-रात और दिनो-दिन गाँव में घूमकर सब-से-बड़ा और सब-से-अच्छा तूफानी दौरा किया-है। सर्वसाधारण जनता में पहिले पहिल कांग्रेस का बिगुल फूंकने का श्रेय इन्हें दिया जाय तो अनुचित न-होगा। गरीब किसानों ने पहिले-से सिर्फ जवाहरलाल जी का नाम सुना-था। परन्तु जब-तक वे उनके बीच में नहीं-गये-थे तब तक वे बेचारे न उन्हें समझते थे और न कांग्रेस को। पण्डित जी की बात-बात-में जादू का असर है। अतः इनकी बातें सुनकर पहिले तो वे लोग एकाएक बहुत ज्यादा अचंभे में-पड़ गये थे बाद उन्हें पहिले पहिल मालूम-हुआ-कि अब तक हम अँधेरे में थे। सचमुच भारत हमारा और हम भारत के-हैं। कम से-कम वे समझने तो लगे कि स्वतंत्रता हमारा जन्म-सिद्ध-अधिकार-है और इसके-बगैर हम पशुओं से भी खराब-हैं।

(ब) टंडन जी ने भाषण देते-हुए-कहा-कि जहाँ तहाँ से दिन-ब-दिन आनेवाली खबरों से मालूम होता-है-कि आगामी युद्ध ज्यादा-से-ज्यादा एक-दो वर्ष दूर है। इसलिए भारत को सब से पहले हिन्दू-मुस्लिम एकता की बड़ी आवश्यकता-है। सब से बुरा तो यह है कि हिन्दू-मुसलमान यह जानते हुए भी अभी तक ज्यों का त्यों ३६ का नाता बनाये हैं। दूसरी बात-है खादी और देशी माल को व्यवहार में लाने की। जिसके बगैर हमारे देशी धंधे नहीं पनप सकते, उसके बगैर हम आजादी भी नहीं हासिल कर सकते।

वाक्यांश—३

१. जिस समय
२. इस समय
३. उस समय में
४. वैसे ही
५. जैसे तैसे
६. इसके बाद
७. इसी के बाद
८. प्रतिदिन
९. सदा के लिए
१०. हमेशा के लिए
११. उनके लिए
१२. इनके लिए
१३. इस सम्बन्ध में
१४. रहते हैं
१५. होगा
१६. हो गई
१७. हो जायगी
१८. आमने सामने
१९. इधर-उधर
२०. इस प्रकार
२१. इसी प्रकार
२२. उसी प्रकार
२३. उस प्रकार
२४. किस प्रकार
२५. किसी प्रकार
२६. इन सब के
२७. इसी के यहाँ से
२८. उसी के यहाँ से
२९. कर के
३०. करने से
३१. करेगा
३२. कर चुका है
३३. ×
३४. ×
३५. कर दिया
३६. कर दिया था
३७. करता था
३८. कर देता था

वाक्यांश—४

१. चला करता है
२. चला जाता है
३. आम तौर पर
४. एक बार
५. कौन सा
६. चिंता से रहित
७. जाने पाता था
८. क्या करता है
९. इतना ही नहीं
१०. इतना ही नहीं बल्कि और
११. हर तरह से
१२. सब तरह से
१३. बहुत तरह से
१४. जन समूह
१५. जन साधारण
१६. जन संख्या
१७. जन समाज
१८. जन्म-भूमि
१९. ऐसा ही होता है
२०. ऐसा ही होना चाहिए
२१. इसी तरह होना चाहिए
२२. रहना चाहता है
२३. जान लेना चाहिए कि
२४. हम लोगों को चाहिए कि
२५. बना देना चाहती है
२६. छोटे-मोटे
२७. भरण-पोषण
२८. बात-चीत
२९. एक से ही
३०. घटा-बढ़ा
३१. कहना-सुनना
३२. जवाब तलब
३३. हिन्दू-मुसलमान
३४. हिन्दी-उर्दू
३५. हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी
३६. हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

अभ्यास—५२

कुछ माह पहिले जैसी रेल की दुर्घटना बिहटा में हुई प्रायः वैसा-ही या उससे भी अधिक भीषण काण्ड आज सुबह बमरौली में हुआ। कहा-जाता-है कि जिस समय लगभग ५॥ बजे सुबह बमरौली स्टेशन पर एक मालगाड़ी लूप लाइन पर ली-गई उस-समय तूफान-मेल के लिये सिगनल न गिराया गया-था। इस-समय घना कुहरा होने के कारण मेल के ड्राइवर को कुछ दिखाई न-पड़ा। जैसे-ही मालगाड़ी रुकनेवाली थी वैसे-ही तूफान-मेल का आमना-सामना होने से दोनों गाड़ियाँ बुरी-तरह-से लड़ गईं। फलतः उसी-समय कई आदमी सदा के लिये सो गये और बहुतेरे इस प्रकार से घायल हो गये कि उनका बिलकुल अच्छा होना हमेशा-के-लिये असम्भव सा हो-गया-है। इस-समय बमरौली से सर्वप्रथम डिविजनल-सुपरिन्टेन्डेन्ट को सूचना कर दी-गई है और वे सब से पहिले घटनास्थल-पर पहुँचे। इसके-बाद लगभग ७ बजे एक रिलीफ ट्रेन वहाँ पहुँच-गई। तत्पश्चात् मोटरवालों से खबर-मिलने-पर शहर में यह समाचार उसी प्रकार से फैला जिस-प्रकार से जंगल में आग फैलती-है। फिर क्या-था। इधर उधर से स्वयसेवकों के दल जिस किसी-प्रकार बन सका उसी-प्रकार पीड़ितों की सहायता के लिए पहुँचे। इन सबने सबसे पहले मुर्दों और घायलों को निकालकर आवश्यक प्रबन्ध किया। जो सख्त घायल थे उनके लिए लारियाँ बुलाकर उन्हें अस्पताल भेजा। इसी-प्रकार जो बच-गये-थे उनके लिये भी यथोचित प्रबन्ध कर-दिया-गया। इसी-समय हजारों आदमी इस दर्दनाक दृश्य को देखने और यह-जानने-के लिये पहुँचे कि दुर्घटना किस-प्रकार और किस कारण से हुई। इस-सम्बन्ध-में सरकारी-ओर-से भी जाँच शुरू हो-गई-है। जिनकी जान किसी-प्रकार से-भी बच-सकी थी उनके चेहरों की ओर गौर-करके देखने से मालूम-होता-था कि वे सब अनन्य भक्ति से ईश्वर को धन्य-धन्य मना-रहे-थे।

अभ्यास—५३
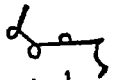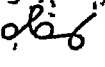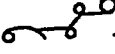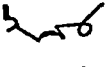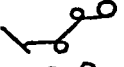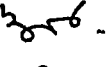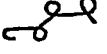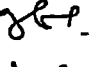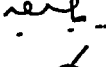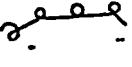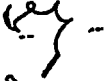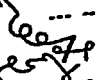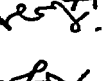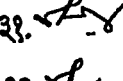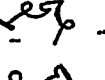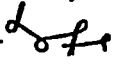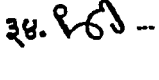
काल-चक्र सदा बेरोक-टोक अपनी गति से चला-करता-है। संसार की कोई भी शक्ति इसके सम्मुख जरा भी नहीं टिक-सकती। कौन आता-है? कौन जाता है? कौन सा आदमी क्या काम करता है? इन सबसे मानों मतलब होते-हुए भी कुछ मतलब नहीं है। मालूम-होता-है कि इस चिंताकुल संसार में वह बिलकुल चिन्ता-रहित-है। उसे किसी की परवाह नहीं परन्तु सबको उसकी परवाह-है। इतना-ही नहीं सारी सृष्टि, सम्पूर्ण जन समाज जन संख्या का जरा भी ख्याल न रखकर हर तरह-से अथवा सब-तरह-से मूक बकरी की तरह उसके इशारे-पर नाचता-है। क्या पता कि वह किस-समय क्या करता-है? कौन जानता-था कि आज हमारे पूज्य राष्ट्रपति की मातेश्वरी एकाएक हमसे सदा-के-लिये बिलग-हो-जायँगी। श्रीमती स्वरूप-रानी जन्मभूमि की सच्ची पुत्री, आदर्श भारतरमणी, जन साधारण की माता उन कतिपय महिलाओं में से थीं जिनने देश के लिए अपना तन मन धन सब कुछ हँसते-हँसते न्योछावर कर-दिया-है। इतना-ही-नहीं बल्कि उनने अपने इकलौते पुत्र को भी भारत माता की भेंट-कर-दिया है। कैसा अपूर्व त्याग है? हमारी माताओं-और बहिनों को इनके जीवन से शिक्षा ग्रहण-करना-चाहिये। उन्हें अच्छी-तरह जान-लेना-चाहिये-कि सिर्फ अपने कुटुम्ब का भरण-पोषण और देख-भाल ही उनके जीवन का लक्ष्य नहीं-है। बल्कि देश-सेवा उनका ही सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य है। यह सर्वथा उचित ही-था कि छोटे-मोटों की तो बात ही क्या-है बड़े-बड़े हिन्दू-मुसलमान लोगों ने अपने भेद-भाव भुलाकर बिलकुल एक मन से शोक और श्रद्धा-प्रगट की। सचमुच ऐसे मौके पर तो ऐसा-होता-ही-है अथवा ऐसा होना-ही-चाहिये। अब वह समय आ-गया-है जब हम-लोगों को चाहिये कि आम-तौर-पर हिन्दू-मुस्लिम आपस-में एक हो जावें। व्यर्थ में लड़ने-झगड़ने, कहने-सुनने और धर्म के मामलों पर

૧.
૨
૩.
૪.
૫
૬.
૭.
૮
૯
૧૦
૧૧
૧૨.
૧૩
૧૪
૧૫.
૧૬.
૧૭
૧૮
૧૯.
૨૦.
૨૧
૨૨.
૨૩
૨૪
૨૫.
૨૬.
૨૭.
૨૮
૨૯
૩૦
૩૧
૩૨
૩૩
૩૪

गरमागरम बात-चीत करने तथा एक-दूसरे से जवाब-तलब करवाने में शक्तिनाश करना सर्वथा हानिकारक है। हिन्दू महासभा, मुस्लिम-लीग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन ऐसी भारत-व्यापी संस्थाओं को चाहिये कि वे हिन्दू-मुसलमान, हिन्दी-उर्दू और हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी के झमेलों में न पड़ स्वतंत्रता के मैदान में एक होकर उतर आवें।

वाक्यांश—५

१.	मामूली तौर पर	१८.	जो कुछ किया है
२.	जितने समय के लिए	१९.	कहा जा रहा था
३.	किये जाने योग्य	२०,	जहाँ तक हो सके
४.	होने या न होने से	२१.	मुझको यह कहना है
५.	जब चाहो तब	२२.	पहले ही कहा जा चुका है
६.	संदेह नहीं है	२३.	जैसा पहले कहा जा चुका है
७.	हो गये होते	२४.	अब हमें मालूम हुआ है
८.	कह सकती है	२५.	तुमने समझ लिया है
९.	ऊपर कही गई	२६.	तुमने देख लिए हैं
१०.	सारांश यह है	२७.	क्या तुम बता सकते हो
११.	रहने वाले हैं	२८.	क्या तुम कह सकते हो
१२.	कहा जाता है	२९.	कुछ नहीं हो सकता
१३.	कहीं ऐसा न हो	३०.	हो ही कैसे सकता है
१४.	थोड़े दिनों के बाद	३१.	बतला देना चाहता हूँ
१५.	कोई नहीं है	३२.	कह देना चाहता हूँ
१६.	कोई आवश्यकता नहीं है	३३.	हम नहीं कह सकते
१७.	एक तो यह है ही	३४.	सबसे बड़ी बात यह है कि

---

१   १८.
२.   १६
३.   २०.
४.   २१
५   २२
६.   २३
७.   २४
८.   २५
६.   २६.
१०.   २७.
११.   २८.
१२.   २६
१३.   ३०
१४.   ३१.
१५.   ३२
१६.   ३३
१७.   ३४.

वाक्यांश—६

१. जैसा पहले कह गया था।
२. मैं तो पहले ही कहता था।
३. समर्थन करते हुए कहा।
४. उपस्थित करते हुए कहा।
५. करते हुए कहा कि।
६. जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं।
७. आवश्यकता नहीं मालूम होती।
८. ज़रूरत नहीं मालूम होती।
९. यह हो ही कैसे सकता है।
१०. अब कुछ समय तक।
११. बड़े गौरव की बात है।
१२. हमारे लिए बड़े गौरव की बात है।
१३. हमारा यह प्रयोजन था।
१४. हमारा यह प्रयोजन है।
१५. हमारा यह प्रयोजन नहीं है।
१६. हमारा यह प्रयोजन नहीं था।
१७. जैसा पहले कहा जा चुका है।
१८ सर्व सम्मति से पास हुआ।
१९. सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।
२०. मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ।
२१. मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।
२२. मैं आपका हृदय से स्वागत करता हूँ।
२३. मुझे यह निश्चय हो गया है।
२४. क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो।
२५. हमारी समझ में नहीं आता।
२६. कुछ समय के ही लिए सही।

२७. इस बात का ध्यान रखना चाहिए।
२८. यदि यह मान भी लिया जाय।
२९. परंतु साथ ही यह भी कहा जा सकता है।
३०. मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई।
३१. मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई।
३२. मुझे यह जानकर दुख हुआ।
३३. मुझे यह सुनकर दुख हुआ।
३४. सभापति महोदय तथा भ्रातृगण।

[नोट—वाक्यांश के पूरे शब्दों के लिये देखिये 'हिन्दी-संकेत-लिपि वाक्यांश कोष']

अभ्यास—५४

शिक्षा की प्रगति और देश की बेकारी को मामूली-तौर-पर देखकर कहा-जाता-है कि पढ़े-लिखे युवकों की दशा अच्छी हो-ही-कैसे-सकती-है। एक तो शिक्षित युवकों की भरमार और दूसरे व्यापार, उद्योग-धन्धों और नौकरी की गिरी-हालत बेकारी की भारी जटिल समस्या बनाये हैं। एक तो-यह है ही दूसरी खेती की बरबादी याने ९० प्रतिशत किसान—जो गाँवों में रहते-हैं उनकी दशा देखकर हम कह-सकते-हैं कि यदि खेती तथा देशी व्यापार आदि में किये जाने योग्य सुधार शीघ्र न-किये गए तो ऐसा-न-हो-कि कुछ-दिनों-के-बाद देश में आतंकवाद की लहर उठ-पड़े। इसमें-संदेह-नहीं-है-कि कॉंग्रेसी मंत्रि-मण्डलों ने जो-कुछ-किया-है वह जहाँ-तक-हो-सका-है किसानों की भलाई के लिए किया है और इसमें संदेह करने की कोई-आवश्यकता नहीं है-कि जितने-समय-के-लिए ये नियुक्त किये गये-हैं यदि उतने समय तक रह गये तो देश के बड़े-बड़े सवाल हल-करने-का भर-सक प्रयत्न होगा।

आजकल सिर्फ शिक्षा के होने-या-न होने-से खास मतलब नहीं

किन्तु सब-से-बड़ी बात यह-है-कि पढ़े-लिखे लोग बेकार न बैठने पावें। क्या हम-नहीं कह-सकते कि बेकारी का सम्बन्ध देशी व्यापारादि से है जिसकी ज़िम्मेदारी सरकार पर बहुत-अधिक है ? क्या हम नहीं-कह-सकते कि विदेशी सरकार से इस विषय में कुछ नहीं-हो-सकता। यथार्थ में मैं कह-देना-चाहता-हूँ कि हमारे औद्योगिक और व्यापारिक पतन का कारण हमारी दासता है। अतः सब-से-बड़ी-बात-यह-कि देश स्वतंत्र हो। यदि तुमने जापान की उन्नति को देख-लिया-है, जर्मनी के उत्थान को समझ-लिया-है तो क्या तुम-कह-सकते-हो कि दासता की बेड़ियों से मुक्त भारत-भी-देश की बेकारी, अशिक्षा आदि छोटे-छोटे सवालों को हल न-कर-सकेगा।

अतः जैसा पहिले कहा-जा-चुका-है, हमारी सब-से-बड़ी और जटिल समस्या स्वतंत्रता है। सारांश-यह-है कि देश स्वतंत्र होने-पर हमारे सारे राष्ट्र प्रश्न आप-से आप हल-हो-जायँगे।

अभ्यास—५५

प्रोफेसर मोहनलाल जी ने कालेज-यूनियन की सभा में स्त्री स्वतंत्रता का प्रस्ताव-उपस्थित-करते हुए-कहा—सभापति-महोदय तथा-भ्रातृगण-और-बहिनों—'जैसा पहिले-कहा जा-चुका-है "स्त्री स्वतंत्रता" बड़ा ही महत्वपूर्ण विषय-है। स्त्री और-पुरुष समाज की इकाई के दो आवश्यक अंग-हैं। कोई भी समाज या देश तभी सुदृढ़ और सुसंगठित हो-सकता-है जब ये दोनों अंग एक समान उन्नत-हों। फिर हमारी समझ-में-नहीं-आता कि हम अपने एक हिस्से को कमजोर रखकर अपनी सम्पूर्ण उन्नति कैसे-कर-सकते-हैं। इतने वर्ष के अनुभव और अध्ययन के बाद तो मुझे-यह निश्चय-हो-चुका-है कि जब-तक हमारी माताएँ-और-बहिनें पुरुषों की तरह सुशिक्षिता और स्वस्थ न होंगी तब-तक समाज तथा देश की यथार्थ-

उन्नति न-हो-सकेगी। हमें-यह-सुनकर-दुःख-होता-है कि कुछ पुराने विचार के लोगों को केवल लड़कों की शिक्षा की आवश्यकता मालूम-होती-है किन्तु लड़कियों की शिक्षा की कतई जरूरत नहीं मालूम होती। परन्तु जैसा-कि-हम-ऊपर-कह-चुके-हैं स्त्री-पुरुष समाज के दो आवश्यक अंग हैं, एक ही गाड़ी में दो पहिये हैं। अतः हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि समाजरूपी गाड़ी को सुचारुरूप से चलाने के लिये दोनों पहियों का एक सा ठीक रखना परमावश्यक है। यह-हो-ही-कैसे-सकता-है-कि एक चाक टूटा हो फिर-भी गाड़ी ठीक चले? यदि-यह मान-भी लिया-जाय कि स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा कमजोर रहती हैं परन्तु-साथ-ही-साथ-यह-भी-कहा-जा-सकता-है कि यदि उन्हें यथोचित शिक्षा मिले, तो वे पुरुषों की कठिनाइयों में सच्ची सहायता कर-सकती-हैं एवं बड़ी आर्थिक गुत्थियाँ हल-कर-सकती-हैं। यह पुरुष का स्वार्थपरता-है कि वह उन्हें उन्नत-नहीं-करने-देता क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो वह उन्हें अपनी कठपुतली बनाकर न-रख-सकेगा। अब मुझे यह जानकर-प्रसन्नता-हुई-है-कि शिक्षित वर्ग इस बात को समझ गया-है। हमारे-लिये-यह गौरव-की-बात-है कि हमारे शहर में ऐसी कई कन्या-पाठशालाएँ खुल-रही-है जो कुछ समय-तक-ही नहीं वरन् बहुत समय के-लिये समाज की सेवा-करेंगी। मैं-तो-पहले-ही कहता-था कि स्त्री-शिक्षा देश के-लिये बड़े महत्वपूर्ण और गौरव-की-बात है। क्योंकि इससे ही स्त्री-स्वतंत्रता के आन्दोलन को प्रगति मिलेगी।

इसके-बाद एक महाशय ने खड़े होकर कहा कि मैं आपके-विचारों यानी आपका-हृदय-से-स्वागत-करता-हूँ और साथ ही आपके-प्रस्ताव-का-समर्थन-करता-हूँ। दूसरे सज्जन ने कहा मैं आपके-प्रस्ताव-का अनुमोदन-करता-हूँ। फिर वोटिंग होने के बाद सभापति-महाशय ने कहा कि यह-प्रस्ताव-सर्व-सम्मति से स्वीकृत-हुआ-अथवा सर्व-सम्मति-से-पास-हुआ।

साधारण-संक्षिप्त-संकेत

२.
३.
४.
५
६
७
८.
९.
१०
११
१२.
१३
१४.
१५.
१६.
१७.

साधारण-संक्षिप्त-संकेत

(१)

१. अत्याचार	अनुभव	असभ्य	असम्भव
२. सम्भव	असंख्य	अध्याय	अनुपस्थित
३. असबाब	आरम्भ	बतौर-नमूना	उपस्थित
४. उद्योग-धन्धा	कपड़ा	कदाचित	कदापि:
५. क्योंकर	कहावत	क्रमशः	कम्पनी
६. काफी	कामयाब	खज़ानची	खज़ाना
७. गम्भीर	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	गायब
८. गिरफ्तार	गिरफ्तारी	चपटा	चमच
९. तकलीफ	चाल-चलन	प्रतिशत	प्रत्यक्ष
१०. प्रतिद्वंदिता	पवित्रात्मा	प्रियवर	पालनहार
११. पवित्रताई	पतिव्रता	बेवकूफ	वैकुण्ठ
१२. भयानक	भयङ्कर	भलमनसी	भारतवर्ष
१३. मधु-मक्खी	मनमाना	संयोग	मण्डप
१४. रंग-बिरंग	राम राम	राज-सिंहासन	लगभग
१५. लाभदायक	लिफ़ाफा	वंशावली	व्यायाम
१६. वादविवाद	वादानुवाद	विद्याभ्यास	शायद
१७. शिष्टाचार	सचमुच	सन्मुख	समीप

अभ्यास—५६

संसार की करीब-करीब सभी लाभदायक वस्तुऐं अब भारतवर्ष / में मिलती-हैं। उद्योग-धन्धे में भी अब यह आगे बढ़/ रहा है। यहाँ के कुशल ग्रंथकार हर-एक विषय-पर / ग्रन्थों को लिखकर प्रकाशित करा-रहे-हैं। स्त्रियों का आदर्श/भी बहुत ऊँचा है। वे बड़ी भलीमानस और पतिव्रता-/ होती हैं।

कुछ ऐसे बेवकूफ भी-हैं जो भयानक-से / भयानक काम-करने-में भी शायद न हिचकें। वे किसी / के खजाना को गायब कर देना, खजानची को तकलीफ देना, / किसी पवित्रात्मा की अनुपस्थिति या उपस्थिति ही में उसका सारा / माल असबाब, कपड़ा-लत्ता आदि को उड़ा देना, मनमाना काम-/ करना, मधु-मक्खियों के पीछे पड़ना, अत्याचार करना ही अपना/ धर्म समझते हैं।

ऐसे आदमी आरम्भ में चाहे सम्भव असम्भव / कार्य करके कामयाब हो लें पर अन्त में गिरफ्तारी से / कदापि नहीं बच-सकते गिरफ्तार होते-ही-हैं। सुख-दुख / का तो यह अनुभव करते-ही-हैं पर ऐसे असभ्य / होते हैं कि किसी भी समाज में इनका-रखना ठीक-/ नहीं।

यहाँ विद्याभ्यास के लिए विद्यालय हैं तथा व्यायाम के-/ लिए व्यायाम-शालाऐं हैं जिसमें शिष्टाचार तथा सदाचार की शिक्षा / दी जाती है।

पालनहार ने हमारे देश को सचमुच किसी / वैकुण्ठ से कम नहीं बनाया। इसके संमुख बड़े २ राजसिंहासन / भी कदाचित ही ठहर सकें।

प्रतिद्वन्द्विता के समीप कभी-न-/ जाना-चाहिए । इनका परोक्ष-रूप से चाहे-जो फल हो / पर प्रत्यक्ष रूप से तो मुझे एक प्रतिशत लोगों से / भी मिलने का संयोग नहीं-हुआ जिन्होंने इसकी तारीफ की / हो ।

प्रियवर एक-एक रंग-बिरंग मण्डप बनाओ जिसमें पगपग / पर हर-एक कोने में काफी मोटे अक्षरों में राम / राम लिखवा दो ।

लिखो—चपटा, चमच, चाल-चलन, अध्याय, असख्य, कहावत, / क्रमशः, गम्भीर, लिफाफा, वंशावली ।

२६४

---

(२)

१.	चुपचाप	चुपके	जनम	अनर्थ
२.	जीव-जन्तु	जन्म-स्थान	जायदाद	जीवका
३.	झंडा	झुंड	डगमगाना	तबियत
४.	तत्पर	तत्काल	तदनन्तर	तहकीकात
५.	तिरस्कार	थरथर	दंडवत	दफ्तर
६.	दुर्दशा	दुष्टता	दुष्टात्मा	नमस्कार
७.	नमूना	नाचरंग	नियमावली	निमंत्रण
८.	निस्संदेह	नौजवान	पंचायत	प्रथम
६.	प्रणाम	सहज	स्वंयंसेवक	सर्वव्यापी
१०.	समाचारपत्र	सम्मिलित	स्वयंवर	संस्कार
११.	संक्षेप	सायंकाल	हरगिज	हिम्मतवर
१२.	होनहार	शक्तिशाली	पूर्ववत	ट्रॉसफर
१३.	छापाखाना	बंदरगाह	दृष्टिकोण	पत्रव्योहार
१४.	वास्तविक	स्वाभाविक	अस्वाभाविक	वंदेमातरम्
१५.	दृष्टान्त	स्वभावतः	आश्चर्यजनक	ईसामसीह
१६.	प्रचलित	निरवाचक	निरवाचन	संवाददाता
१७.	मनोरंजक	नेस्तनाबूद	विचाराधीन	इश्तिहार
१८.	स्वरचित	आमंत्रण	वायुमंडल	जन्म मृत्यु

अभ्यास—५७

एक होनहार नवजवान के लिये अपने देश की सेवा करना / प्रथम कर्त्तव्य है। सच-तो यह-है कि यदि उसने अपने / जन्म-स्थान का झंडा ऊँचा-न-किया तो उसका / जन्म ही व्यर्थ है। ऐसा कार्य-करने-में चाहे सारी / जायदाद या जीविका जाती-रहे, पर दृढ़ता को न छोड़ना / चाहिये। ऐसा कार्य्य वे-ही कर सकते हैं जो कि / शक्तिशाली और हिम्मतवर हैं।

किसी दुष्टात्मा को केवल प्रणाम या / दण्डवत करने या उसके सामने थर-थर काँपने से काम / नहीं चलता। ऐसा करने से तो अपनी दुर्दशा होगी, वह / तो अपनी दुष्टता से हरगिज़ न बाज़ आयेगा। उनके साथ / दृढ़ता और कठोरता का व्यवहार होना चाहिये।

छापेखाने में समाचार- / पत्र तथा इश्तिहार आदि सभी चीज़ें छपती हैं। समाचार-पत्रों / में खबर भेजनेवाले को सम्वाद-दाता कहते-हैं। ये अपने / दफ्तर को देश का सारा हाल संक्षेप में भेजते हैं।/

किसी भी दृष्टिकोण से देखिये भारत के-लिए एक / ऐसे स्वयंसेवक-दल की बड़ी आवश्यकता-है जो कि चुपचाप / परन्तु दृढ़ता के साथ प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक उसकी / सेवा में तत्पर रहे, चुपके न बैठे। यह गाँवों में / पञ्चायत कायम-करा सकते हैं; उनके फसलों को झुन्ड-के-/ झुन्ड घूमते हुए जीव-जन्तु से रक्षा कर-सकते-हैं / तथा उनको नाच-रंग बुरी आदतों से बचा सकते हैं। / ये लोग बड़ी-कड़ी तबियत के होते हैं; आफ़त

का / सामना करने में जरा भी नहीं डगमगाते, बड़ी तत्परता से/ तत्काल ही उसका सामना करते-हैं। ये किसी का तिरस्कार/ नहीं-करते, बल्कि नम्रता-पूर्वक नमस्कार-करके-ही बातें करते-/हैं।

यही-नहीं यह किसी सभा-सोसाइटी आदि की नियमावली / बनाने, किसी बात की तहक़ीक़ात करने, निर्वाचन के लिए निर्वाचकों / को सूची तैयार करने में भी सहायता-देते-हैं।

वन्दे-मातरम् / गान हमारा जातीय गान है। इसे सर्वव्यापी बनाना हमारा कर्त्तव्य है। इसको प्रचलित करने में चाहे जो कठिनाइयाँ उठानी पड़े / सबको खुशी खुशी झेलना-चाहिये। ये-किसी-के लिये भी / बिल्कुल ही अस्वाभाविक होगा कि वह इसके गाने में सम्मिलित / न हो। इसको स्वरक्षित रखने में ही हमारी भलाई-है। / ३३०

१.
२
३.
४
५
६.
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७

संक्षिप्त-संकेत

(३)

१.	संगठन	कार्य्यवाही	महापुरुष	दिलचस्पी
२.	तजवीज	मातृभाषा	लेखक	जयजयकार
३.	मन्त्री	दृढ़	दृढ़-विश्वास	प्रतिष्ठित
४.	वैमनस्य	वर्तमान	शुभागमन	परिच्छेद
५.	पारसपरिक	दिग्दर्शन	अंत्येष्टि-क्रिया	निष्पक्ष
६.	साहित्य	भोजनालय	दरिद्र	समर्थक
७.	समरथन	एम. एल. ए	स्तम्भ	त्याग
८.	सर्वनाश	प्रगतिशील	गौरवमय	सार्वजनिक
९.	सर्वोत्तम	व्यवहार	अवकाश	उत्साह-पूर्वक
१०.	राजनीतिपटुता	सहयोग	असहयोग	आडम्बर
११.	खुशामद	सम्मानार्थ	महामहोपाध्याय	स्वतंत्रतापूर्वक
१२.	सेक्रेटरी	नियमानुसार	विचारार्थ	त्यागपत्र
१३.	फाइनेनशल	विज्ञप्ति	भूमध्यसागर	कम्यूनिस्म
१४.	समाजवादी	साम्राज्यवाद	लोकतन्त्रवाद	पश्चाताप
१५.	नामंजूर	मंजूर	मुखतलिफ	कोषाध्यक्ष
१६.	जान-पहिचान	सहानुभूति	महकमा	सिलसिलेवार
१७.	मतसंग्रह	नियमानुकूल	मातृभूमि	पत्रसंपादक

अभ्यास—५८

आजकल प्रगतिशील राष्ट्रीयतावादी सारे राष्ट्र का एकीकरण और दृढ़संगठन/के विचारार्थ हिन्दी-उर्दू के वर्तमान पारस्परिक वैमनस्य की अन्त्येष्टि-क्रिया/करने में बड़ी दिलचस्पी से उत्साह-पूर्वक बिना अवकाश के/लिये लगातार काम-कर-रहे-हैं। हर्ष-की-बात-यह/-है कि बड़े-बड़े महामहोपाध्याय, मातृभाषा और मातृ-भूमि/के सेवक, प्रतिष्ठित लेखक, पत्र-सम्पादक, बहुतेरे राज-नीति-पटु-एम-एल.-ए./और महात्मा-गान्धी भी इनकी नीति का हृदय-से-समर्थन/-करते-हैं। हमारे मुसलमान नेता-गण तो इसके पक्के समर्थक/ हैं तथा अन्य प्रगतिशील मुसलमान भी इस स्कीम से पूर्ण/ सहानुभूति-रखते-हैं। इतना-ही-नहीं, भिन्न भिन्न राजनैतिक विचार-शोल / लोग-भी राष्ट्रभाषा की आवश्यकता महसूस करते-हैं। आज देश / में कम्यूनिस्म, फैसिसिज्म, समाजवाद, लोकतंत्रवाद, और साम्राज्यवाद आदि भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण-/रखने-वाले-भी इस बात को नामंजूर नहीं-कर-सकते-/कि हिन्दुस्तानी की तजवीज का विरोध करने से भविष्य में/ देश को पश्चाताप के कडुवे फल अवश्य ही चखने-पड़ेंगे/। देश को एकता के सूत्र में बाँधने का यह भी सर्वोत्तम / उपाय है कि हम हिन्दी-उर्दू के झगड़े को समूल / नष्टकर साधारण हिन्दुस्तानी को सार्वजनिक भाषा बनावें और व्यवहार में / लावें। कुशल राजनीतिज्ञ तो असहयोग के जमाने के पूर्व ही/ से राष्ट्रभाषा की आवश्यकता समझते-थे। वे जानते-थे कि/राष्ट्रीयकरण करने-के-

लिये भारत ऐसे बहुभाषी देश में/ राष्ट्रभाषा के निर्माण का प्रश्न उठेगा। वे लोग ठीक-ही-/ कहते-थे-कि यदि ऐसा-न-हुआ तो देश का / सर्वनाश हुए-बिना न रहेगा। यदि निष्पक्ष भाव से हम / हिन्दुस्तानी की तजवीज तथा कार्यवाही का दिग्दर्शन कर स्वतंत्रता-पूर्वक विचार /करें तो निश्चय ही हम अपने तथा राष्ट्र के सम्मानार्थ / न सिर्फ उसे मंजूर करेंगे वरन् उसके साथ पूर्ण सहयोग/भी करने-लगेंगे।

हमें दृढ़-विश्वास है कि यदि इस /महत्वशाली एवं गौरवमय प्रश्न को नियमानुकूल हल-करने-का प्रयत्न / किया जाय तो सफलता असम्भव न-होगी। अपनी राष्ट्रभाषा के / शुभागमन पर हमें उसको जयजयकार मनाना-चाहिये, उसकी-खुशामद करना-चाहिये, / उसके लिए अपनी जान भी लड़ा देना चाहिये। क्योंकि / राष्ट्रभाषा ही राष्ट्र और देश की प्राण है। अब समय/ आ गया है जब देश के बच्चे-बच्चे को राष्ट्रभाषा /से पक्की जान-पहिचान कर-लेना-चाहिये। देश के सामने / यह समस्या छोटी-मोटी नहीं है। इस विषय पर केवल / मतसंग्रह करने का समय चला गया। अब हमें शीघ्रातिशीघ्र इस/ ओर सिलसिलेवार काम-करने-के-लिये एक कमेटी तथा सेक्रेटरी /यानी मंत्री आदि नियुक्त कर नियमानुसार काम आरम्भ कर-देना-/ चाहिये। इसके अतिरिक्त एक फाइनेनशल-कमेटी तथा कोषाध्यक्ष का निर्वाचन/ भी आवश्यक होगा। दूसरा काम इस कार्य विशेष-के-लिए/चन्दा इकट्ठा करना तथा आय-व्यय का हिसाब आदि रखना / होगा।

४२१

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
संक्षिप्त - संकेत
१
२.
३
४
५.
६.

उर्दू के कुछ प्रचलित शब्द

शब्द-चिन्ह

१. अलाहिदा-अलावा		अलबत्ता	अव्वल-अलग
२. ज़रा-ज़ारी		ज़ोर	ज़रिये
३. मरतबा-मिस्टर		मिनिस्टर	मिसेस
४. मामला		मामूली	बशर्ते
५. चूँकि	फिर	अकसर	फर्क
६. ऐ	खिलाफ	ताकि	न-तो
७. महज़	लायक	दरमियान	बाज
८. लिहाज़	बाज़ी	दफा	बाकी
९. तेज़	तेज़ी	आहिस्ता २	चुनान्चे

१०. फौरन हालाँकि बज़रिये रफ़्ता २ वाकई बखूबी

संक्षिप्त-संकेत

१. मज़बूत	मौजूद	मौजूदा	मातहत
२. दस्तखत	कहावत	नतीजा	तजर्बा
३. इत्तफाक	रोजनामचे	बिरादरी	तादाद
४ बाकायदा	बेकायदा	बदस्तूर	मुलाकात
५. मुल्क	फरमाबरदारी	बेवजह	अदीमुलफुरसत
६. बदएहतियाती	कामयाब	दरियाफ्त	कवायद
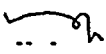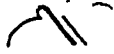
७.
८
९.
१०.
११
१२
१३
१४.
१५.
१६
१७.
१८
१९
२०.
२१
२२
२३.

७. मुमकिन	मशक्कत	इम्तहान	मुताबिक
८. कम-अक्ली	लापरवाही	हरकत	ढकोसलेबाजी
९. काफी	दाखिल	मुकर्रर	तवज्जह
१०. मञ्जिलेमकसूद	तकलीफ	तत्काल	वेपरवाही
११. हरदम	तकलीफजदा	लियाकत	बदबू
१२. गुजारा	गुजर	मोहर्रम	हाकिम
१३. हुक्म	उस्ताद	अहम-मसला	खुदगर्ज
१४. होशियार	पुरअसर	बाजदफा	हाजिर
१५. गैरहाजिर	ऐशोआराम	आदाब-अर्ज	मददगार
१६. तारीफ	इनाम-इकराम	मजलूम	नजदीक
१७. रोजमर्रा	बाआसानी	एहतियात	गुफ्तगू
१८. बहादुर	मुस्तकिल	इरदगिरद	बुजुर्ग
१९. तदवीर	सिपहसालार	मोकाबिला	ताकतवर
२०. अच्छी-तरह	कदम-कदम-पर		पुराने-जमाने-में
			खुशबूदार
२१. इनकिलाब-जिन्दाबाद	अमल-दरामद		मिसाल-के तौर-पर
			हमेशा की तरह
२२. मुस्तकिल-तौर-पर	ज्यादातर	पवलिक	हरगिज
२३. कुरबानी	मिलनसार	जिस-कदर	इसी-कदर
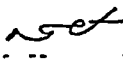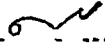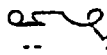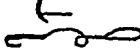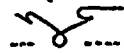
साधारण-व्यावहारिक-शब्द

व्यवस्थापिका सभा (१)

१. स्पीकर प्रेसीडेन्ट प्रधान-मंत्री न्याय-मंत्री
२. अर्थ-मंत्री शिक्षा-मंत्री रेविन्यू-मंत्री रेविन्यू-मिनिस्टर
३. मंत्रिमंडल न्याय-सदस्य अर्थ-सदस्य शिक्षा-सदस्य
४. पार्लियामेंट्री-सेक्रेटरी सम्मानित-सदस्य सेलेक्ट-कमेटी स्वायत्त-शासन-की-मंत्राणी
५. विरोधी-दल अपर-हाउस संयुक्त-प्रांतीय-लेज़िस्लेटिव-कौंसिल, गवर्नमेंट-आफ-इण्डिया-ऐक्ट

अन्तर-राष्ट्रीय (२)

१. अंतर्राष्ट्रीय इंग्लिस्तान इंगलैंड यूनाइटेड-स्टेट्स-आफ-अमेरिका
२. संयुक्त-राज्य-अमेरिका परराष्ट्र-सचिव उदार-दल, अनुदार-दल
३. मजदूर-दल लिबरल-पार्टी कनसरवेटिव-पार्टी लेबर-पार्टी
४. उपनिवेश औपनिवेशिक-स्वराज्य बृटिश-सरकार राष्ट्र-संघ
५. लीग-आफ-नेशन्स फैसीसिज्म बोलशिविज्म हिटलरिज्म
६. नाज़ीरीम मुसोलनी हिटलर मिनिस्टर आफ-फारेन-एफेयर्स।

कांग्रेस (२)

१. राष्ट्रपति स्वागताध्यक्ष राष्ट्रदल
आल-इंडिया-कांग्रेस-वर्किंग-कमेटी
२. पूर्ण-स्वराज्य साम्यवाद समाजवाद साम्राज्यवाद
३. नेतृत्व जन्म-सिद्ध-अधिकार स्वागत-कारिणी-सभा
कार्य्य-कारिणी-कमेटी
४. पदाधिकारी बृटिश-मत-दाता भारत-मत-दाता
देशी-रियासत
५. आन्ध्र-क्षेत्र भारत-सरकार नौकरशाही
सिविल-डिसोबिडियन्स-मूवमेंट

अभ्यास—५६

[उर्दू के संक्षिप्त संकेतों पर अभ्यास]

१. एक बहादुर सिपहसालार किसी ताकतवर के मुकाबले में भी कामयाबी / को हासिल-ही-करता-है। वह अपने मंजिले-मक्सूद पर / पहुँचने के-लिए बड़ी एहतियाती के साथ मुस्तकिल कदमों को / उठाता हुआ बढ़ता है। यह बड़े मशक्कत का काम है। / इसमें अगर उसने जरा सी भी लापरवाही, कमअक्ली, खुदगर्जी दिखलाई / या ढकोसले-बाजी को पास आने दिया कि बस फिर / वह इम्तिहान में नाकामयाब-हुआ।

२. हर-एक पुर असर / हाकिम का यह फर्ज है कि वह तकलीफजदों की तकलीफों को/दूर करने-की तरफ काफी तवज्जह दे, बाकायदे फरमाबरदारी / के-लिए अपने मददगारों को इनाम-इकराम बाँटे, और बेवजह / होशियार मातहतों को तङ्ग न करे। ऐसे करने से उनके / मातहत भी रोजमर्रा के कामों को हरदम

बाआसानी लियाक़त के / साथ पूरा-करेंगे और अपने अफ़सर के हुक्म के मुताबिक / ही रोजनामचे को भर कर दस्तखत करेंगे। तजरबा यह बतलाता-/ है कि मातहतों के काम के-लिए जहाँ-तक-हो-/ सके बिरादरी के लोगों को इत्तफाक से भी मुक़र्रर न-/ करे, न उन्हें नज़दीक ही आने दें, क्योंकि ये अपनी / बेकायदा हरकतों से मुल्क के इन्तज़ाम में रोड़े ही अटकावेंगे, / जिसका नतीजा ये होता है कि मुल्क में बदइंतज़ामी फैलती-/ है और कोई काम ठीक तरह से नहीं होने पाता / ।

३. मोहर्रम के मौके पर बाज-दफा तो इस-क़दर भीड़ / होती-है कि पब्लिक का इरद-गिरद आज़ादी के साथ / हरकत करना भी नामुमकिन सा हो-जाता-है और हुक्कामों / के-लिए इसका अच्छी-तरह इन्तज़ाम करना एक अलग मसला / हो जाता है। २४३

———

अभ्यास—६०

व्यवस्थापिका—सभा।

इस समय हमारे प्रांतीय-असेम्बली के स्पीकर माननीय श्रीयुत् पुरुषोत्तमदास / जी टण्डन हैं और प्रधान-मन्त्री-हैं श्रीमान गोविन्द बल्लभ जी / पन्त। इसी-तरह अलग-अलग-विभाग के अलग-अलग मन्त्री / हैं जैसे न्यायमन्त्री, अर्थमन्त्री, शिक्षामन्त्री और रेविन्यूमन्त्री। परन्तु सब-/ से-बड़ी विशेष बात यह है कि लोकल-सेल्फ-गवर्नमेन्ट-/ डिपार्टमेन्ट किसी मन्त्री के आधीन न होकर एक मन्त्राणी के / आधीन है। वह स्वायत्त-शासन-की-मन्त्राणी हैं हमारी / पूर्व परिचिता श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित। इन मन्त्रियों के आधीन आवश्यकतानुसार / एक-एक पार्लियामेंटरी- सेक्रेटरी हैं।

इन असेम्बलियों में सम्मानित-सदस्य-/ गण प्रस्तावों-को-उपस्थित-करते-हैं । गवर्नमेन्ट की तरफ़ से /मन्त्रिमण्डल के सदस्य जैसे न्याय-सदस्य, अर्थ-सदस्य, शिक्षा-/ सदस्य आदि या तो उन प्रस्तावों-को-स्वीकार-कर-लेते- / हैं या विरोध-करते-हैं। अक्सर यह प्रस्ताव संशोधन के / लिए सेलेक्ट-कमेटी के सुपुर्द किया-जाता-है और उनकी / सिफारिश के साथ असेम्बली के सामने मजूरी के लिए फिर / आता है।

हर एक कौंसिल या असेम्बली में एक गवर्नमेंट- / दल और दूसरा विरोधी-दल होता है। यह विरोधी-दल के / नेता गवर्नमेंट के इस्तीफा देने पर मंत्रि-मंडल बनाते और राज्य-शासन का काम-करते-हैं।

१८७

अभ्यास—६१

अंतर-राष्ट्रीय

इस समय योरप में शस्त्रीकरण के कारण अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति बड़ी / भयंकर हो-रही-है। फैसिसिज्म और हिटलरिज्म के सामने बृटिश-सिंह / की गरज मंद-पड़-गई-है। इङ्गलैण्ड इस-समय / अपनी कमज़ोर राज-नीति के कारण अकेला सा-पड़-गया-है / । युनाइटेड-स्टेट्स-आफ-अमेरिका, फ्रांस तथा अन्य राज्य दिल खोल / कर उसका साथ नहीं-दे-रहे-हैं। लीग-आफ-नेशन / अर्थात् राष्ट्र-संघ का अंत सा हो-चुका-है। ऐसी-हालत-में मसोलिनी या हिटलर ऐसे महाबलशाली डिक्टेटरों को मुँहतोड़ / जवाब कौन दे-सकता-है। इन-लोगों ने इस / समय बोलशेविज़्म को भी दाब-दिया-है। इंग्लिस्तान की इस / नीति से न तो उदार-दल वाले खुश हैं न मजदूर-दल वाले।

उपनिवेशों का तो कहना ही क्या है / वे तो पहले ही से अप्रसन्न हैं।

अब केवल संयुक्त-राज्य-/अमेरिका के साथ देने से-ही इनका भला-हो-सकता-/है। १४१

अभ्यास—६२

कांग्रेस

हमारे देश की सबसे-बड़ी जीती-जागती राजनैतिक-संस्था कांग्रेस/की-है। इस-समय इसके राष्ट्रपति हैं हमारे जगत-प्रसिद्ध/नायक श्रीमान् पं० जवाहरलाल नेहरू। इनके नेतृत्व में एक अच्छे/राष्ट्रीय-दल का सङ्गठन हुआ-है जो कि पूर्ण स्वराज्य/को प्राप्त करना अपना जन्म-सिद्ध-अधिकार समझता-है और/इसके-लिए उसका इंग्लैंड तथा भारत-सरकार से और कभी/२ देशी रियासतों से बराबर संघर्ष होता-रहता-है।

इसने/अपने काम को सुचारु-रूप से चलाने के लिए एक/कार्यकारिणी-कमेटी बना-रक्खी-है जिसे आल-इन्डिया कांग्रेस-वर्किङ्ग-/कमेटी कहते-हैं। इसी के द्वारा समय-समय पर यह/अपनी नीति को निरधारित-करती-है और फिर उसी नीति/के अनुसार काम होता है। इस संस्था के अन्तरगत/समाजवादी, साम्यवादी तथा साम्राज्यवादी अनेक-दल हैं जो अपनी नीति/के अलग २ होते-हुए-भी वर्किङ्ग-कमेटी के निर्णय/को मानते और उस पर काम-करते-हैं। काम के/विचार से इसके अनेक पदाधिकारी-हैं जो देश के कोने/२ मे फैले-हुए-हैं और इसकी निर्धारित नीति से/कार्य्य-कर-रहे हैं।

ग्राम्यक्षेत्र में काम-करना इस-समय/इसका मुख्य उद्देश्य हो-रहा-है। नौकरशाही ने भी इसके/लोहे को मान लिया-है और इस संस्था के मुख्य/२ सञ्चालक गण जो कल बागी तथा देशद्रोही ठहराये गये/थे वही आज इस गवर्नमेंट-के-मन्त्री-पद पर सुशोभित/हैं। इस साल इसके राष्ट्रपति माननीय श्रीसुबास-चन्द्र बोस/चुने गये हैं। यह भारत-मत-दाता की विजय है।२४०

स्वायत्त-शासन

१

२.

३

४

५.

६

प्रवासी-भारतवासी

१

२.

३.

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

१.

२.

३.

४

५.

स्वायत्त-शासन—४

१. लोकल-सेल्फ-गवर्नमेंट स्वायत्त-शासन चेयरमैन
वाइस-चेयरमैन
२ सभापति उपसभापति अध्यक्ष अध्यक्षता
३. समर्थन अनुमोदन संशोधन एक्जिक्यूटिव
आफिसर
४. सेनेट्री-इञ्जिनियर वाटर्वर्क्स इञ्जिनियर मेयर सेक्रेटरी
५. हाउस-टैक्स वाटर-टैक्स हाउस-एंड-वाटर-टैक्स चुंगी
६. उम्मेदवार नागरिक चुनाव संयुक्त-निर्वाचन

प्रवासी-भारत-वासी—५

१. प्रवासी-भारत-वासी स्टेटसेटिलमेंट
फेडीरेटेड-मालयास्टेट्स भारतीय मजदूर
२. मालया-रिजर्वेशन-एक्ट मालयावासी
औपनिवेशिक सचिव कलोनियल-सेक्रेटरी
३. एजेन्ट-जेनरल यूनाइटेड-प्लान्टर्स-एसोसियेशन
सेंट्रल-इन्डियन-असेम्बली

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन—६

१. हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन स्थायी-समिति परीक्षा-समिति
साहित्य-समिति
२. प्रचार-समिति संग्रहालय-समिति उपसमिति
हिन्दी-प्रचार-समिति
३. हिन्दी-साहित्यकार हिन्दी-पत्र-सम्पादक
हिन्दी-साहित्य-सेवी हिन्दी-विद्यापीठ

४. प्रथमा-परीक्षा वैद्यविशारद-परीक्षा
शीघ्रलिपि-विशारद-परीक्षा सम्पादन-कला-परीक्षा
५. आरायज नवीसी-परीक्षा मुनीमी-परीक्षा
राष्ट्रभाषा-हिन्दी हिन्दी-संकेत-लिपि

अभ्यास—६३

स्वायत्त-शासन

हमारे प्रान्त की म्युनिसिपैलिटियों में इलाहाबाद म्युनिसिपल-बोर्ड का / भी एक अच्छा स्थान-है। इसके सभापति को चेयरमैन भी / कहते-हैं। चेयरमैन की सहायता के-लिए एक वाइस-चेयरमैन / या उप-सभापति और एक जूनियर-वाइस-चेयरमैन रहता-है /। इनके अलावा एक्जीक्यूटिव-आफिसर, सेनेटरी-इञ्जीनियर, सेनेटरी-इन्सपेक्टर, वाटर-वर्क्स-/इन्जीनियर आदि अफसर होते-हैं जो अपने डिपार्टमेंट का काम / सुचारु-रूप-से-करते-हैं।

इसके सदस्यों का चुनाव नगर के / जनता द्वारा होता-है पर चुनाव विशेषाधिकार और सांप्रदायिक प्रणाली / से होता-है। संयुक्त-निर्वाचन-प्रणाली से नहीं। इन सदस्यों / की एक सभा होती है जो इसके कार्य का देख-/भाल-रखती-है। इस सभा में हर एक तरफ के / प्रस्ताव-पेश-किये-जाते-हैं जो समर्थन, अनुमोदन या संशोधन / के बाद पास-किये-जाते-हैं।

इसके आमदनी का मुख्य / जरिया है चुङ्गी, हाउस-टैक्स या वाटर-टैक्स।

यह म्युनिसिपैलिटियाँ / गवर्नमेंट के लोकल-सेल्फ-गवर्नमेंट-डिपार्टमेंट के आधीन हैं। १४६

अभ्यास—६४

प्रवासी-भारतवासी

ट्रिनिदाद, फीजी, जंजीवार, वृटिश-गायना, फेडोरेटेड-मालया-स्टेट्स जिस-किसी-/भी उपनिवेश में जाओ, हमारे प्रवासी-भारतवासियों की दशा को / बहुत-ही करुणाजनक और दयनीय पाओगे । इन भारतीय-मजदूरों ने / उन देशों को अपने गाढ़े पसीने से दिन-रात मेहनत / कर बड़ा ही समृद्धि-शाली बना-दिया-है पर अब / वहाँ के गोरे निवासी इनको इनके अधिकारों से वंचित करने-/के-लिए-एड़ी चोटी का पसीना एक-कर-रहे-हैं । / इनके खिलाफ रोज ही नये-नये कानून जैसे रिजर्वेशन-एक्ट,/ जंजीवार-क्लोव एक्ट, हाई-ग्राउन्ड-रिजर्वेशन-एक्ट आदि पास-किये-/ जाते-हैं और जगह ब जगह से इनके नागरिक स्वत्वों / तथा मताधिकारों को भी छीनने का प्रयत्न किया-जा-रहा-/ है । इनके खिलाफ उन स्टेट्स-सेटिलमेंट आदि आदि में प्लैंटरों / ने एक एसोसियेशन यूनाइटेड-प्लैंटर्स-एसोसियेशन के नाम से कायम-/ किया-है और इनके विरोध से रक्षा करने-के-लिए / हमारे प्रवासी-भारतवासियों ने अपनी एक संस्था सेंट्रल-इन्डियन-एसेम्बली / के नाम से कायम-की-है । इन विदेशों के स्थानिक / राजनैतिक प्रधान को एजेन्ट-जेनरल तथा वृटेन के मंत्री को / जो इनके ऊपर-हैं औपनिवेशिक-सचिव या कलोनियल-सेक्रेटरी कहते-/ हैं । १८१

अभ्यास—६५

हमारे देश में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने हिन्दी-प्रचार के / लिए जो अविरल प्रयत्न-किया-है उसी के फल-स्वरूप / अब हम बहुत ही जल्द इसको राष्ट्र-भाषा के रूप / में देखने की आशा-कर-रहे-हैं ।/

इसके लिए हम / उन हिन्दी-साहित्य-सेवियों को धन्यवाद दिये बगैर नहीं-रह-/ सकते जिन्होंने इस ध्येय के पूरा-करने-मे अपना तन /मन-धन सब-कुछ इसकी सहायता के लिए निछावर कर-/दिया-है ।

काम के बहुतायत के कारण सम्मेलन ने अलग /२ काम के लिए अलग २ समितियाँ बना-रक्खी-हैं / जैसे हिन्दी-प्रचार-विभाग के लिए प्रचार-समिति, संग्रहालय का / कार्य सम्पादन करने-के-लिए संग्रहालय-समिति आदि । इसी तरह / साहित्य-समिति, स्थाई-समिति और परीक्षा-समिति आदि-भी-हैं । / इस-समय परीक्षा-समिति के मंत्री-हैं श्रीमान दयाशंकर जी / दुबे, एम, ए; एल, एल, बी । इन्होंने भारत भर में परीक्षा के हजारों/ केन्द्र-स्थापित किये-हैं जहाँ वैद्य-विशारद-परीक्षा, शीघ्र-लिपि-/ विशारद-परीक्षा, सम्पादन-कला-परीक्षा, आरायज-नवीसी परीक्षा तथा मुनीमी-/ की-परीक्षा ली-जाती-है और इसके लिए उन्हें प्रमाण / तथा उपाधि-पत्र दिये-जाते-हैं ।

सम्मेलन ने अभी हाल-/ ही-में एक बड़े भव्य भवन का निरमाण किया-है / जिसे 'हिन्दी संग्रहालय' के नाम से पुकारते-हैं । इसी में / सम्मेलन की ओर से हिन्दी-शीघ्र-लिपि कालेज की स्थापना / की-गई-है । २०३

तीसरा भाग

विशेष योग्यता चाहने-वाले छात्रों के लिए

जो कुछ अब तक आप पढ़ चुके हैं उससे आप साधारण तौर पर कोई भी व्याख्यान आदि की पूरी रिपोर्ट ले सकेंगे परन्तु एक कुशल संकेत-लिपि-ज्ञाता होने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि आप जहाँ कहीं भी व्याख्यान आदि लिखने के लिए जायँ पहले उस विषय के विशेष शब्दों तथा वाक्यांश को भली भाँति अभ्यास कर लें। ऐसा करने से वह विषय ठीक रूप से समझ में आ सकेगा और आप भी उसको सरलता-पूर्वक लिख सकेंगे। आगे अलग अलग विभागों के विशेष-शब्दों की एक वृहत् सूची दी गई है और यह बताया गया है कि उनको छोटे से छोटे रूप में किस प्रकार लिखा जाय कि पढ़ने में जरा भी असुविधा न हो। इनका अच्छा अभ्यास करने के पश्चात् आपकी गति १७५ शब्द प्रति मिनट से लेकर १९०-२०० तक या उसके ऊपर अवश्य पहुँच जायगी। इसी तरह नये-नये प्रचलित शब्दों के गढ़ने का अब आप स्वयं प्रयत्न करें।

राज्यशासन के पदाधिकारी
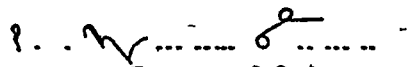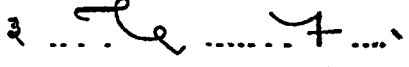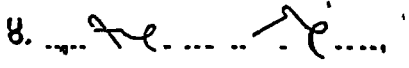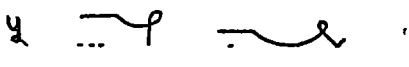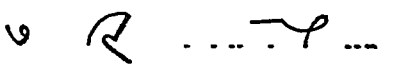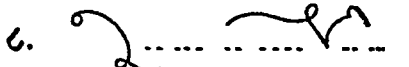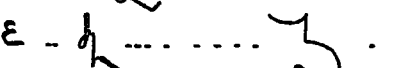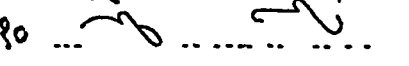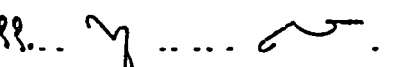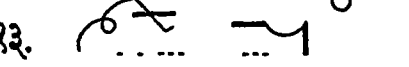
१.	सम्राट	शाहनशाह	प्रिंस-आफ-वेल्स
२.	भारतमंत्री	गवर्नर-जनरल	गवर्नर-जनरल-इन-कौंसिल
३.	वायसराय	गवर्नर	गवर्नर-इन-कौंसिल
४.	कमिश्नर	कलेक्टर	डिप्टी-कलेक्टर
५.	डिप्टी कमिश्नर	मजिस्ट्रेट	असिस्टेन्ट-मजिस्ट्रेट
६.	आनरेरी-मजिस्ट्रेट	ज्वाएन्ट-मजिस्ट्रेट	डिप्टी-मजिस्ट्रेट
७.	डिस्ट्रिक्ट-मजिस्ट्रेट	तहसीलदार	नायब-तहसीलदार
८.	सदर-तहसीलदार	गिरदावर	इंस्पेक्टर-जनरल-आफ-पुलिस
९.	डिप्टी-इंस्पेक्टर जेनरल-आफ-पुलिस	सुपरिंटेंडेंट-आफ-पुलिस	डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट-आफ-पुलिस
१०.	इंस्पेक्टर-आफ-पुलिस	सब-इंस्पेक्टर-आफ-पुलिस	शहर-कोतवाल
११.	थानेदार	रेलवे-पुलिस	खोफिया-पुलिस
१२.	कमाण्डर-इन-चीफ़	जङ्गी-लाट	प्रधान-सेनापति
१३.	डाइरेक्टर-जेनरल	एडजूटेन्ट-जेनरल	फील्ड-मार्शल
१४.	मेजर-जनरल	लेफटिनेन्ट-जेनरल	केप्टेन

———

अभ्यास—६६
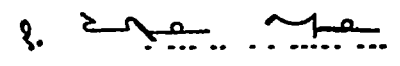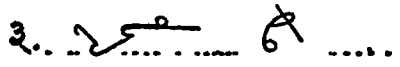
इंग्लैंड के बादशाह भारत के सम्राट तथा शहनशाह कहे-जाते-/ हैं। इनके सबसे ज्येष्ठे पुत्र को जो राज्याधिकारी भी होते-/ हैं प्रिंस-आफ-वेल्ज़ कहते-हैं। भारत के शासन के सबसे-बड़े / उच्चाधिकारी भारत-मंत्री-हैं। जिन्हें भारत-सचिव के नाम से भी पुकारते-हैं। यह हर पाँचवें वर्ष सम्राट की मंजूरी से / भारत-राज्य का प्रबन्ध करने-के-लिए गवर्नर-जेनरल/ को भेजते-हैं जिन्हें वायसराय भी कहते-है। इनकी सहायता / के-लिए केन्द्रीय-एसेम्बली और कौंसिल-आफ-स्टेट का निर्माण / हुआ-है जो भारतवर्ष भर के लिए नये-नये कानून / बना-कर इनकी सहायता करते-हैं। फौजी मामलों में जो / प्रधान-सेना-पति वायसराय को सलाह-देते-है उन्हे / कमांडर-इन-चोफ या जंगी-लाट कहते-ह। इनके आधोन / और बहुत से फौजी अफसर-हैं जो काम के अनुसार / डाइरेक्टर-जेनरल, जनरल, फील्ड-मार्शल, मेजर-जेनरल, लेफ्टिनेन्ट और केप्टेन / आदि कहलाते-हैं। गवर्नर-जेनरल ने अलग-अलग प्रान्तों का / राज्य सचालन का अधिकार गवर्नरों को सौंप-दिया-है। कानून / बनाने आदि मे इनकी सहायता के-लिए लेजिस्लेटिव-एसेम्बली और / कौंसिलो का निरमाण किया गया-है। परन्तु प्रान्तोय-कौंसिल अपने / प्रान्त भर ही के लिए कानून-बना सकती-है।

शान्ति / कायम-रखने और उनका ठीक रूप से प्रबन्ध करने-के-/ लिए जो पदाधिकारी-हैं उन्हें कलेक्टर कहते-हैं। कलेक्टर और / गवर्नर के बीच मे एक और अफसर-होता है जिसे/ कमिश्नर या डिविजनल कमिश्नर कहते-हैं। कलेक्टर की सहायता के-/ लिए उसके आधीन डिप्टी-कलेक्टर, असिस्टेन्ट-कलेक्टर, आनरेरी-मजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट-/ मजिस्ट्रेट, .असिस्टेन्ट-

मजिस्ट्रेट, डिप्टी-मजिस्ट्रेट और तहसीलदार होते-हैं। कलेक्टर/ को डिस्ट्रिक्ट-मजिस्ट्रेट, मजिस्ट्रेट और अवध के प्रान्तों में/ डिप्टी-कमिश्नर भी कहते-हैं। तहसीलदार फौजदारी तथा माल के मुकद्मों / का फैसला-तो-करता-ही-है, इसके अलावा वह माल-गुजारी / के वसूलयाबी का भी पूरा प्रबन्ध-रखता-है। इन बातों/ में उसको सहायता-देने-के-लिए नायब-तहसीलदार, गिरदावर/ आदि की भी नियुक्ति होती है। तहसीलदार को सदर-तहसील-/ दार भी-कहते-हैं।

प्रान्त की शान्ति की रक्षा करने-/ के लिए और ऐसे मामलों में गवर्नर को सलाह देने-के-/ लिए जो अफसर-है उसे इंस्पेक्टर-जेनरल-आफ-पुलिस / कहते-हैं। इनके आधीन डिप्टी-इंस्पेक्टर-जेनरल-आफ-पुलिस, पुलिस-/ सुपरिन्टेन्डेन्ट, तथा डिप्टी-पुलिस-सुपरिन्टेन्डेन्ट आदि है। सुपरिन्टेन्डेन्ट-आफ-पुलिस,/डिस्ट्रिक्ट-मजिस्ट्रेट के आधीन होते-हैं और नगर को सुख-/ शान्ति कायम-रखने में उसकी सहायता करते-हैं। इनके आधीन / इन्सपेक्टर-पुलिस, सब-इंस्पेक्टर-पुलिस, शहर-कोतवाल तथा थानेदार होते / हैं। खोफिया-पुलिस तथा रेलवे-पुलिस, पुलिस के भिन्न-भिन्न / शाखाएं हैं। साधारण पुलिस को कांस्टेबिल भी-कहते-हैं।/

४००

सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थाएँ

सरकारी संस्थाएँ (१)

१.	बृटिश पार्लियामेन्ट	हाउस आफ कमान्स
२.	हाउस आफ लार्डस्	अँग्रेजी प्रतिनिधि सभा
३.	अँगरेज़ सरदार सभा	इण्डिया कौंसिल
४.	प्रिवी कौंसिल	राज्यपरिषद्
५.	कौंसिल आफ स्टेटस्	केन्द्रीय सभा
६.	सेन्ट्रल एसेम्बली	प्रान्तीय व्यवस्थापिका-सभा
७.	लेजिस्लेटिव एसेम्बली	कौंसिल
८.	सरदार-सभा	म्युनिसिपल बोर्ड
९.	डिस्ट्रिक्ट बोर्ड	नोटीफाइड एरिया
१०.	इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट	कारपोरेशन
११.	पोर्ट ट्रस्ट	यूनियन कमेटियाँ
१२.	नरेन्द्र मण्डल	चेम्बर आफ प्रिंसेस
१३.	लोकल सेल्फ गवर्नमेंन्ट	गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया

ग़ैर-सरकारी संस्थाएँ (२)

अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी

२.	कांग्रेस पार्लियामेंट्री बोर्ड	प्रांतीय कांग्रेस कमेटी
३.	प्राविंशल कांग्रेस कमेटी	सोशलिस्ट पार्टी
४.	डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी	नगर कांग्रेस कमेटी
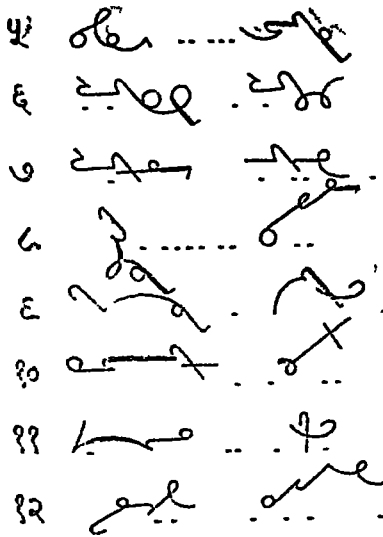
५. हिंदी-साहित्य-सम्मेलन नागरी-प्रचारिणी-सभा
६. अखिल भारतवर्षीय हिन्दू महासभा
अखिल भारतवर्षीय मुस्लिम लीग
७. अखिल भारतवर्षीय खादी संघ
कोआपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी
८. प्रान्तीय आदि हिन्दू महासभा हरिजन-सेवा-संघ
९. प्रांतीय मजदूर सभा लेबर यूनियन
१०. सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अहरार पार्टी
११. चेम्बर आफ कामर्स ट्रेड यूनियन
१२. यू. पी. सेकेंडरी एजूकेशन एसोसियेशन
सरवेन्ट आफ इण्डिया सोसाइटी

अभ्यास—६७

इङ्गलैंड तथा उसके उपनिवेशों का शासन बृटिश-पार्लिया-मेन्ट द्वारा / होता है। इस पार्लियामेन्ट की दो शाखाएँ हैं, जो हाउस-/ आफ-कामन्स और हाउस-आफ-लार्डस् के नाम से पुकारी-/ जाती-हैं। हाउस-आफ कामन्स को अंग्रेजी प्रतिनिधि-सभा और / हाउस-आफ-लार्डस् को अंग्रेजी-सरदार-सभा कहते-हैं। प्रिवी-कौंसिल / इंग्लैंड तथा उपनिवेशों के-लिए सब-से-बड़ा न्यायालय है। / भारत का शासन वह इण्डिया कौंसिल द्वारा करती-है।

इसी-/ तरह सारे भारत के वास्ते कानून बनाने-के-लिए कौंसिल-/ आफ-स्टेट्स और सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव-असेम्बली-हैं। इन्हे राज्य-परिषद् / तथा केन्द्रीय-असेम्बली भी कहते-हैं। प्रांतों में भी इसी- / तरह लेजिस्लेटिव-असेम्बली और कौंसिलें हैं। कौंसिल को अपर-हाउस / और लेजिस्लेटिव-असेम्बली को लोअर-हाउस भी कहते-हैं। इन्हीं / व्यवस्थापिका-सभाओं द्वारा प्रांतों के-लिए सारे कानून बनाये-/ जाते-हैं।

इसी-तरह नगरो के देहाती और शहराती हिस्सों को / सुव्यवस्थित हालत में रखने के लिए म्युनिसिपल-बोर्ड डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड तथा / नोटी-फाइड-एरिया कायम की गई-हैं। कलकत्ते, बम्बई / आदि में म्युनिसिपल-बोर्ड की जगह कार-पोरेशन और पोर्ट-ट्रस्ट / हैं। कारपोरेशन के अध्यक्ष को मेयर कहते हैं।

राजा-महाराजाओं / की सभाओं को नरेन्द्र-मण्डल या चेम्बर्स-आफ-प्रिन्सेज कहते-/ हैं। १६१

———

अभ्यास—६८

(२)

हिन्दुस्तान के राजनैतिक क्षेत्र में सब-से-बड़ी संस्था अखिल-/ भारतवर्षीय-नेशनल-कांग्रेस-है। इस आल-इण्डिया-नेशनल-कांग्रेस-ने/ अपने-काम-करने-के-लिए हर-एक प्रान्त, नगर या/ गाँवों में अपनी अलग-अलग कमेटियाँ मोकर्रर-कर-रक्खी-हैं / जिसे आल-इण्डिया-कांग्रेस-कमेटी, प्रांतीय-कांग्रेस-कमेटी, नगर कांग्रेस-कमेटी/ या ग्राम्य-कांग्रेस-कमेटी कहते-हैं। डिस्ट्रिक्ट काग्रेस-कमेटी या /-विलेज-कांग्रेस-कमेटी, प्राविंशियल-कांग्रेस-कमेटी के आधीन हैं/।

भारत और प्रान्तों की कौंसिलों के चुनाव के लिए कांग्रेस ने/ एक पार्लियामेंट्री-बोर्ड और खद्दर प्रचार के लिये आल-इंडिया-स्पिनर्स-/ एसोसियेशन बना-रखा-है जिसे अखिल-भारतवर्षीय-खादी-संघ भी / कहते-हैं।

नेशनल-लिबरल-फेडरेशन, अखिल-भारतवर्षीय-हिन्दू-महा-सभा, अखिल/-भारतवर्षीय-मुसलिम-लीग आदि भी राजनैतिक संस्थाएँ हैं पर इनका / काम किसी विशेष जाति या वर्ग ही के लिए होता / है, सारे देशवासियों के लिए नहीं।

देश में हिन्दी-प्रचार / के-लिए सबसे ऊँचा स्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ही का-/है। इस सम्बन्ध में नागरी-प्रचारिणी-सभा का नाम भी आदर/ के साथ लिया-जाता-है।

इनके अलावा अलग-अलग जाति / और सम्प्रदायों ने अपने-अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए/ अलग-अलग संस्थाएँ बना रखी-हैं, जैसे आदि-हिन्दू-सभा, / अग्रवाल-महासभा, आल-इंडिया कायस्थ सभा आदि।

हरिजन-सेवा-संघ/, प्रांतीय-मजदूर-सभा, लेबर-यूनियन, सिख-गुरुद्वारा-प्रबन्धक-कमेटी, चेम्बर-आफ-/ कामर्स, सर्वेन्ट्स-आफ-इण्डिया-सोसाइटी आदि संस्थाएँ भी देश/ में अच्छा काम-कर-रही-हैं।

२२६

पोस्ट-आफ़िस-विभाग

1. ...
2. ...
3. ...
4. ...
5. ...
6. ...
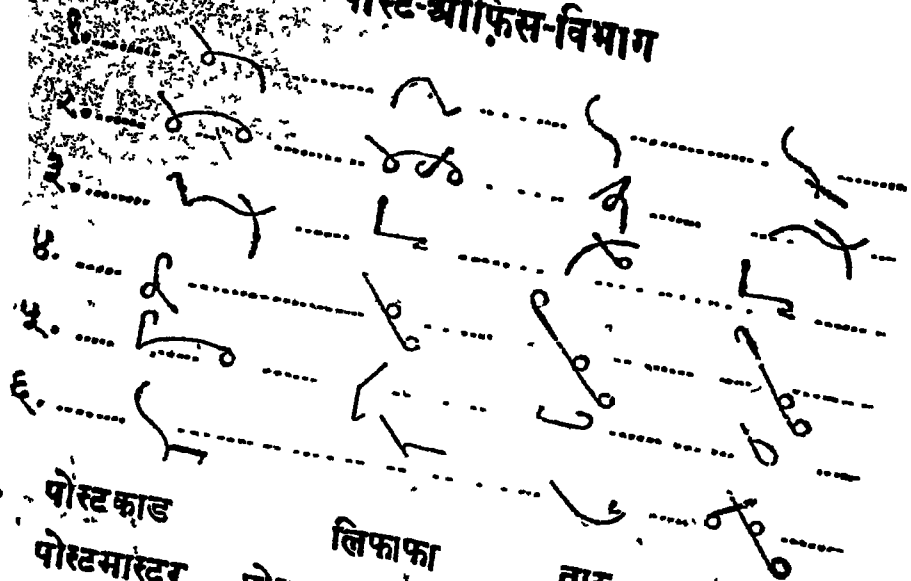
१. पोस्टकार्ड लिफाफा तार तार-बाबू
२. पोस्टमास्टर पोस्ट-मास्टर-जेनरल रजिस्ट्री मनीआर्डर
३. फारेन-मनीआर्डर डाकिया लेटर-बक्स डाकखाना
४. टेलीग्राफ-सुपरिटेंडेंट पोस्ट-आफिस सब-पोस्ट-आफिस
५. टेलीग्राफ-मास्टर ब्रांच-पोस्ट-आफिस
६. तार-घर चिट्ठी पैकर पियुन खत पत्र हेड-पोस्ट-आफिस

अभ्यास—६६

रेलवे के बाद यदि किसी-डिपार्टमेंट का महत्व है तो / वह पोस्टल-डिपार्टमेंट ही है। यहाँ तीन या चार पैसे / में पोस्टकार्ड तथा लिफाफा को भेज-कर हजारों मील की / खबर घर बैठे मँगवा सकते हो। तार से तो खबर / कुछ ही घंटों या मिनटों में पहुँचती-है।

पोस्ट-आफिस / के सब-से-बड़े प्रांतीय अफसर को पोस्ट-मास्टर-जेनरल / और नगर के सब से बड़े अफ़सर को पोस्ट-मास्टर / कहते हैं। इनके आधीन सब-पोस्ट-मास्टर तथा ब्रांच-पोस्ट-/ मास्टर होते हैं। इसी तरह टेलीग्राफ-डिपार्टमेंट के अफ-सर को / टेलीग्राफ सुपरिंटेंडेंट या टेलीग्राफ-मास्टर कहते हैं और तार / भेजने वाले बाबू को तार-बाबू कहते हैं।

चिट्ठी या खत / जिनकी रजिस्ट्री की आवश्यकता नहीं-होती वह लेटर-बक्स में / डाल-दिये-जाते हैं। डाकिया उन्हें लेटर-बक्स से निकाल / कर हेड-आफिस, सब-पोस्ट-आफिस या ब्रांच-पोस्ट-आफिस / में ले-जाता है। वहाँ से फिर वे जिन नगरों के / रहने-वालों के पत्र होते हैं उन नगरों के डाकखानों में / भेज दिये-जाते-हैं। वहाँ उन पत्रों के बंडलों / को पैकर लोग खोलते-हैं और फिर ये चिट्ठियाँ पीयुन / द्वारा बँटवा-दी-जाती-हैं।

पोस्ट-आफिस द्वारा दूसरे / नगरों या सुदूर देशों में रुपया भी भेज-सकते-हैं। / अपने ही देशों में रुपया मनी-आर्डर द्वारा और सुदूर / देशों में फारेन-मनी आर्डर द्वारा रुपया भेज सकते हैं। २१६

रेलवे-विभाग
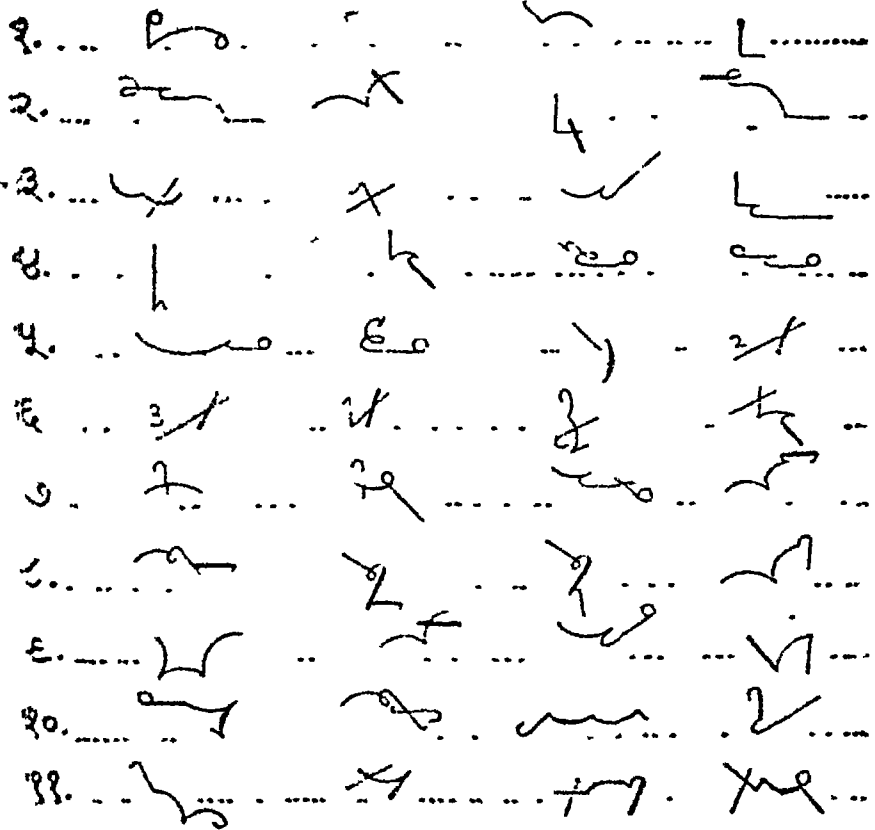
१. स्टेशन मास्टर गार्ड प्लेटफार्म टिकट
२. बुकिंग क्लर्क माल बाबू टिकट बाबू गुड्स क्लर्क
३. ईस्ट इण्डियन रेलवे जी. आई. पी. रेलवे
एन. डब्लू. आर. रेलवे टिकट कलेक्टर
४. टी. टी. आई टाइमटेबिल फर्स्ट क्लास सेकंड क्लास
५. इंटर क्लास थर्ड क्लास पहला दर्जा दूसरा दर्जा
६. तीसरा दर्जा ड्योढ़ा-दर्जा तीर्थ-यात्री रेलवे टाइमटेबिल
७. ट्रैफिक मैनेजर ट्रैफिक इंस्पेक्टर इनक्वायरी आफिस
मालगाड़ी

८. मुसाफिर गाड़ी पसेंजर गाड़ी पसेंजर ट्रेन मेल ट्रेन
९. तूफान-मेल मालगुदाम इनवाइस बिल्टी
१०. सिगनेलर मुसाफिरखाना वेटिङ्ग रूम ड्राइवर
११. फायरमैन रेलवे इन्जीनियर चीफ कमर्शल मैनेजर
चीफ आपरेटिङ्ग सुपरिंटेन्डेन्ट

अभ्यास—७०

भारतवर्ष में पहले-पहल-रेलवे का निर्माण बम्बई प्रांत में / हुआ-था। उस-समय-लोगों को यह पहले-पहल काले-/ काले देव तथा दानव के समान मालूम-हुए परन्तु शीघ्र / ही अपनी उप-योगिता के कारण इन्होंने भारतवर्ष के कोने-/ कोने अपना अधिकार जमा-लिया। अब तो किसी देश की/ सुख-शांति व्यापार तथा व्यवसाय आदि का दारोमदार इन्हीं-पर-/ है। बिना इनके एक मिनट भी काम नहीं चल-सकता / ।

गाँव-गाँव तथा नगर-नगर में इन रेलों के ठहरने / के लिए स्टेशन-बने हैं जिसका प्रबन्ध करने-वाले को / स्टेशन-मास्टर कहते-हैं। रेलवे-ट्रेन के चलाने-वाले को ड्राइवर / और उसकी देख-रेख रखने-वाले को 'गार्ड' कहते हैं। /

रेल-पर-चढ़ने के लिए हर-एक आदमी को दाम / देकर टिकट खरीदना-पड़ता-है। जो-हर-एक स्टेशनों के / मुसाफिर खानों में बने हुए टिकट-घरों से मिलता-है। / टिकट-देनेवाले बूको टिकट-बा और साथ के माल की / बिल्टी को बनानेवाले को

बुकिङ्ग क्लर्क कहते हैं । जो माल / मालगाड़ी से भेजा-जाता-है
वह अलग माल-गुदाम में / रखा-जाता-है और उनकी इनवाइस
गुड्स-क्लर्क या माल-/ बाबू बनाता-है । यह टिकट अलग-
अलग दर्जों के-लिए / अलग-अलग रंग के होते हैं । फर्स्ट
तथा सेकंड-क्लास / का टिकट कुछ हरा मायल होता-है, इंटर-
क्लास का / लाल तथा थर्ड-क्लास का पीला होता-है । इसी-तरह /
पहले-दर्जे, दूसरे-दर्जे, ड्योढ़े-दर्जे और तीसरे-दर्जे का / किराया
भी अलग-अलग होता-है ।

किस-वक्त गाड़ी आती / या जाती-है या कहाँ-कहाँ किस-
किस प्लेटफार्म-पर / ठहरती-है इसका पता रेलवे-टाइम-टेबिल
में दिया-रहता-/ है । इसके अलावा हर-एक स्टेशनों पर एक
इन्क्वायरी आफिस / होती-है जहाँ रेलवे-सम्बन्धी हर-एक
बातों को पूछ-/ सकते-हो । रेलवे-गाड़ियों की भी तेजी तथा
माल और / आदमियों को ले-जाने के लिहाज से कई किस्में हैं /
जैसे मेल-ट्रेन, तूफान-मेल, पैसेंजर-ट्रेन या पैसेंजर-गाड़ी / तथा
मालगाड़ी आदि ।

स्टेशनों पर टिकट की जाँच टिकट-कलेक्टरों / द्वारा की
जाती-है और ट्रेन पर टी. टी. आई / द्वारा होती-है । काम के
लिहाज से रेलवे के और / भी पदाधिकारी तथा कर्म-चारी
होते-हैं जैसे चीफ-कमर्शल-/ मैनेजर, चीफ-आपरेटिङ्ग-सुपरि-
टेन्डेन्ट, रेलवे-इन्जीनियर, ट्रैफिक-मैनेजर, ट्रैफिक-/ इन्सपेक्टर,
फायरमैन सिगनेलर, आदि आदि । अब किसी-भी मुसाफिर
गाड़ी / पर बैठकर तीर्थयात्रा करना बहुत-सुविधाजनक तथा
सुहावना मालूम-होता-है / ।

बालचर मंडल

1 ...
२. ...
३. ...
४ ...
५ ...
६. ...
७. ...
८. ...
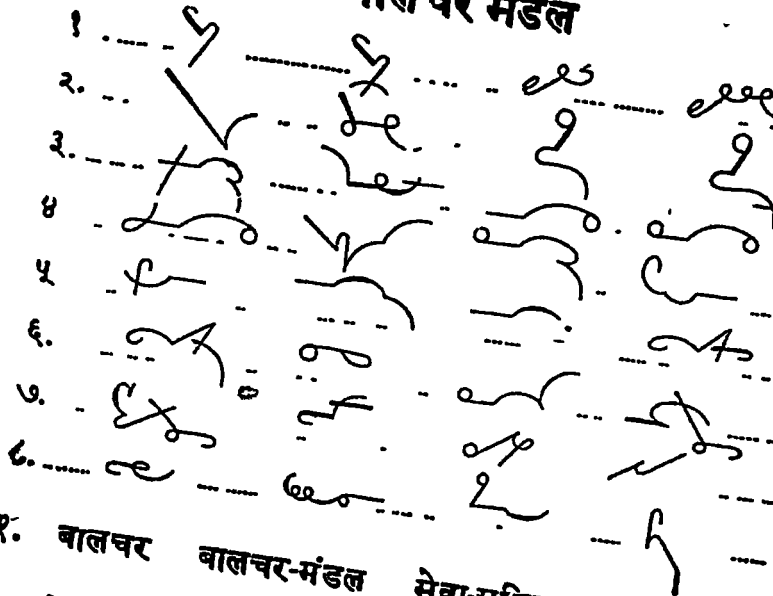
१. बालचर बालचर-मंडल सेवा-समित सेवा-समित-
२. बेडन-पावेल ब्वाय-स्काउट-एसोसियेशन
बेडन-पावेल-ब्वाय-स्काउट-एसोसियेशन
हेड-कार्टर
३. चीफ-कमिश्नर हेड-कार्टर-कमिश्नर
आर्गेनाइजिङ्ग-कमिश्नर
स्काउट-मास्टर
४. असिस्टेन्ट-स्काउट-मास्टर पेट्रोल-लीडर कबमास्टर
५. टोली-नायक दल-नायक स्काउट-कमिश्नर
६. मारचिङ्ग-आर्डर कैम्प-फायर कैम्पिङ्ग मारचिङ्ग-गाना
७. ध्रुवपद-शिक्षण स्कार्फ स्काउट-मेला कोमलपद-शिक्षण
८. कोर्ट-आफ-आनर गर्ल-गाइड शेर-बच्चे रोवर
दीक्षांत-संस्कार
टोलीपरेड हाइकिङ्ग

अभ्यास—७१

धन्य है श्री मालवीय जी को जिन्होंने भारतीयों के हित-/के-लिए सेवा-समिति-व्वाय स्काउट-एसोसियेशन को स्थापित किया-/ है। इस समय इसके चीफ-आर्गेनाइजिङ्ग-कमिश्नर स्वनाम धन्य श्री / श्रीराम-जी-वाजपेयी-हैं और हेड-क्वार्टर कमिश्नर-हैं श्री / जानकी शरण जी वर्मा।

वेडन-पावेल-व्वाय-स्काउट-एसोसियेशन के / नाम से एक और भी संस्था है जिसे लार्ड वेडन-/ पावले-ने स्थापित किया-है। उसका संचालन अधिकतर यहाँ के / अफ़सर वर्ग के हाथ-में-है। लार्ड वेडन-पावेल ने / भी हिन्दुस्तानियों के प्रति अक्सर ऐसे विचार प्रगट-किये-हैं / जो किसी-भी देशाभिमानी को रुचिकर नहीं हो-सकते।

यह / बालचर-मण्डल अपने बाल-चरों या स्काउटों को योग्यतानुसार कई / नामों से पुकारती है जैसे शेर-बच्चे, रोवर आदि। इनके / नायकों को टोली-नायक, दल-नायक, कब-मास्टर तथा स्काउट-/ मास्टर आदि कहते हैं।

यह बालचर टोली-परेड, कैम्प-फ़ायर, / हाइकिङ्ग आदि के लिए अक्सर मारचिङ्ग-आर्डर में गाने गाते-/ हुए अपने नगरों से बाहर भी जाते हैं। इनके लीडर / को पेट्रोल-लीडर कहते हैं।

योग्यतानुसार इन्हें कोमल-पद-शिक्षण / या ध्रुव-पद-शिक्षण के प्रमाण-पत्र बालचर मण्डल से / मिलते हैं।

खेलों द्वारा बालचरों को देश भक्त, सचरित्र, स्वाभिमानी / तथा स्वावलम्बी बनाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा-कर-देना / सेवा-समिति का मुख्य उद्देश्य है। कोई भी सच्चा स्काउट / बुरी बातों से दूर रहेगा और अपने देश-महेश-नरेश / के लिए तन-मन-धन न्यौछावर करने-को तैयार रहेगा / । २३०

ग्रह-नक्षत्रादि

१. सोमवार पीर मङ्गलवार बुद्धवार
२. बृहस्पतिवार जुमेरात शुक्रवार जुमा
३. शनिवार शनिश्चर रविवार इतवार
४. महीना सूर्य सूरज चाँद
५. चन्द्रमा चन्द्रवार वर्ष वार्षिक
६. दिन रात हफ्ता सप्ताह
७. साल मास मासिक साप्ताहिक
८. सुबह सबेरा दोपहर चैत्र
९. बैसाख ज्येष्ठ असाढ़ सावन
१०. भादों कुवार कार्तिक अगहन
११. पूस माघ फागुन जनवरी
१२. फरवरी मारच अप्रैल मई
१३. जून जुलाई अगस्त सितम्बर
१४. अक्टूबर नवम्बर दिसम्बर तारीख —संख्या के पहिले
१५. ग्रह नक्षत्र वार तिथि
१६. अमावस्या पूरनमासी सूर्य-ग्रहण चन्द्र-ग्रहण
१७. शुक्ल-पक्ष कृष्ण-पक्ष रमज़ान शबेरात
१८. मिनट घंटा पल विपल

———

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

१०.

११.

१२.

१३.

१४.

१५.

शिक्षा—विभाग

१. स्कूल कालेज यूनीवर्सिटी हेडमास्टर
२. प्रिन्सिपल ट्रेनिङ्ग कालेज डिप्टी-साहब डाइरेक्टर
३. शिक्षा-मन्त्री म्युनिसिपल-स्कूल डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड-स्कूल शिक्षा-प्रणाली
४. प्रारम्भिक-शिक्षा रजिस्ट्रार चान्सलर वाइस-चान्सलर
५. शिक्षा-केन्द्र प्रायमरी-स्कूल सेकेन्डरी-स्कूल माध्यमिक-शिक्षा
६. अनिवार्य-शिक्षा निशुल्क-शिक्षा मिडिल-स्कूल हाई-स्कूल
७. ग्रेजुएट विश्वविद्यालय सरकिल-इन्सपेक्टर गुरुकुल
८. विद्यापीठ पाठशालाएँ पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक
९. एफ. ए. बी. ए. एम. ए. विद्यालय
१०. सैंडीकेट सीनेट स्त्री-शिक्षा औद्योगिक-शिक्षा
११. दस्तकारी-शिक्षा शिल्प-शिक्षा डिप्टी-इन्सपेक्टर निरीक्षण
१२. शिक्षक विद्यार्थीगण शिक्षा किंडर-गार्टन-प्रणाली
१३. किंडर-गार्टन-सिस्टम मांटसेरी-प्रणाली मांटसेरी-सिस्टम परीक्षा
१४. यू. पी. सेकेंडरी-एजूकेशन-एसोसियेशन एंग्लो-वर्नाक्यूलर-स्कूल वर्नाक्यूलर-स्कूल अध्यापक
१५. गुरू-शिष्य छात्रालय कनवोनकेशन कैरिकुलम

अभ्यास—७२

[ग्रह-नक्षत्रादि सम्बन्धी शब्दों पर अभ्यास]

हमारे यहाँ जो काम होते-हैं सब अच्छे ग्रह, नक्षत्र / और साइत से किए जाते हैं। तिथी तथा वारों का / भी पूरा विचार-रक्खा-जाता-है। कृष्ण पक्ष-की अमावस्या, / चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण के दिन तो निषिद्ध कार्य / ही किये-जाते-हैं। शुभ कार्य शुक्ल पक्ष की पौर्णिमा / के दिन हो-सकते-है। यों तो कार्य करने-के-/ लिए साल या वर्ष में ३६५ दिन पड़े हैं पर / नवरात्रि का सप्ताह और विजया-दशमी का हफ्ता बड़ा पवित्र / माना-जाता है।

हिन्दू-मुसलमानों-और-अंग्रेजों के महीने के / अलग अलग नाम है जैसे हिन्दुओं के महीने के नाम / यदि चैत, वैसाख, ज्येष्ठ आदि है तो अंग्रेजी महीनों के / नाम जनवरी, फरवरी, मार्च आदि हैं। मुसलमानों के महीनों के / नाम मोहर्रम, रमजान, शबेरात आदि हैं। इसी तरह अलग-अलग / दिन भी है। अपने यहाँ बुद्धवार और शनिश्चर के दिन / कोई शुभ कार्य नहीं करते। बृहस्पतिवार, रविवार या मङ्गलवार अच्छे / दिन माने-गये-हैं। ईसाई लोग रविवार को और मुसलमान / लोग शुक्रवार या जुमें को बहुत पवित्र मानते-हैं। १६६

अभ्यास—७३

इस-समय हमारे प्रांत के शिक्षा की बागडोर हमारे अनु-भवी / मन्त्री श्रीमान् प्यारेलाल जी शर्मा के हाथों में है। निःशुल्क/ और-अनिवार्य-शिक्षा का देना ही उनका मुख्य-उद्देश्य है। / इसके लिए वे प्रांत भर के एंग्लो-वर्नाक्यूलर या वर्नाक्यूलर-/ स्कूलों, कालेजों और यूनिवर्सिटियों की शिक्षा-प्रणाली का अध्ययन कर-/ रहे-हैं और इसके सम्बन्ध में समय-समय-पर

डाइरेक्टर-/ आफ़-पब्लिक-इंस्ट्रकशन, सुयोग हेडमास्टरों तथा ट्रेनिङ्ग-कालेजों के प्रिंसिपलों / से भी सलाह लेते-हैं।

देखना उन्हें यह-है कि / प्रायमरी-स्कूल, सेकेन्डरी-स्कूल मिडिल-स्कूल तथा हाई-स्कूल कौन / कहाँ-पर बढ़ाये या घटाये जा-सकते-हैं जिससे कि / कम-से-कम खर्च में अधिक-से-अधिक लड़कों को / पढ़ाया जा-सके। स्त्री-शिक्षा; औद्योगिक-शिक्षा, दस्तकारी-शिक्षा तथा / शिल्प-शिक्षा की तरफ उनका विशेष ध्यान-है प्रारम्भिक-शिक्षा / के साथ-ही-साथ माध्यमिक-शिक्षा को भी वह सरल / बनाना-चाहते-हैं।

आप छोटे बच्चों के शिक्षा के-लिए / किंडर-गार्टन-प्रणाली मांटसेरी-प्रणाली तथा अन्य शिक्षा-प्रणालियों का / भी अध्ययन-कर-रहे हैं।

आशा-की-जाती-है कि / इनके मंत्रित्वकाल में एफ. ए.; बी. ए; एम. ए. के / बेकार ग्रेजुएटों तथा बेकार विद्यार्थीगण को रोजगार मिल-सकेगा और / शिक्षा-माध्यम मातृभाषा द्वारा होकर यह देश के कोने २ / फैला-जायगा।

इसके-लिए इनको प्रांत में गुरुकुल, विद्यापीठ, विद्यालयों,/ छात्रालयों, पाठशालाओं, मक़तबों का पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-पुस्तकें निर्धारित-करना-/ पड़ेगा और इनको धन आदि से भी सहायता देना-पड़ेगा / ।

अभी हाल-में ही हमारे प्रयाग-विश्वविद्यालय की स्वर्ण-जयन्ती / मनाई-गयी-थी जिनमें कोर्ट द्वारा स्वीकृत उपाधियों से यूनिवर्सिटी / के चांसलर ने देश के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, धुरंधर विद्वान तथा / देश-सेवियों को विभूषित किया-था। २६६

कृषि
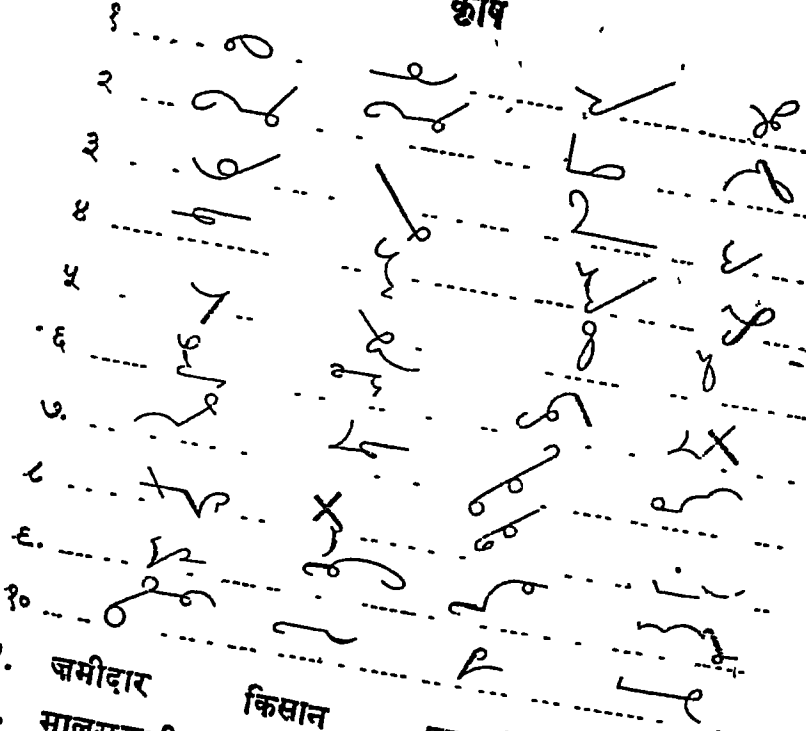
१. जमींदार किसान पटवारी तहसीलदार
२. मालगुजारी मालगुजार ठेकेदार लंबरदार
३. नहर आबपाशी तालुक़ेदार तक़ावी
४. काश्तकार जोताई पैदावार महाजन
५. इन्जीनियर पशुचिकित्सा हिस्सेदार पट्टीदार
६. बेदखल बकाया वसूलयाबी इस्तमरारी-बन्दोबस्त
७. मौरूसी शिकमी काश्तकार हीनहयात
८. पट्टा-कबूलियत जमाबन्दी साकितुल-मिलकियत स्याहा खतौनी

अवधरेंट ऐक्ट आगरा-जमींदार-एसोसियेशन

एग्रिकलचरिस्ट-रिलीफ-ऐक्ट इनकम्बर्ड-स्टेट-ऐक्ट

सहकारी-शाखा-समिति कारिन्दा सजावल

खुद कास्त

अभ्यास—७४

अच्छे जमींदार या ताल्लुकेदार किसानों को अपनी याया समझते-हैं / और उनके साथ सद्व्यवहार के साथ पेश आते-हैं। बहुत / स्थानों-पर मालगुजारी वसूल-करने और सरकार के यहाँ / भेजने के लिए, मालगुजार, ठेकेदार या नम्बरदार होते हैं।

आबपाशी / के-लिए कुएँ, तालाब या नहर बनाई-जाती-हैं, जिससे / बोआई-जुताई होने-पर फसल की पैदावार अच्छी-हो। फसल / के अच्छे न-होने-पर अथवा सूखा या पाला-पड़ने-/ पर पटवारी या तहसीलदार इसकी रिपोर्ट सरकार से कर देते-/ हैं। वहाँ से इन्हें अगली फसल जोतने बोने के लिए / तकावी मिलती है।

काश्तकारों को जब कर्ज की आवश्यकता-पड़ती-/ है तो सहकारी-समितियों या महाजनों से लेकर अपना / काम चलाते-हैं। यदि एक ही गाँव में छोटे-छोटे / कई जमींदार हुए या एक-ही जोत में कई छोटे-/ छोटे किसान हुए तो उन्हें हिस्सेदार या पट्टीदार कहते हैं / ।

जमींदार अपने लगान की वसूलयाबी कारिंदा के द्वारा कराता है / । वह इस वसूलयाबी का पूरा हिसाब जिन बही-खातों में रखता / है उसे जमाबन्दी-स्याहा या खतौनी कहते हैं।

पट्टा-कबूलियत / में जमींदार और किसानों के बीच की गई उन शर्तों / की लिखा-पढ़ी रहती है जिन पर काश्तकारों को जमीन दी-जाती-है। लगान न अदा-करने-पर जमींदार आगरा / के प्रांत में आगरा-टेनेन्सी-एक्ट के धाराओं के अनुसार / और अवध में अवधरेन्ट-एक्ट के अनुसार किसानों पर मुकदमें / चलाकर उन्हें बेदखल कर-देते-हैं। इसलिए लगान को बकाया / कभी न-रखना-चाहिए बल्कि उसे फौरन अदा-कर-देना-/ चाहिए।

जमीनों की किस्मों के-अनुसार अलग-अलग लगान हैं / और इन्हीं लगानों के अनुसार किसानों को खुदकाश्त, शिकमी, हीनहयाती / या मौरूसी किसान कहते हैं। साकितउल-मिल-कियत किसानी का लगान / मौरूसी लगान से भी कुछ काम होता है।

सरकार ने / इनकी मदद के लिए एग्रीकलचरिस्ट-रिलीफ एक्ट, एनकम्बर्ड-स्टेट्स-एक्ट / अभी पास किये हैं। २८४

स्वास्थ्य-विभाग

१.

२.

३.

४.

५.

१. इंस्पेक्टर-जेनरल-आफ़-सिविल-हास्पिटल्स मेडिकल-बोर्ड
   मेडिकल-आफ़िसर-आफ हेल्थ

२. सिविल-सरजन डाक्टर मेडिकल-आफिसर

३. चिकित्सा वैद्यक-चिकित्सा-प्रणाली वैद्य हकीम

४. एलोपैथिक एलोपैथिक-चिकित्सा-प्रणाली यूनानी-चिकित्सा-प्रणाली होम्योपैथिक

५. औषधालय कम्पाउन्डर दाई शफ़ाखाना अस्पताल थर्मामीटर

अभ्यास—७५

रोग चिकित्सा तथा स्वास्थ्य-सुधार के बारे में देहातों की/ जो दयनीय दशा-है उसको बयान-करने-से-ही रोंगटे / खड़े हो-जाते-हैं। जिस समय कोई भयानक छुतहर बीमारी/ फैलती-है तो उनकी न तो किसी किस्म की चिकित्सा-/ होती-है न कोई डाक्टर हकीम या वैद्य ही उनके / पास फटकते हैं। ये बेचारे देहाती वगैर किसी दवा-दारू / या सेवा-शुश्रूषा के हज़ारों की तादाद में भुनगों की / तरह मर जाते-हैं यद्यपि इनका इंतजाम करने के लिए / मेडिकल-बोर्ड, डायरेक्टर-जनरल-आफ़-सिविल हास्पिटल, मेडिकल-आफिसर-आफ-/हेल्थ, सिविल-सरजन आदि बड़ी-बड़ी तनखाहें पाने-वाले अफसर / मोकर्रर-हैं। न शफ़ा-खाने, न अस्पताल और न औषधालय कोई / भी उनके वक्त पर काम नहीं आते हैं।

एलोपैथिक-चिकित्सा-/प्रणाली इतनी कीमती है कि इनके लिए बेकार-है। होम्योपैथिक / चिकित्सा-प्रणाली यद्यपि सस्ती-है परन्तु फिर भी इसी प्रणाली / की दवाइयों को फ़ायदा करने-के-लिए एक बड़े अच्छे / जानकार की आवश्यकता है। सबसे अच्छी सस्ती और सुगम-प्रणाली हमारी / देशी वैद्यक-चिकित्सा-प्रणाली है जिसे कुछ जंगली पत्तियों / के काढ़ा और रस द्वारा भयंकर-से-भयंकर रोग आराम / हो-जाते-हैं।

यदि गवर्नमेंट इन बड़ी-बड़ी तनख्वाहें पाने / वालों के रुपये को बचाकर आजकल के बेकार नवयुवकों को / साल-साल भर की वैद्यक को-शिक्षा-देकर यदि कसबे / और तहसीलों में ही औषधालय खोलवा-दे-तो मेरी समझ / मे यह मसला बड़ी आसानी से हल हो-सकता-है /। नये वैद्यगण भी धीरे-धीरे तजुर्बा को हासिल कर अच्छे / वैद्य हो-सकते-हैं। देहात-वालों को तिनके का सहारा भी / बहुत है, मरता क्या न-करता। २५६

जेल-सेना-पुलिस

२.
३.
४.
५.
६.
७.

१. जेल जेलर सेंट्रल-जेल
२ डिस्ट्रिक्ट-जेल हवालात कैदी-अफसर ज़िला-जेल
३. दण्ड-विधान रिफार्मेटरी-जेल एंडमन-जेल कन्विक्ट-अफसर
४. रिजर्व सेना रिजर्व सैनिक रँगरूट वायु-सेना
एरोप्लेन एयर-फोर्स रायल-एयर-फोर्स वायुयान
पुलिस-स्टेशन कांस्टेबिल, सैंढुरस्ट-कालेज
शहर-कोतवाल हेड-कांस्टेबिल कोतवाल
दोषारोपण अराजकता नज़रबंद

न्याय-विभाग

१. प्रिवीकौंसिल फेडरलकोर्ट हाईकोर्ट जूडिशल कमिश्नर
२. असिस्टेन्ट जूडिशल कमिश्नर जूडिशल कमिश्नर कोर्ट चीफ जस्टिस माननीय जज
३. न्यायाधीश सेशन जज डिस्ट्रिक्ट जज जिला जज
४. सब जज सदर-आला मुन्सिफ चीफ कोर्ट
५. रेवन्यू कोर्ट स्माल काजेज़ कोर्ट अदालत खफीफा सेटिल्मेंट कमिश्नर
६. मोकद्मा फौजदारी के मोकद्में दीवानी के मोकद्में माल के मोकद्में
७. जूरी असेसर ओरिजिनल अपीलेट
८. मुद्दई मुद्दालय वादी प्रतिवादी
९. अटार्नी मोहर्रिर अमीन कुर्क-अमीन
१०. पञ्च पञ्चायत फौजदारी वकील
११. प्लीडर मुख्तार एडवोकेट गवर्नमेंट-एडवोकेट
१२. असिस्टेन्ट-गवर्नमेंट-एडवोकेट बार कौंसिल बार-चेम्बर न्यायालय
१३. अभियोग अभियुक्त जाब्ते-दीवानी हलफ-नामा
१४. बयान-तहरीरी विचाराधीन तजवीज़ गवाह
१५. इजहार पंचनामा जिरह जमानतदार
१६. दस्तावेज़ मस्विदा अर्जी-दावा इकरारनामा
१७. इंदुलतलब-रुक्का जायदाद बार-एसोसियेशन शहादत
१८. इस्तगासा ताजीरात-हिन्द तनकी बनाम

अभ्यास—७६

[जेल और सेना-सम्बन्धी अभ्यास]

देश की शान्ति-रक्षा के-लिए ही दण्ड-विधान तथा / पुलिस और जेलों का निर्माण किया-गया-है। कभी-कभी / जब अशान्ति घोर-रूप धारण करते-हैं-तो सेना / या फौज की आवश्यकता-पड़ती-है जो देश में शान्ति-/ रखने के अलावा बाहर विदेशियों के आक्रमण से भी रक्षा-/ करती-है। आवश्यकतानुसार सेना के कई भाग किये-गये-हैं/। जैसे जल-सेना, स्थल-सेना, वायु-सेना आदि।

वायु-सेना / की बागडोर रायल-एयर-फोर्स के अफसरों के हाथ में-है / इसमें अनेक-प्रकार के वायुयान है जिन्हें हवाई जहाज / या एरोप्लेन कहते-हैं।

सैनिक-अफसरों की उच्च-शिक्षा-के / लिए देहरादून में एक कालेज स्थापित किया-गया-है जिसे / सेंढुरस्ट-कालेज कहते-हैं।

सैनिक-शिक्षा के-लिए नए-नए / रंगरूट भरती किये-जाते-हैं और बहुत सैनिक रिजर्व में-/ रखे-जाते-हैं जिन्हें रिजर्व-सैनिक कहते-हैं।

दण्ड विधान / के अनुसार गिरफ्तार किये हुए आदमियों को पहले हवालात में / रखते-हैं और सजा होने पर जिला या डिस्ट्रिक्ट-जेल, / सेन्ट्रल-जेल आदि जगहों में सुविधानुसार भेज देते-हैं। जेल / के अफसर को जेलर कहते-हैं। वह पुराने समझदार कैदियों / से भी जेल के इंतजाम में मदद लेते-हैं जिन्हें / कैदी-अफसर या कनविक्ट अफसर कहते-हैं।

नए कम उम्र / की बालिकाएं बालक यदि कोई जुर्म में पकड़े जाते हैं / तो रिफार्मेटरी जेल में भेज दिये-जाते हैं पर उम्र / डकैत

तथा कालेपानी की सजा पाये हुये कैदियों को एंडमन-/ जेल में भेजा जाता है।

शहर की शान्ति के-लिए / जगह-जगह पुलिस-स्टेशन बने-हैं जिनमें शहर-कोतवाल, कोतवाल / तथा हेड कांस्टेबिल और कांस्टेबिल आदि रहते हैं। २५८

अभ्यास—७७

दिवानी और फौजदारी-के-मोकदमों का फैसला करने-के-लिए / सब-से-बड़ी अदालत को प्रिवी-कौंसिल कहते-हैं। नये/ विधानों के पेचीदगी को तय करने-के-लिए अभी हाल-/ में एक कोर्ट कायम किया-गया-है जिसे फेडरल-कोर्ट / कहते-हैं। प्रिवी-कौंसिल के मोकदमें इंगलैंड में होते-हैं / । भारत में| सब-से-बड़ी अदालत हाईकोर्ट की- है।

जैसे / कलेक्टर आदि जब फौजदारी-के-मोकदमे करते-हैं तो मजिस्ट्रेट / कहलाते-हैं उसी-तरह जब डिस्ट्रिक्ट-जज फौज-दारी-के/-मोकदमे-करते-हैं तो सेशन-जज कहलाते-हैं। माल-के-/ मोकदमें की सब-से-बड़ी अदालत बार्ड-आफ-रेविन्यू है / और उसके आधीन डिविजनल-कमिश्नर, सेटिलमेंट-आफिसर तहसीलदार आदि माल-/ के-मोकदमे करते-हैं। अवध-प्रान्त की सब-से-बड़ी / अदालत को जूडिशल कमिश्नर-कोर्ट कहते हैं। इन न्यायाधीशों के / पद के अनुसार कहीं जुडिशियल-कमिश्नर या असिस्टेंट जुडिशियल-कमिश्नर, / कहीं कहीं चीफ-जस्टिस या केवल माननीय-जज कहते हैं / ।

मुकदमे को जो दायर करता है उसे मुद्दाई या वादी / कहते-हैं और जिसके खिलाफ वह मोकदमा दायर करता-है / उसे मुद्दालेह या प्रतिवादी कहते-हैं। जो कानून के जानकार /

मोवक्किलों की तरफ से इन मोकदमों की बहस किसी कोर्ट / या इजलास में करते-हैं उनको पद के अनुसार प्लीडर, / मुख्तार, एडवोकेट या अटार्नी कहते हैं। गवर्नमेंट ने अपने मोकदमों / की पैरवी या बहस करने-के-लिए जिले में गवर्नमेंट-/ प्लीडरों को और हाईकोर्ट मे गवर्नमेंट-एडवोकेट, असिस्टेंट गवर्नमेंट-एडवोकेट, / हाईकोर्ट-प्लीडर मुकर्रर कर-रखे-हैं।

किसी मोकदमें को दायर-/ करने-के-लिये मुद्दई को न्यायालय में अरजीदावा पेश-करना-/ होता-है और उसके जवाब मे मुद्दालेह बयान-तहरीर पेश-/ करता-है। फिर दोनों के हलफिया बयान-होते हैं-और / उसके बाद मुकदमा जाब्ता-दिवानी चलता-है। इदुलतलब-रुक्का लेन-/ देन अथवा जायदाद के मुताल्लिक जो मुकदमें दायर-/ होते-हैं उन्हें दीवानी के मोकदमे कहते-हैं।

फौजदारी-के-/ मोकदमे में इस्तगासा दायर कर अभियुक्त के खिलाफ अभियोग लगाया-/ जाता-है। बहुत से जुर्मों मे पुलिस को अख्तियार-होता-/ है कि मुजरिम को पहले ही गिरफ्तार कर-ले या / किसी जमानतदार के जमानत देने-पर छोड़-दे।

इसके-बाद / ही गवाह पेश किये-जाते हैं, इजहार लिए जाते / हैं, जिरह होती-है और बहस-मुबाहसे के बाद तजवीज / दी-जाती-है।

३५३

———
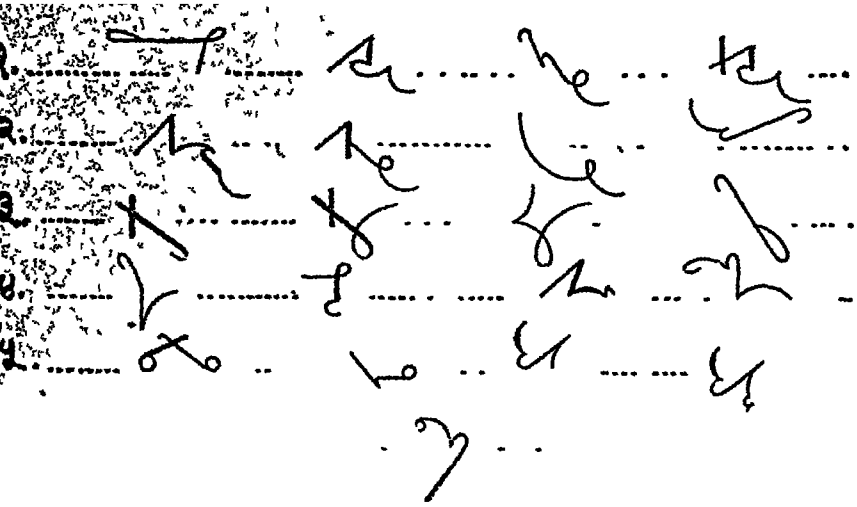
स्टाक-एक्सचेंज

१. स्टाक एक्सचेंज आरडिनरी शेयर प्रीफरेन्स शेयर

डिफरड आरडिनरी शेयर

२. रीडीमेबिल शेयर रीडीमेबिल प्रीफरेन्स शेयर

फाउन्डर्स शेयर शेयर वारन्ट

३. डिबेनचर डिबेनचर-होलडर शेयर-होलडर प्रार्थना-पत्र

४. परपिच्वल एक्सडिवीडेन्ट रज़ामन्दी मेरीटोरियम

५. हेड आफिस अपकर्ष दिवाला दिवालिया

सरचार्ज

१.
२.
३
४.
५.
६
७.
८
९.
१०
११
१२.
१३.
१४.
१५.
१६.
१७.
१८.

बैङ्क और कम्पनी

१. एजेन्ट सब एजेन्ट बहीखाता खाताबही
२. रोकड़-बही लेन-देन हानि-लाभ आँकड़ा
३. आय-व्यय मुनीम नाम-लेखा विवरण-पत्र
४. बैलेंस-शीट हुँडी हुँडी पुरजा दर्शनी हुँडी
५. मुद्दती हुँडी भुक्तान जमा खर्च डिप्रीसियेशन
६. मूल्याकर्ष सिङ्गिल-एन्ट्री सिस्टम डबल-एन्ट्री-सिस्टम
डबल एन्ट्री-प्रणाली
७. कर्जदार साझीदार कैशडिस्काउंट बेयरर्स-चेक
८. आर्डर-चेक क्रास-चेक एन्डोर्समेंट सेविङ्ग-बैङ्क
९. सेविङ्ग-बैङ्क एकाउन्ट पासबुक चेकबुक
फिक्सड-डिपाजिट
१०. करेन्ट एकाउन्ट बट्टे-खाते बोनस आमदनी
११. प्रामेसरी नोट प्राइवेट कम्पनी पबलिक कम्पनी
इनश्योरेंस कम्पनी
१२. लिक्वीडेशन मेमोरेंडम मेमोरेंडम-आफ-एसोसियेशन
आर्टिकिल्स-आफ-एसोसियेशन
१३. लिमिटेड लिमिटेड-कम्पनी सारटीफिकेट प्रासपेक्टस
१४. प्रमोटर्स सबस्क्राइबड-केपिटल अथराइज्ड-केपिटल
पेड-आप-केपिटल
१५. प्रीमियम बीमा पालसी रेट आफ एक्सचेंज
बिल आफ एक्सचेंज
१६ नाट निगोशियेबिल इनकम टैक्स सुपर टैक्स
एकसेस प्राफिट टैक्स
१७. स्टैम्प-ड्यूटी लाइफ-पालसी मेडिकल एकजामिनेशन
आडिटर्स
१८. डिपार्टमेंट होल्डर मार्गेज कम्पनी

अभ्यास—७८

किसी देश की व्यापारिक उन्नति के-लिए उस-दश सुदृढ़ और सुव्यवस्थित-बैंकों का होना-नितान्त आवश्यक-है। बगैर / इनके कोई-भी अच्छी कम्पनियों का खुलना मुश्किल-हो-जाता / है।

बैंक के सब से बड़े अफसर को एजेंट और / संचालकों को डायरेक्टर्स-कहते-हैं। इन बैंकों की अनेकानेक शाखाएं / और उप-शाखाएँ भी होती-हैं जो सब-एजेन्टों के / आधीन होती-हैं। इन बैंकों द्वारा जन-साधारण, आम-पबलिक, / व्यापारियों या रोजगारियों का लेन-देन होता-है। व्यापारी-लोग / अपने हिसाब को सुचारुरूप से-रखने-के लिए कम-से-/ कम रोकड़-बही और खाते-बही तो जरूर-ही-रखते-/ हैं। इनके मुनीम-लोग तिमाही, छमाही या सालाना आय-व्यय/ के आंकड़ों को जोड़-घटाकर हानि-लाभ, विवरण-पत्र जिसे / बैलेंस-शीट भी कहते हैं तैयार-करते हैं।

नगद के/ अलावा एक-दूसरे का भुगतान ये हुन्डी या चेक के/ जरिये से भी करते-हैं। यह हुन्डियाँ और चेक भी / कई-प्रकार के होते-हैं जैसे दर्शनी-हुन्डी, मुद्दती-हुन्डी / । दर्शनी-हुन्डी जिसके ऊपर की-जाती-है उसको-उस हुन्डी / के-दिखाते ही भुगतान देना-पड़ता-है। इन हुंडी-पुरजों / के काम से लेन-देन में बड़ी सुविधा-होती-है / क्योंकि अक्सर रुपये को इधर-उधर न भेजकर जमाखर्च से / काम चल जाता है। इसी-तरह चेक से लेन-देन/होता-है। बैंक बेयरर्स-चेक को पाते-ही ले-जाने-/ वाले को बगैर कोई पूछताछ किये ही रुपया दे-/ देती है और सिर्फ उससे रुपया पाने का दस्तख्त कराती-/ है। आर्डर-चेक का रुपया बगैर आदमी की ठीक शिनाख्त / किये-हुए नहीं-देती। क्रास चेक

का रुपया तो सिर्फ / हिसाब में जमा-कर-लेती है पर देती नहीं। उस / रुपये को निकालने-के-लिए आपको अपने नाम से दोबारा/ चेक काटना-पड़ेगा। एक आदमी की काटी हुई चेक एन्डोर्समेन्ट/ करके दूसरे के नाम की-जा-सकती-है।

बैङ्कों में / एकाउन्ट कई-तरह-से-रक्खे-जाते-हैं, कहीं सिंगिल-इन्ट्री-/ सिस्टम से-रखे-जाते-हैं कहीं डबल-इन्ट्री-सिस्टम से/। डबल-इन्ट्री-प्रणाली में समय तो कुछ अधिक-लगता-है/ पर यह सिंगिल-इन्ट्री-प्रणाली से अधिक काम की होती-/ है।

बैङ्क में लेन-देन के अलावा लोगों का रुपया / भी सुरक्षित रहता-है। इसके-लिए लोग बैङ्क में अलग-/अलग एकाउन्ट-खोलते-हैं जैसे सेविंग-बैंक्स-एकाउन्ट, करन्ट-एकाउन्ट,/ फिक्सड-डिपाजिट-एकाउन्ट आदि। इस बात-के सबूत के-/ लिए कि उनका रुपया बैंक में जमा है, बैंक उनको / एक किताब देती-है जिसे पास-बुक कहते-हैं। ३६६

अभ्यास—७६

किसी पब्लिक-लिमिटेड-कम्पनी को खोलने के-लिए रजिस्ट्रार के / दफ्तर में मेमोरैंडम-आफ़-एसोसियेशन और आर्टिकल्स-आफ-एसोसियेशन दाखिल / करना-पड़ता-है और उसके मंजूर होने-पर पब्लिक से / उसके शेयर खरीदने को कहा-जाता-है। कम्पनी खोलने वालों / को प्रोमोटर्स और संचालकों को डायरेक्टर्स कहते-हैं। जितने रुपये-/ तक यह अपने शेयरों को बेच-सकती-है उसे अथराइज्ड-/ केपिटल, जितने रुपयों का पब्लिक-खरीदती-है उसे सब्सक्राइब्ड-केपिटल / और खरीदे शेयरों का जितना रुपया वह कम्पनी को दे / चुकती है उसे पेड-अप केपिटल कहते हैं।

कम्पनी के/ प्रास्पेक्टस, आमदनी का जमा-खर्च, बैलेंस-शीट तथा बोनस आदि / की रकम को देख-कर यह-कहा-जा-सकता-है/ कि लेन-देन के मामलों के कम्पनी की क्या हालत-/ है। उसकी फाइनेन्शल कन्डीशन का बगैर पूरा हाल जाने-हुए रुपया / न जमा-करना-चाहिए क्योंकि अक्सर ये कम्पनियाँ टूट जाती-/ हैं और लिक्विडेशन में ले-ली-जाती-हैं। इन कम्पनियों / की आमदनी पर इनकम-टैक्स, सुपर-टैक्स, और कभी-कभी एक्सेस-/ प्राफिट-टैक्स भी देना-पड़ता-है।

जान-बीमा मेडिकल-एक्जामिनेशन/ के पश्चात् किसी इन्श्योरेंस कम्पनियों में करा-कर लाइफ-पालसी / ले सकते हैं उसके लिए प्रीमियम-देना पड़ेगा। १८८

अभ्यास—८०

[स्टाक-इक्सचेंज सम्बन्धी अभ्यास]

न्यूयार्क १६ दिसम्बर। यहाँ के शेयर-मार्केटों में शेयर की/ बिक्री की अधिकता के कारण आज ऐसी हल-चल देखने/ में आई जैसी सन् १९२९ के बाद कभी नहीं देखी-/गयी-थी। बाजार खुलने के एक घंटे के अंदर बाइस/ लाख पचास हजार शेयर बिक गये और उनकी कीमतें १०/ डालर कम हो-गई। इनमें आरडिनरी-शेयर, प्रिफरेन्स-शेयर, रिडीमेबिल-/शेयर तथा फौंडर्स-शेयर आदि सभी किस्म के शेयर थे/। डिबेंचर-होल्डर तथा शेयर-होल्डर अपने-अपने डिबेंचरों, शेयर-वारन्ट,/शेयर तथा शेयरों के प्रार्थना-पत्रों को लिए हुए घुसे/ पड़ते थे। जो शेयर-होल्डर नजर आता था वह बेचता/ ही नजर आता था। न वह यह देखता था कि/ शेयर परपीचुअल है या एक्स-डिवीडेन्ट है, उसे तो बस/ बेचने ही से मतलब था। ये लोग शेयर बेचने के-/लिए इतने उत्सुक थे

कि उनके चिल्लाहट के कारण बड़ा / ही हल्ला मचा और काम करने-वाले क्लर्कों की नाक / में दम-हो-गया। गत अगस्त तक जो कमरे खाली / पड़े-रहते-थे उनमें इतनी भीड़ हो-गयी-थी कि / लोगों को पाँव धरने के-लिए जगह मिलना कठिन हो-/ गया था। शेयर बेचने-वालों की उत्सुकता इसलिए थी कि/ प्रत्येक अपने शेयर का मूल्य घटने के पहले ही उसे / बेच-कर अपनी हानि दूसरे के मत्थे टालने के-लिये / उत्सुक था।

पाठकों को याद होगा कि सन् १९२९ में / भी न्यूयार्क की वाल-स्ट्रीट में शेयरों में इसी-प्रकार/ की हल-चल हुई थी, जिसके बाद कि संसार में / आर्थिक संकट की लहर फैल-गई थी और सभी चीजों / का मूल्य एकाएक गिर-गया-था। इस साल भी बाज़ार / खुलने के पहले दलालों की भीड़ उसके बाहर खड़ी-हुई-थी जो कि शेयरों के बिक्री के आर्डर के बंडल-/ के-बंडल लिए हुए-थे। बाज़ार खुलते ही उसमें ऐसी/ व्यवस्था फैल-गई कि मेरिटो-रियम के-लिए सरकार से चिल्लाहट/ होने लगी।

बहुत तो दिवाला निकाल कर दिवालिया हो-गये/। ३००

किस्म-कागज़ात

१. कबूलियत दस्तावेज मुखतारनामा बयनामा
२. रेहन नामा सरखत किराया नामा ज़मानत नामा
३. इक़रार नामा फारखती हिब्रा नामा वसीयत नामा
४. दखल नामा वकालत नामा हलफ नामा
वारंट गिरफ़तारी
५. दरखास्त इनसालवेन्सी सुलह नामा
सार्टिफिकेट मेहनताना इजाज़त नामा
६. मौजे साकिन मज़कूर अदम मौजूदगी
७. पैरवी सनद अलमरकूम हक-हकूक
८. मिलकियत मौसूफ मुवाखिज़ा वारिसान
९. कायम मुकाम बेकामिल नाजायज़ बावजूद
१०. शिरकत मदाखलत मुनदरजे मरहूना
११. गैर-मरहूना मनकूला गैर-मनकूला मकफूला
१२. इंतकाल बद-दयानती जाब्रिया तकमीला
१३. इंतज़ाम तसदीक दस्तबरदार मुतालिक
१४. इजराय-डिगरी डिगरीदार मुबलिग मदियून
१५. मोअरिखा मिनमुकिर तमस्सुख मुआइना
१६. फरीकैन वाजिबुल मिनजानिब अहलकार
१७. कैफियत तलबाना वल्द अर्जी दावा

अदालतों में जो आमतौर-से चालू कागज़ात-हैं उनके आखीर/ में ज्यादातर "नाम" का लफ़ज़ लगा रहता-है जैसे मुख्तारनामा, / बयनामा, रेहननामा, किरायानामा, जमानतनामा वगैरा। इकरारनामा, हिबानामा, दखलनामा, वकालतनामा भी / ऐसे ही कागज़ातों के नाम-है।

अदालत-में जब कोई / बात हलफ़िया बयान-की-जाती-है तो वह जिस अरजी / मे लिखी-जाती-है उसे हलफ़नामा कहते-हैं। मुख्तार-नामा / और वकालत-नामा इस बात के सबूत हैं कि मुद्दई/ या मुद्दालेह ने फलाँ वकील या मुख्तार को अपने मोकद्में / के लिए मोक़र्रर किया है।

मकान या किसी चीज़ को / किराये पर लेने से किरायानामा या सरखत, किसी की जमानत / लेने पर जमानतनामा, किसी बात की शर्त-व-इकरार-करने / पर इकरारनामा, किसी जायदाद-पर कब्जा-दखल लेने-या देने / पर दखल-नामा लिखा-जाता-है।

इसी-तरह किसी चीज / को कहीं गिरवीं या रेहन-रखने-पर रेहननामा, किसी चीज / को किसी शर्तों या शरायत पर बेचने या बय करने / का बयनामा, किसी शख्स को उसकी फ़रमाबरदारी व दूसरी खिदमतों / के लिए बखुशी किसी चीज़ को बख्स देने से हिबानामा / और मरते वक्त किसी चीज को अपने नाते व रिश्तेदारों / या दूसरे किसी फ़रमाबरदार नौकर में बाँटने से वसीयतनामा लिखा-जाता-/ है।

ज़मीनदार व किसानों के बीच जिन शर्तों पर जमीन / ली-या दी-जाती-है उसका जिक्र पट्टा कबूलियत में / रहता है।

किसी शख्स की डिग्री की अदायगी न-करने पर वारंट गिरफ्तारी निकाली-जा-सकती-है। इस गिरफ्तार शख्स / यानी मदियून को दरख्वास्त-इनसालवेंसी देने का अख्तियार होता-है। इसके / लिये वकीलों को करना-पड़ता है और वे अपनी सार्टिफिकेट- / मेहनताना कोर्ट में दायर करते-हैं।

नीचे एक रेहननामा का / खाका दिया-जाता है। इस दस्तावेज़ की बहार को देखिये / ।

रेहननामा

मैं, मुसम्मात चन्दो देवी, जौजे देवी प्रसाद, वल्द, लाला गुरदयाल / सिंह, कौम कायस्थ, साकिन मौजे रसूलपूर, ज़िला जौनपुर की हूँ।

जो कि मेरे जिम्मे एक किता डिग्री तायदादी मुबलिग रुपया / ५४२) दुबे महाजन साकिन मौजा मैनपुर की अदालत मँडियाहू मुन्सिफी / से हुई है कि जिसका रुपया बावजूद गुज़र-जाने क़िस्त / डिग्री के भी अब तक न अदा हुआ और अब उसकी तैदाद मैं-सूद के १०१३॥≡) पहुँची-है और महाजन / डिग्रियों को इजरा-कराने-पर मुस्तैद-है कि जिससे सरासर / जेरबारी हम लोगों की होगी और इसके सिवाय और भी चन्द / जरूरी खर्च पेश-हैं, इसलिए बाबू गोकुलचन्द साहब महाजन-व-/ रईस शहर बनारस के पास हाजिर हो-कर अपना हिस्सा / २ आना ४ पाई मौजा रसूलपुर, परगना मँडियाहू जिला/ जौनपुर को मैंडीह-व-डाबर सीर-व-सयार व बाग़ात / व पक्के कुओं वगैरह हक़ूक ज़िमींदारी कि जिस-पर हम / लोग बिना शिरकत किसी दूसरे के और बिना मदाखलत-किसी-शख्स / के काबिज-व-दाखिल हैं मकफूल-करके १२००) बारह सौ / रुपया कि जिसका आधा ६००) छः सौ रुपया होता है / कर्ज़ बहिसाब-

सूद ।॥=) चौदह आने सैकड़े माहवारी के इस / तफ़सील से लिया कि १०६३॥≈) वास्ते अदा-करने डिग्री भीखा / दुबे -डिग्रीदार के महाजन मौसूफ के पास छोड़ दिया कि / वह डिग्रियात नम्बरी ५५७ मकूमा १७ जूलाई सन् १८८८ ई० / के नम्बरी ५६६ मकूमा ४ अगस्त सन् १८८८ ई० नम्बरी / ५४४ मकूमा १६ जूलाई सन् १८८८ ई० व नम्बरी ५४३ / मकूमा १६ जूलाई सन् १८८८ ई० को अदा-करके और / वसूली उसकी पुश्त डिग्रियात पर लिखा-कर वापस ले-लेवें / और १०६=) एक सौ छः रुपया एक आना नकद ले-/ कर अपने खर्च में लाए। अब कुछ भी जिम्मे महाजन / के बाकी नहीं। इसलिए यह दस्तावेज़ लिख-कर इक़रार करते / हैं व लिख-देते-हैं कि सूद छमाही महाजन मौसूफ / को अदा-करके रसीद उसकी दस्तखती महाजन मौसूफ ले-लिया / करेंगे और मीआद पांच बरस में यानी जेठी पूर्णमासी सन् / १३०१ फ़सली को असिल १२००) रुपया व जिस कदर सूद / अदा से बाकी रह-जायगा एक मुश्त अदा व बेबाक / करके दस्तावेज़ को भरपाई लिखा-कर वापस ले-लेंगे सिवाय / इन दो सूरतों के कोई उज्र बाबत वसूली सूद या / असिल के काबिल मंजूरी अदालत न होगा अगर सूद छमाही / अदा न-हो तो बाद गुजरने छमाही के वह रुपया / भी असिल में जोड़ कर उस-पर 'सूद दर ।॥=) / माहवारी के महाजन मौसूफ को अदा करेंगे और अगर दो / छमाही गुज़र जाय और महाजन को रुपया अदा न हो / तो महाजन को अख्तियार होगा कि बिना गुजरने मीआद मुन्दरजे / दस्तावेज़ के कुल रुपया असिल-मै-सूद नालिश करके हम / लोगों की जात-व-जायदाद मरहूना-व-गैर-मरहूना व / मनकूला-व-गैर-मनकूला से वसूल-कर लेवें और मिल्कियत / मकफूला हर-तरह-पर पाक-व-साफ़ व बे खलिश / हैं कहीं दूसरी जगह रेहन-या-बय या किसी किस्म /

से मुन्तकिल नहीं है अगर किसी किस्म का इन्तकाल जाहिर/होगा तो हम लोग पाबन्द मवाखिज्जा कानून ताजीरात-हिन्द के/होंगे और महाजन मौसूफ को अख्तियार वसूल कुल-रुपया असिल-/व-सूद का बिना इन्तजार गुजरने मीआद के होगा और/महाजन मौसूफ के देन अदा करने तक जायदाद मकफूला/को कहीं रेहन-या-बय या किसी किस्म का इन्तकाल/न-करेंगे अगर करें तो झूठा व नाजायज ठहरे/अगर कुल रुपया असिल-मय-सूद अन्दर मीआद के ही/अदा कर देवें तो महाजन को वाजिब होगा कि उसको/ लेकर इलाके को फक-रेहन-कर-दें और दस्तावेज्ज वापस/कर दें और अगर वादा-पर कुल-रुपया या थोड़ा/ रुपया भी अदा होने से बाकी रह-जाय तो महाजन / को अख्तियार होगा कि नालिश नम्बरी करके कुल-रुपया अपना / हम लोगों की जात व नीलाम-जायदाद मकफूला-व-गैर-/मकफूला व मनकूला-व-गैर-मनकूला से वसूल-कर-ले / । इसमें हमको हमारे वारिसान कायम-मुकामान को कोई उज्र न/होगा । आराजियात सीर जो इस दस्तावेज्ज में रेहन-होती-है / उनके नम्बर इसके नीचे लिख-देते-हैं और यह-भी / एकरार खास-करते हैं कि बाद गुजर-जाने मीआद के / भी कुल मुतालबा वसूल होने तक सूद रुपये का ॥=) / सैकड़े माहवारी बिना उज्र अदा करेंगे और निसबत सूद के / किसी किस्म का उज्र न करेंगे इसलिए यह दस्तावेज्ज बतौर / रेहन-नामा के लिख दिया कि वक्त पर काम आवे / व सनद रहे-फ़क़त । ६५४

अभ्यास—८२

कुछ व्यावहारिक पत्र

(१)

इलाहाबाद,
ता० २१ जनवरी १९३८

महाशय-जी,

मैने आपके 'संसार-चक्र' नाम की पुस्तकों का विज्ञापन आज के 'लीडर' अखबार में देखा-है। यदि ये-पुस्तक आप २) में दे-सकें-तो कम-से-कम ५ पुस्तकें तुरन्त वी० पी० करके पोस्ट-आफिस द्वारा भेजने-की-कृपा-करें। वी०-पी० आते-ही छुड़ा-ली-जायगी।

भवदीय

(२)

संसार-चक्र-कार्यालय,
मथुरा।
ता० ५—२—३८

श्री महाशय-जी,

आपका-कृपा-पत्र-मिला उत्तर-में-निवेदन-है कि आपके आर्डर के अनुसार आज-दिन 'संसार चक्र' नाम की पुस्तक की ५ प्रतियाँ डाक-वी० पी० द्वारा भेज-दी-गई-हैं। इनवाइस भेजी जा-रही-है। आशा है पुस्तकें पहुँचते ही आप उसे छुड़ा लेंगे।

भवदीय

इनके अलावा नीचे के वाक्यांशों को लिखो—पत्रादि के व्यवहार में अधिक काम आते हैं।

१. श्रीमान्, मान्यवर, पूज्यवर, महामान्यवर, महोदय, महाशय, श्रद्धास्पद, आयुष्मान्, चिरंजीव, प्रिय-महाशय आदि।

२. आप-का-दास, आप-का-आज्ञाकारी, भवदीय, आपका-प्रिय-मित्र, तुम्हारा-एक-मात्र, आपका-हित-चिन्तक, कृपा-कांक्षी, दर्शनाभिलाषी।
३. तुम्हारा पत्र कल-शाम-की-डाक-से मिला।
४. कृपा-पत्र-मिला, आपका-पत्र-मिला, तुम्हारा-पत्र मिला,
५. पत्र-मिला, उत्तर-में-निवेदन-है।
६. बहुत-दिनों-से आपका पत्र नहीं-आया क्या-कारण है।
७. पत्र-मिला पढ़कर-हर्ष-हुआ।
८. यहाँ-सब-कुशल-है-तुम्हारा कुशल-क्षेम-ईश्वर-से-चाहता हूँ।
९. उत्तर शीघ्रातिशीघ्र भेजिए।
१०. उत्तर लौटती-डाक-से-भेजिए।
११. मैंने आपको कई-पत्र लिखे पर उत्तर-एक-का-भी-न-मिला।
१२. मुझे इस-बात-का-हार्दिक-दुखः-है कि मैं आपके पत्रों का यथा-समय उत्तर-न-दे; सका।
१३. योग्य-सेवा-को लिखियेगा।
१४. आपको यह-जान-कर-प्रसन्नता-होगी।
१५ परीक्षा में उत्तीर्ण होने-के-लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।
१६. आपको यह-सूचना देते-हुए-मुझे कष्ट-हो-रहा है।
१७. आशा है ऐसा-लिखने-के-लिए आप-मुझे-क्षमा-करेंगे।
१८. मेरे योग्य-सेवा-कार्य-सदैव-लिखते-रहिएगा।
१९. शेष-मिलने-पर, शेष-फिर-कभी, आज-यहीं-तक।
२०. अंत में आपसे इतना-ही-निवेदन-है।

नेताओं तथा नगर व प्रान्तों के नाम

१. महात्मा गाँधी महात्माजी जवाहरलाल नेहरू सुभाषचन्द्र बोस
२. मदनमोहन-मालवीय रवीन्द्रनाथ-टैगोर राजेन्द्रप्रसाद सरदार वल्लभ भाई पटेल
३. अब्दुल गफ्फार खाँ पुरुषोत्तमदास टंडन आचार्य नरेन्द्र देव अबुल कलाम आजाद
४. तेज बहादुर सप्रू चिंतामनी श्रीनिवास शास्त्री हृदयनाथ कुंजरू
५. गोविंद वल्लभ पंत श्रीकृष्ण राजगोपालाचार्य विश्वनाथदास
६. सत्यमूर्ति भूलाभाई देसाई न. बी. खरे बी. जी. खेर
७. मोहम्मद अली जिन्ना शौकतअली भाई परमानन्द बैरिस्टर सावरकर

---

१. रायबहादुर रायसाहब राजा-साहब खां-बहादुर डाक्टर
२. माननीय श्री पंडित बाबू मौलाना
३. मिस्टर मिसेज मेसर्स सर राइट आनरेबिल

---

४ शेगाँव वर्धा इलाहाबाद कानपुर बनारस
५. कलकत्ता बम्बई मदरास लखनऊ लाहौर
६. देहली अलीगढ़ आगरा देहरादून नैनीताल
७. अजमेर पटना गया पेशावर अमृतसर
८. नागपुर बरेली मोगलसरॉय जबलपुर मुरादाबाद
९. संयुक्तप्रांत मध्यप्रांत सेन्ट्रल-इंडिया मध्यप्रदेश पंजाब
१०. ओड़िसा शिमला हैदराबाद मैसूर करांची
११. सिंध बंगाल बिहार फ्रंटियर-प्राविंस

नोट—किसी सज्जन तथा शहर के नाम आदि को संकेत-लिपि में न लिखकर नागरी लिपि में इशारे मात्र से लिख लेना चाहिए पर बहुत प्रचलित नेताओं तथा नगरों के नाम यथानियम संकेत-लिपि ही में लिखने मे सुविधा होगी। इनके अलावा और नये २ विभाग के प्रचलित शब्दों के संकेत स्वयं विद्यार्थीगण बनाकर अभ्यास कर सकते हैं।

अभ्यास—८३

(१)

कुछ दिन पहले श्री भूलाभाई-देसाई ने फेडरेशन के बाबत / राय-प्रगट-करते-हुए कहा-है कि वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति / को ध्यान-में-रखते-हुए ब्रिटिश पार्लियामेण्ट हिन्दुस्तानियों की / इच्छा के खिलाफ फेडरेशन को जबरदस्ती नहीं लाद-सकती। इस-/समय-में भारतीय रजवाड़ों को देश की भलाई के-लिये / अपने आप फेडरेशन मे शरीक होने से इन्कार-कर-देना / चाहिये क्योंकि अब-तक कांग्रेस इसका सर्वथा विरोध कर-रही/है। नहीं-कहा-जा-सकता-कि फरवरी के प्रथम सप्ताह / में जो महत्वपूर्ण बैठक होगी उसमें कांग्रेस वर्किंग-कमेटी फैडरेशन/के-सम्बन्ध-में किस नीति को अनुसरण करेगी।

इस अवसर/पर पंडित-जवाहरलाल-नेहरू, मिसेज सरोजनी-नायडू, भावी राष्ट्रपति / श्री-सुभाषचन्द्र-बोस, बाबू राजेन्द्र-प्रसाद, सरदार-वल्लभभाई-पटेल, मौलाना / अबुल-कलाम आजाद, खॉ-अब्दुल-गफ्फार खां, आचार्य कृपलानी, आचार्य / नरेन्द्र-देव, स्वामी सहाजानन्द सरस्वती, श्री-जय-प्रकाश-नारायण आदि / वर्धा में सेठ जमुनालाल-बजाज के निवास-स्थान पर

संभवतः / ३ तारीख तक पहुँच-जाँयगे। महात्मा-गान्धी-जी भी इस / समय सेगाँव से वर्धा आवेंगे। चूँकि इस बैठक का / एक मुख्य विषय 'फेडरेशन' होगा, इससे आशा-की-जाती-है / कि इसमें मद्रास के प्रधान मंत्री श्री राजगोपालाचार्य, माननीय गोविन्द-/वल्लभ-पन्त, श्री बाबू श्रीकृष्णसिंह, डाक्टर न.-बी. खरे, श्री / बी.-जी.-खेर, श्री विश्वनाथ-दास, मिस्टर मोहनलाल-सक्सेना, सेठ / गोविन्द-दास आदि मुख्य-मुख्य कांग्रेसी कार्य-कर्त्ता भी आमंत्रित / किये-जायँगे। खेद-है कि भिन्न-भिन्न कारणों से श्री / मदनमोहन-मालवीय, श्री सत्यमूर्ति, श्री बाबू पुरुषोत्तमदास-टण्डन, हृदयनाथ-कुँजरू / इसमें भाग न-ले-सकेंगे।

२४५

(२)

(अ) मिस्टर मोहम्मद-अली जिन्ना के भाषण का प्रत्युत्तर देते हुए / एक कांग्रेसी प्रमुख नेता ने लिखा था कि राष्ट्र-निर्माण / के लिये आजकल भारतवर्ष को महात्माजी और पं० जवाहरलाल-चाहिये / न कि भाई परमानन्द, वैरिस्टर सावरकर, मोहम्मद-अली-जिन्ना और / शौकत-अली।

(ब) दुख-का-विषय-है-कि तुच्छ मतभेद के / कारण राइट-आनरेबिल सर तेजबहादुर-सप्रू, डाक्टर सी-वाइ.-चिन्तामणि/, और श्रीनिवास-शास्त्री ऐसे मननशील और कुशल राजनीतिज्ञ कांग्रेस के / बाहर हैं।

(स) बम्बई और यू.-पी.-की सरकारों ने प्रस्ताव/-पास-किया-है कि भविष्य में किसी को रायबहादुर/, राजासाहब, रायसाहब, खान-बहादुर, खान-साहेब, सर इत्यादि के खिताब / न दिये जाँय।

१०३

एक ही वर्ण से उच्चारण किये जाने वाले शब्दों के विभिन्न संकेत

१. स्त्री शत्रु २. अनुसार नज़र
३. बारबार बराबर बारंबार
४. भूषण भाषण आभूषण भीषण
५. उपेक्षा पक्ष रक्षा अपेक्षा प्रतीक्षा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष
६. बालक बालिका ७. कोतवाल कोतवाली
८. उपयुक्त उपर्युक्त उपरोक्त उपरान्त
९. हाकिम हुक्म हकीम १०. प्रांत पूर्णतः
११. अधिक धोका धक्का १२. छात्र क्षेत्र
१३. ज़मींदार ज़िम्मेदार ज़मानतदार
१४. अकसर कसर कसीर कसूर केसर
१५. इश्तहार इज़हार असेसर १६. स्टैम्प स्तम्भ
१७. विरोध विरुद्ध व्यर्थ
१८. पश्चात् पश्चिम पश्चात्ताप पाश्चात्य
१९. साहित्य सहायता सहित साहित्यिक
२०. मुल्क मुलाकात मालिक मल्लिका
२१. इनकार नौकर नौकरी नगर नागरिक
२२. शस्त्र शास्त्र सशस्त्र शास्त्रार्थ
२३. बजाय बियाज बिजय वाजिब गैरवाजिब
२४ तत्पर तात्पर्य २५. निरबल आनरेबिल
२६. स्कूल शकल साइकिल २७. शहादत सहयोग
२८. युग योग्य अयोग्य योग्यता उपयोग

नोट—इसके अलावा जब ऐसे ही शब्द आवें जिसके पढ़ने में असुविधा हो तो विद्यार्थियों को चाहिये कि वे एक ही वर्णों से उच्चारण होने वाले-शब्दों के अलग-अलग संकेतों को बनाकर नोटकर लें और फिर उन्हीं संकेतों द्वारा उन शब्दों को लिखा करें। ऐसा करने से पढ़ने की कठिनाई दूर हो जाएगी।

अभ्यास—८४

(अ) गत वर्ष गर्मी की छुट्टियों में मैंने भारतव्यापी भ्रमण किया-/ था और बहुत से मुख्य-मुख्य स्थानों को देखा। उनमें / से कुछ ये हैं :—बम्बई, करांची, अजमेर अलीगढ़, लाहौर,/ अमृतसर, नैनीताल, शिमला, पेशावर, देहरादून, दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, मुगलसराय, बनारस,/ पटना, कलकत्ता, जबलपुर, नागपुर, हैदराबाद, मैसूर, पूना, लखनऊ, कानपुर, बरेली ,/ मुरादाबाद, अजंटा और अलमोरा की गुफायें और मद्रास।

(ब) इस समय / ११ प्रान्तों में से बम्बई-प्रांत, संयुक्त-प्रांत,/ मध्यप्रांत, मद्रास प्रांत, बिहार-प्रांत, उड़ीसा प्रान्त और फ्रान्टियर-प्राविन्सेस / यानी सीमाप्रांत में कांग्रेसी-मंत्रि-मण्डल बने हैं परंतु कांग्रेस का / बहुमत न होने से बाकी के चार प्रांत यानी बंगाल, / पंजाब, आसाम और सिंध में गैर-कांग्रेसी मंत्रिमंडल ही कायम / हुये हैं। ११२

अभ्यास—८५

(अ) पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अस्थायी सरकार के उप-अध्यक्ष तथा / प्रधान-मंत्री की हैसियत से जो भाषण ब्राडकास्ट-किया है/ उसमें देश-विदेश की अनेक समस्याओं का उल्लेख-किया गया /-है और-बतलाया-गया-है कि राष्ट्रीय-सरकार की उनके सम्बन्ध / में क्या-नीति-होगी। नेहरू जी अन्तर्राष्ट्रीय विषयों के प्रकाण्ड/ पंडित हैं और नई सरकार के अन्तर्गत परराष्ट्र-मंत्री भी/ हैं। अतः यह उचित-ही-था कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तथा / विश्व-शान्ति के सम्बन्ध में वे स्पष्टरूप से स्वाधीन भारत/ का दृष्टिकोण प्रकट-कर दें। उन्होंने घोषित-किया-है कि स्वतंत्र / राष्ट्र की हैसियत से हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेंगे,/ हम अपनी स्वतंत्र नीति ग्रहण करेंगे, किसी दूसरे राष्ट्र के/ हाथ की कठपुतली होकर काम नहीं करेंगे। उन्होंने यह भी / कहा है कि हम गुट-बन्दी और दलबन्दी से अपने/ को अलग-रक्खेंगे—उस दलबंदी से जिसके कारण अतीत में/ विश्व युद्ध हुए-हैं और जो-पहले-से भी-बड़े/ पैमाने पर पुनः हमें विनाश की ओर-ले-जा-सकती-/ है। शान्ति स्वतन्त्रता दोनों अविभाज्य-हैं। किसी एक देश के/ लोगों को स्वतन्त्रता से वंचित रखने से दूसरे देश की/ स्वाधीनता खतरे में-पड़-सकती-है और फिर संघर्ष एवं/ युद्ध खड़ा हो-सकता-है। अतः स्वतंत्र भारत सभी देशों/ को स्वाधीन बनाने-का-पक्ष-लेगा। नेहरू जी ने स्पष्ट/ शब्दों में घोषित-किया-है कि हम परतंत्र देशों तथा/ उपनिवेशों की स्वाधीनता में विशेष-रूप-से-दिलचस्पी लेंगे। सभी/ जातियों की जीवन में उन्नति करने के लिए समान सुविधायें / प्राप्त-होनी-चाहिये। जातीय श्रेष्ठता के सिद्धान्त को भारत कभी / स्वीकार-नहीं-कर-सकता चाहे जिस रूप में वह लागू/ किया-जाता-हो। २६३

(ब) भारतवर्ष में अस्थाई-राष्ट्रीय-सरकार यानी इन्ट्रीम-गवर्नमेंट की स्थापना-होते /-ही और वैदेशिक विभाग नेहरू जी जैसे सर्वमान्य नेता के/ हाथों मे आते-ही हमारे देश ने ससार के अन्य/ देशों से स्वतंत्र सम्बन्ध स्थापित करने की-ओर-ध्यान दिया/-है। अब यह-आवश्यक-नहीं-है कि भारत भी ससार / के किसी देश से ठीक वैसा ही सम्बन्ध-रक्खे जैसा/ कि उसके और ब्रिटेन के बीच हो। भारत न केवल/ ब्रिटेन और रूस से बल्कि ऐसे सभी देशों से मित्रता/-पूर्ण सम्बन्ध-चाहता-है जो संसार में युद्ध और रक्तपात / नहीं बल्कि शांति और संतोष का साम्राज्य स्थापित होते-देखना /-चाहते हैं।

आज विश्वशांति के लिये यूरोप तथा अमेरिका के / राजनीतिज्ञ जिस दृष्टिकोण से प्रभावित-हैं उसमें तथा नेहरू/ जी के दृष्टिकोण मे महान् अन्तर-है। नेहरू जी ने/ बता-दिया-है कि स्वाधीन भारत यूरोप तथा अमेरिका के / वर्तमान राजनीतिज्ञों की कूटनीति सहन नहीं करेगा, वह साम्राज्यशाही का/ घोर विरोध करेगा और सच्चे अर्थों मे विश्वशांति स्थापित-करने/-के-लिए दूसरे राष्ट्रों से मिल-कर-काम-करने-के/-लिए तैयार-होगा। वह ब्रिटेन, अमेरिका और रूस तीनो से/ घनिष्ठता और मैत्री भाव बढ़ाएगा लेकिन एशियाई देशों से—विशेषकर / पास-पड़ोस के देशों से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित-करेगा। हमारा / ख्याल-है-कि अंतर्राष्ट्रीय मामलों के सम्बन्ध में प०/ नेहरू ने भारत की ओर से जो दृष्टिकोण प्रकट-किया/ है वह राष्ट्रवादी भारत का लोकमत प्रकट-करता-है और/ यह विश्वास-उत्पन्न-करता है कि जिस समय भारत इस/ दृष्टिकोण को लेकर शांति सम्मेलन अथवा अन्य किसी अन्तर्राष्ट्रीय,सम्मेलन/ में भाग लेगा तो दूसरे देशों के राजनीतिज्ञों पर/ उसका काफी प्रभाव पड़ेगा और वे मौजूदा रवैया छोड़ कर/ सच्ची शांति स्थापित करने की दिशा में अग्रसर होंगे।

अभ्यास—८६

(अ) नेता जी श्री-सुभाषचन्द्र-बोस ने आजाद-हिन्द-फौज या/ इन्डियन नेशनल आर्मी का निर्माण करके आजादी की जो तीव्र/ लहर लहरा दी है वह केवल भारतवर्ष के लिए ही / नहीं बल्कि संसार की समस्त विजित-देशों की प्रजा में/ नवीनतम स्फूर्ति और जागृत पैदा-कर-रही-है। इसकी जितनी / भी-बड़ाई-की-जाय वह-कम-है। यह नई क्रान्ति / भारत के अन्दर बच्चों-बच्चों के मुँह पर जय-हिन्द/ के नारों से गूँज-रही-है।

इसके लिए आपने भारतवर्ष / के बाहर यानी रूस, जर्मनी, जापान, इटली, चीन, श्याम, मलाया/ और बर्मा के अन्दर कुछ चुने हुये देशभक्तों को लेकर/ सेनायें भी तैयार-की-हैं। जिनमें से मुख्यतः नवयुवकों की/ सेनाओं के नाम सुभाष-ब्रिगेड, जवाहर-ब्रिगेड तथा नवयुवतियों की / सेनाओं के नाम झाँसी की रानी रेजिमेन्ट आदि रखा-गया-/ है। इसके संचालक क्रमशः केप्टन शाहनवाज खाँ, केप्टन सहगल तथा / महिलाओं की सेना का प्रधान सेना-नेत्री कुमारी लक्ष्मी हैं /। इन सब के कमाण्डर हमारे पूज्य 'नेता जी' हैं।

अभी/ हाल मे बृटिश सरकार ने इन लोगों के खिलाफ मुकदमा/- भी-चलाया-था। मगर इन लोगों की अटूट देशभक्ति के/ कारण उसे इन लोगों को बेदाग-छोड़ना-पड़ा। आज दिन/ हमारी अखिल-भारतीय-कांग्रेस-कमेटी-भी आजाद-हिन्द-फौज को/ भारतवर्ष के अन्दर वही स्थान-देना-चाहती-है जो / कि इस समय अँग्रेजी फौज का है।

अतः नेता जी/ का यह सराहनीय कार्य भारतवर्ष तथा संसार के इतिहास में/ स्वर्ण-अक्षरों से लिखा-जायगा। जय हिन्द। २३७

(ब) नेता जी श्री-सुभाष बोस के सम्बन्ध में इधर कुछ / समय से अफवाहों और अटकलबाजियों का बाजार इतना-गरम-हो-/ उठा-है कि शायद ही कोई दिन जाता-है जब/ उनके बारे में कोई न कोई नया समाचार प्रकाशित न / होता-हो। उनकी मृत्यु के समाचार सही-हैं-या-नहीं / यह प्रश्न तो अब पीछे-पड़-गया-है और जितनी / बातें नई कही-जाती-हैं उनसे यही निष्कर्ष निकलता है / कि नेता जी तो जीवित-हैं-ही अब तो वे / कहाँ-हैं और कब प्रकट होंगे यही आजकल की चर्चाओं/ का मुख्य विषय बन-गया-है। कोई उन्हें अपने देश / में ही, कोई चीन में और कोई सीमाप्रान्त से आगे / कबीलों के क्षेत्र में-बतलाता-है। इस प्रकार की अफवाहें/ फैलाना नेता जी के रहस्यपूर्ण, साहसी और निर्भीक व्यक्तित्व के/ अनुरूप ही-हैं और यदि इनसे हम किसी परिणाम-पर-/पहुँचते-हैं तो वह केवल इतना-ही-है-कि श्री/-सुभाष-बोस के जीवित होने में अब सन्देह की गुंजाइश-/ नहीं-है और उनके स्वदेश में प्रकट होने का समय/ अब निकट-आ-गया-है।

नेता जी का भारत से-/जाना उतना अलौकिक नहीं-रह-जाता जितना कि अब उनका / प्रत्यक्ष होना रहस्यपूर्ण है। १६४

अभ्यास—८७

राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्वरूप वही-होगा जिसमें समस्त-भारत-वर्ष / के निवासी सुगमता से अपने विचारों को व्यक्त-कर-सकेंगे/। जो-लोग यह-कहते-हैं-कि राष्ट्रभाषा से संस्कृत शब्दों/ का अधिक से अधिक बहिष्कार किया-जाना-चाहिये वे कदाचित् / यह बात भूल-जाते-हैं कि वर्तमान समय की अधिकांश / प्रान्तीय भाषाएँ संस्कृत से ही-निकली-हैं और इसलिए स्वभावतः / उनमें संस्कृत के शब्द-बहुलता से-पाये-जाते हैं। ऐसी / अवस्था में अधिकांश-

भारतवासियों के लिये अन्तर्प्रान्तीय भाषा के रूप / में ऐसी ही भाषा अधिक ग्राह्य और सुविधाजनक होगी जिसमें / संस्कृत के शब्द काफी हों। हमें दुख के साथ कहना/-पड़ता-है कि जो लोग बनावटी हिन्दुस्तानी भाषा का निर्माण / करना-चाहते-हैं और इस बात-पर-जोर-देते-हैं / कि उसमें बोलचाल के सरल शब्दों का-ही प्रयोग हो/ वे साम्प्रदायिकता के आधार पर राष्ट्र-भाषा की समस्या हल/-करना-चाहते-हैं। जैसे राजनीतिक क्षेत्र में अन्य अल्पसंख्यकों को/ पीछे ढकेल कर केवल मुस्लिम-लीग को महत्त्व दिया-गया-/ है और उसके साथ समझौता करने का प्रयत्न किया-जाता/-है उसी तरह भाषा के क्षेत्र में केवल उर्दू वालों / के साथ समझौता करने की आवश्यकता-समझी-जाती-है। अन्य / प्रान्तीय भाषा-भाषियों की सुविधा-असुविधा का उतना ख्याल-नहीं/-किया-जाता जितना कि उर्दू वालों का। मुसलमान कैसी राष्ट्रभाषा/ स्वीकार कर-सकेंगे इसी पर हिन्दुस्तानी के सब हिमायती अपना / ध्यान केन्द्रित-करते-हैं, वे यह देखने का प्रयास नहीं/-करते-कि वे जैसी कृत्रिम भाषा बनाने का प्रयत्न-कर/-रहे-हैं, उसको समझने लिखने और बोलने में अनेक प्रान्तों/ की जनता को बड़ी-कठिनाई-होगी। उसे ग्रहण करना अधिकांश/ भारतवासियों को स्वीकार-न-होगा। अतः साम्प्रदायिकता के आधार पर / राष्ट्र-भाषा के लिये कृत्रिम हिन्दुस्तानी भाषा का विकास करने / का प्रयत्न त्याग-कर हिन्दी को ही अन्तर्प्रान्तीय काम के / लिए अग्रसर-करना-चाहिए और उसे ही राष्ट्रभाषा के रूप / में स्वीकार-करना-चाहिए।

हिन्दुस्तानी न तो कोई-भाषा-है/ और न उसका कोई साहित्य है। गूढ़ विषयों को व्यक्त / करने की क्षमता हिन्दुस्तानी में नहीं आ-सकती। विज्ञान, अर्थशास्त्र / तथा राजनीति आदि विषयों पर जो ग्रन्थ लिखे-जायँगे उनमें / संस्कृत शब्दों का ही आश्रय-लेना-पड़ेगा। अतः हिन्दुस्तानी के / विकास का प्रयत्न करना शक्ति का

अप्रयुक्त करना होगा। इससे / राष्ट्रभाषा की समस्या कभी हल नहीं होगी। दो लिपियों का / सीखना अनिवार्य करना बच्चों पर अनावश्यक रूप से एक भारी/बोझ लादना होगा। इससे बच्चों की शक्ति और समय का/क्षय होगा। किसी एक अल्पसंख्यक सम्प्रदाय के तुष्टी-करण के / लिये उसकी अवैज्ञानिक लिपि लेकर देश भर के लोगों पर/ लादना कभी उचित नहीं कहा जा सकता। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से/ लिपि की समस्या को हल करने का मार्ग यह है / कि राष्ट्र-भाषा के लिए केवल वही एक लिपि स्वीकार/ की जाय जो वैज्ञानिकता तथा सुगमता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ / हो। चूँकि यह प्रमाणित हो चुका है कि देवनागरी अन्य / सभी लिपियों से अच्छी है अतः राष्ट्रभाषा के लिए उसी / का सर्वत्र प्रचार होना चाहिये।

संकेत-लिपि की दूसरी पुस्तकें

छपी हैं—

	मूल्य	पोस्टेज
कुञ्जी संकेत-लिपि	२)	।-)
हिं० सं० लि० वाक्यांशकोष	२।।)	।=)

छप रही हैं—

१. हिं सं लि०	रीडर भाग १	मूल्य ।)
२. ,, ,, ,,	,, ,, २	,, ।≡)
३. ,, ,, ,,	,, ,, ३	,, ।।)
४. कुञ्जी ,, ,,	,, ,, १	,, १)
५. ,, ,, ,,	,, ,, २	,, १।।)
६. ,, ,, ,,	,, ,, ३	,, २)
७. हिन्दी-संकेत-लिपि-कोष		,, ४)
८. हिन्दी-उर्दू-संकेत-लिपि-कोष		,, ४)
९. हिन्दी-संकेत-लिपि-सार		,, २।।)

तैयार हो रही हैं—

१. उर्दू-शार्ट-हैंड	३।।)
२. मराठी ,, ,,	३।।)
३. गुजराती ,, ,,	३।।)

हिन्दी-शार्ट-हैंड की एक पत्रिका ज्यों ही यह आशा हो जायगी कि उसकी २०० प्रतियाँ भी बिक सकेंगी निकाली जायगी।

—ऋषिलाल अग्रवाल

हस्ताक्षर

उपरोक्त नम्बर को लिखते हुए जो पाठक अपना नाम और पूरा पता लिख भेजेंगे उनका नाम अपने यहाँ के रजिस्टर में अंकित कर लिया जायगा और फिर इस सांकेतिक-लिपि की कठिनाइयों के सम्बन्ध में उनका कोई भी पत्र आने पर उत्तर शीघ्र ही दिया जायगा। उत्तर के लिए उनको केवल डेढ़ आने का टिकट भेजना होगा। जो सज्जन घर पर आकर पूछना या समझना चाहेंगे उनको बराबर बिना किसी प्रकार का शुल्क लिए समझाया या बताया जायगा।

—आविष्कर्त्ता

पुस्तक मिलने का पता—
श्री विष्णु आर्ट प्रेस,
ऋषिकुटी, जीरो रोड,
इलाहाबाद।

मुद्रक—केशवप्रसाद खत्री,
दी इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स लिमिटेड, जीरो रोड,